शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

रांची, मंगलवार 05 अगस्त 2025 ● श्रावण शुक्ल पक्ष 11, संवत 2082 ● रांची एवं पटना से प्रकाशित ● वर्ष : 3, अंक : 119 ● मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

https://epaper.shubhamsandesh.net

अलविदा दिशोम गुरु

जन्म : 11 जनवरी 1944
निधन : 04 अगस्त 2025

तीन बार झारखंड के मुख्यमंत्री, दो बार केंद्रीय मंत्री, 8 बार लोकसभा सांसद और वर्तमान में राज्यसभा सांसद. 38 साल तक रहे झारखंड मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष.

जननायक का अवसान

- सोमवार सुबह 8 .56 बजे दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में ली अंतिम सांस
- झारखंड में तीन दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित, झंडा आधा झुकाया गया
- 2 दिन सरकारी कार्यालयों में छुट्टी
- विधानसभा का मानसून सत्र स्थगित
- शाम को रांची लाया गया शव .
- मोरहाबादी आवास पर रखा जाएगा पार्थिव शरीर
- मंगलवार को झामुमो कार्यालय और विधानसभा में अंतिम दर्शन के लिए रखा जाएगा, उसके बाद पैतृक गांव नेमरा में दिन के 3 बजे अंतिम संस्कार

आज मैं शून्य हो गया -हेमंत सोरेन

सब वीरान हो गया -कल्पना सोरेन

शुभम संदेश टीम। रांची

जननायक दिशोम गुरु शिबू सोरेन का सोमवार को निधन हो गया. उन्होंने दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में अंतिम सांस ली. वे पिछले कुछ महीनों से बीमार चल रहे थे. दिशोम गुरु के निधन से राज्य भर में शोक की लहर है.सबसे पहले मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने गुरुजी के निधन की जानकारी सोशल मीडिया पर दी है. उन्होंने लिखा-बाबा नहीं रहे,आज मैं शून्य हो गया. कल्पना सोरेन ने कहा-सब वीरान हो गया. गुरुजी का पार्थिव शरीर सोमवार शाम रांची लाया गया. अंतिम संस्कार उनके पैतृक गांव नेमरा में मंगलवार को किया जाएगा. उनका पार्थिव शरीर रांची लाने के बाद अंतिम दर्शन के लिए मोरहाबादी आवास में रखा गया है. मंगलवार सुबह पार्टी कार्यालय और वहां से पार्थिव शरीर विधानसभा ले जाया जाएगा. दोनों जगह गुरुजी को श्रद्धांजलि देने के बाद उनके पार्थिव शरीर को गुरुजी के पैतृक गांव रामगढ़ जिला के गोला प्रखंड के नेमरा गांव ले जाकर अंतिम संस्कार होगा. गुरुजी के निधन पर राज्य में तीन दिन (चार से छह अगस्त तक) के राजकीय शोक की घोषणा की गयी है. इस दौरान कोई भी सरकारी कार्यक्रम आयोजित नहीं किए जाएंगे. शोक की अवधि तक तीन दिनों तक राष्ट्रीय झंडा आधा झुका रहेगा. चार और पांच अगस्त को सरकारी कार्यालय बंद रहेंगे.

गुरुजी के निधन के बाद हेमंत सोरेन बोले-

आदिवासियों के लिए छांव थे शिबू सोरेन

रांची। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने अपने पिता और झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के संस्थापक संरक्षक शिबू सोरेन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है. उन्होंने कहा, आज का दिन बेहद दुखद है. देश के आदिवासी नायक, जिन्हें दिशोम गुरु के नाम से जाना जाता था, अब हमारे बीच नहीं रहे. हेमंत सोरेन ने बताया कि शिबू सोरेन का आज सुबह निधन हो गया. उन्होंने अंतिम सांस तक संघर्ष किया, मुख्यमंत्री ने भावुक स्वर में कहा. उन्होंने आगे कहा, इस महान पुरुष की क्षति पर शोक व्यक्त करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं. अपने पिता की विरासत को याद करते हुए हेमंत सोरेन ने कहा, निश्चित रूप से हम उन्हें हमेशा याद रखेंगे. झारखंड की राजनीति और आदिवासी समाज में शिबू सोरेन का योगदान ऐतिहासिक रहा है. दिशोम गुरु के रूप में वे दशकों तक आदिवासियों की आवाज बने रहे और राज्य के निर्माण आंदोलन में अहम भूमिका निभाई.

झारखंड विस में गूंजा-शिबू सोरेन अमर रहें सदन अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन के बाद सोमवार को झारखंड विधानसभा परिसर भी इस दुखद क्षण में भावुक हो उठा. जैसे ही गुरुजी के निधन की खबर आई विधानसभा 'शिबू सोरेन अमर रहें' के नारों से गूंज उठा. सभी दलों के विधायक, मंत्री भावुक मुद्रा में नजर आए. दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई. सदन के अंदर भी एक गहरा सन्नाटा पसरा रहा. झारखंड की राजनीति में एक युग का अंत मानते हुए, विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई. विधानसभा अध्यक्ष सहित सभी सदस्यों ने शिबू सोरेन के योगदान को याद करते हुए कहा कि वे सिर्फ एक राजनीतिक नेता नहीं थे, बल्कि उन्होंने झारखंडी अस्मिता की एक जीवंत मिसाल पेश की. उनका जाना एक राज्य व देश के लिए अपूरणीय क्षति है.

सर गंगाराम अस्पताल पहुंचे पीएम मोदी व राष्ट्रपति, हेमंत सोरेन को ढांढस बंधाया

गुरुजी के निधन की खबर से राज्य और देश में शोक की लहर दौड़ गई है . प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आऔर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू सर गंगाराम अस्पताल पहुंचे, जहां उन्होंने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मुलाकात की और संवेदना व्यक्त की . इससे पहले प्रधानमंत्री ने हेमंत सोरेन को फोन कर शोक जताया था और उन्हें ढांढस बंधाया था .

आदिवासी पहचान व झारखंड राज्य के गठन के लिए संघर्ष किया : राष्ट्रपति

शिबू सोरेन ने आदिवासी पहचान के लिए किया संघर्ष. उन्होंने आदिवासी पहचान और झारखंड राज्य के गठन के लिए संघर्ष किया . उन्होंने मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री और सांसद के रूप में भी योगदान दिया . आदिवासी समुदायों के कल्याण पर उनका जोर हमेशा याद रखा जाएगा .

दिशोम गुरु शिबू सोरेन जमीनी नेता व गरीबों के मसीहा थे : पीएम नरेंद्र मोदी

शिबू सोरेन जमीनी नेता थे . लोगों के प्रति अटूट समर्पण के साथ सार्वजनिक जीवन में आगे बढ़े . वह आदिवासी समुदायों, गरीबों और वंचितों को सशक्त बनाने के लिए भावुक थे . उनके निधन से गहरा दुख हुआ है . झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी से बात की और संवेदनाएं व्यक्त कीं .

गुरु दिशोम शिबू सोरेन के निधन से मैं अत्यंत दुःखी हूं : ममता बनर्जी

झामुमो के संस्थापक और मेरे आदिवासी भाइयों और बहनों के गुरु दिशोम शिबू सोरेन के निधन से दुखी हूं . मेरे भाई हेमंत सोरेन, , उनके पूरे परिवार और अनुयायियों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदना . मैं उन्हें जानती थी और उनका सच्चा सम्मान करती थी .

सामाजिक न्याय और वंचितों के उत्थान में गुरुजी की महत्ती भूमिका थी : लालू

संघर्षों के हमारे साथी दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन से मर्माहत हूं . सामाजिक न्याय और वंचित वर्गों के उत्थान में उनकी भूमिका रही है . समस्त राजद परिवार दुख की इस घड़ी में गुरु जी के परिजनों और समर्थकों के प्रति अपनी गहरी शोक संवेदनाएं व्यक्त करता है .

झारखंड निर्माण में गुरुजी की भूमिका को हमेशा याद रखा जाएगा : राहुल

आदिवासी समाज की मज़बूत आवाज़ शिबू सोरेन ने उनके हक़ और अधिकारों के लिए आजीवन संघर्ष किया . झारखंड के निर्माण में उनकी भूमिका को हमेशा याद रखा जाएगा . हेमंत सोरेन और पूरे सोरेन परिवार के साथ-साथ गुरुजी के सभी समर्थकों को गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं . मैं हमेशा उनके साथ हूं .

लोक संघर्ष के राजनेता को नमन ...

गुरुजी ने समष्टि के लिए अपने व्यष्टि को संघर्ष की वेदिका पर न्योछावर कर दिया

अयोध्यानाथ मिश्र

लाखों समर्थकों वैचारिकी से जुड़े एवं संघर्ष के साथियों को छोड़ दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने नियति के विधान को सम्मान दे दिया. शिबू सोरेन माटी के ऐसे सपूत, जिसने समष्टि के लिए अपने व्यष्टि को संघर्ष की वेदिका पर न्योछावर कर दिया. 1975 का दिल दहलाने वाला चासनाला कांड, जिसने तीन सौ से उपर गरीब कोयला खनिकों को एक साथ निगल लिया था, की त्रासदी में एक युवा पीठ पर तीर धनुष लिए व्यवस्था की असंवेदनशीलता को ललकार रहा था. सभी को वाजिब हक दिलाने की लड़ाई में उसने युवा शक्ति को झोंक दिया. संघर्ष से उद्भूत साधना जन्य सामर्थ्य ने अपार लोकप्रियता दिलाई.

इन पंक्तियों के लेखक ने एक विधायी कार्यवश धनवाद उपायुक्त केबी सक्सेना से मिलने के क्रम में पाया कि शिबू सोरेन की संघर्ष शक्ति ने प्रशासन को बाध्य कर दिया है, संवेदनशील कदम उठाने के लिए. न केवल चासनाला दुर्घटना अपितु संपूर्ण अनुसूचित जनजातीय क्षेत्र अर्थात बिहार के संतालपरगना, छोटानागपुर, ओडिशा, वर्तमान छत्तीसगढ़ के अतिरिक्त पूर्वोत्तर एवं महाराष्ट्र- गुजरात के आदिवासियों, आदिम जनजातियों के बीच अपूर्व स्वीकृति

मिली गुरुजी को. उनकी लोकप्रियता अर्थात समाज परिवर्तन की चेतना एक प्रबल वैचारिकी का विषय बना.

बोकारो के एक शिक्षक ने कहा था," शिबू सोरेन की सहज स्वाभाविक संघर्षशीलता में बिरसा मुंडा, सिदो-कान्हू और अमर्त्य आदिवासी वीरों की आभा दिखाई देती है."

लोकतंत्र में सामाजिक संघर्षशीलता कहीं न कहीं लोक जीवन में बड़े बदलाव, उत्कर्ष और आमलोगों के त्रासद जीवन में व्यापक परिवर्तन के लिए राजनीति का मार्ग अपना लेती है. आजादी की लड़ाई के नायकों को राजनीतिक सत्ता में आना पड़ा था. शिबू सोरेन को लोकसत्ता ने राजसत्ता के विविध आयामों पर स्थापित कर दिया. विधायक, सांसद, केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री प्रायः सभी पद प्रकारांतर से मिले, सेवा का अवसर दिए. आज वे साकेतवासी हो गये, पर उनकी सेवा और संघर्ष की वैचारिकी गांव, गरीब, भूख, शोषण के विरुद्ध मशाल जलाती रहेगी.

(-लेखक सामाजिक -आर्थिक एवं संसदीय अध्ययन केंद्र के सचिव हैं)

पेज-2, 3,7, 9 और 12 भी देखें

जननायक का अवसान

दिशोम गुरु शिबू सोरेन : जंगल से जनमत तक की यात्रा

सुधीर पाल

1855 में जब सिदो-कान्हू, चांद-भैरव, और फुलो-झानो ने 'दामिन-ए-कोह' की धरती पर अंग्रेज़ी राज, महाजनों और जमींदारों के खिलाफ बगावत का बिगुल फूंका, तो वह सिर्फ हथियारबंद विद्रोह नहीं था, वह एक नई शासन व्यवस्था की मांग थी—जिसमें आदिवासी समाज अपने तरीके से जी सके, अपने नियम बना सके और अपनी ज़मीन, जंगल और संस्कृति की रक्षा कर सके. इसी विचार की एक और कड़ी शिबू सोरेन की चेतना में दिखाई देती है. शिबू सोरेन का प्रारंभिक संघर्ष भी बिल्कुल वैसा ही था जैसा संथाल विद्रोह का — महाजनों के खिलाफ, ज़मींदारों के शोषण के खिलाफ, और पुलिसिया अत्याचारों के विरुद्ध. उन्होंने 'धान काटो आंदोलन', जंगल में समाज सुधार सभाएं, शराबबंदी अभियान, बाल विवाह विरोधी आंदोलन जैसे सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम चलाए. शुरुआत में उनका आंदोलन उग्र था — हिंसा भी हुई, पुलिस से टकराव हुआ. लेकिन फिर केबी सक्सेना जैसे अधिकारियों के हस्तक्षेप और शिबू सोरेन की वैचारिक परिपक्वता के कारण यह आंदोलन लोकतांत्रिक दिशा में मुड़ा. जहां संथाल विद्रोह में राजा की जगह आदिवासी ग्राम प्रमुख की कल्पना थी, वहीं शिबू सोरेन के आंदोलन में भी गांवों की संप्रभुता की मांग थी. जहां संथाल विद्रोह में हूल' था, वहां शिबू सोरेन के आंदोलन में हुंकार थी—लेकिन उद्देश्य एक था-हम अपनी ज़मीन, जंगल और आत्मा पर किसी बाहरी सत्ता को स्वीकार नहीं करेंगे. शिबू सोरेन सिर्फ एक नेता नहीं हैं, वे उस क्रांति का नाम हैं, जो ज़मीन की गंध से उठी थी और संसद तक पहुंची. जब भारत की राजनीति में हाशिए पर खड़े समुदायों की बात होती है, तो झारखंड के आदिवासियों की पीड़ा और प्रतिरोध की गाथा में एक नाम सबसे पहले उभरता है—शिबू सोरेन. वे सिर्फ एक राजनेता नहीं, बल्कि झारखंड के जनांदोलन के प्रतीक हैं. उनका जीवन, उनके विचार और उनके संघर्ष आदिवासी अस्मिता, जमीन, जंगल और जल की रक्षा के लिए खड़े हुए उस विराट आंदोलन का हिस्सा है, जिसने एक राज्य को जन्म दिया और हाशिए पर खड़े लोगों को आवाज़ दी.

एक विद्रोही की जन्मकथा

शिबू सोरेन का जन्म 11 जनवरी 1944 को बिहार (अब झारखंड) के हजारीबाग (अभी रामगढ़) जिले के नेमरा गांव में हुआ था. उनके पिता सोबन सोरेन को महाजनों ने पीट-पीट कर मार डाला, क्योंकि उन्होंने बगैर ब्याज के ऋण लौटाने का साहस किया था. यह घटना शिबू के भीतर गुस्से की ऐसी आग भर गई, जो आगे चलकर जन आंदोलन की चिंगारी बन गई. यहीं से उनकी चेतना का रूपांतरण हुआ—एक बालक जो खेती करता था, जो जंगलों में महुआ बीनता था, धीरे-धीरे एक सामाजिक कार्यकर्ता और फिर विद्रोही बन गया. उस समय संथाल परगना और आसपास के इलाकों में महाजन और जमींदार आदिवासियों का शोषण कर रहे थे. जमीनों पर कब्जा हो रहा था, और आदिवासी अपने ही जंगल में परदेसी बनते जा रहे थे.

एक समय नक्सली, फिर जन नेता

शिबू सोरेन का शुरुआती जीवन एक तरह से विद्रोही राजनीति की गोद में पला. उन्होंने जमींदारी, महाजनी और बाहरी तत्वों के खिलाफ आवाज़ बुलंद की. उन्होंने आदिवासी किसानों को इकट्ठा कर धनकुबेरों की जमीनों पर हल चलाने की मुहिम शुरू की. यह आंदोलन कई बार हिंसक भी हुआ. सरकारी दस्तावेज़ों में उनका नाम "खतरनाक तत्वों" की सूची में आ गया. पुलिस उन्हें पकड़ नहीं पा रही थी, लेकिन जनता उन्हें "गुरुजी" के नाम से जानने लगी थी.

कई दस्तावेज बताते हैं कि वे नक्सलपंथी विचारधारा की ओर आकर्षित थे. लेकिन तभी उनकी मुलाकात हुई—केबी सक्सेना जैसे ईमानदार और संवेदनशील नौकरशाह से, जो उस वक्त बिहार सरकार में पदस्थ थे और बाद में भारत सरकार में सचिव बने. सक्सेना ने शिबू से कहा—तुम्हारी लड़ाई सही है, लेकिन रास्ता गलत है. अगर तुम्हें वाकई अपने लोगों को न्याय दिलाना है, तो बंदूक नहीं, संसद का रास्ता अपनाओ.

यह सलाह शिबू के जीवन का मोड़ बनी. उन्होंने आत्मनिरीक्षण किया और फैसला किया कि वे बंदूक की जगह वोट की ताकत से लड़ाई लड़ेंगे.

हूल बनाम हुंकार : दो युग, एक चेतना : जब भारत के आदिवासी आंदोलनों का इतिहास लिखा जाएगा, तो उसमें दो प्रमुख मोड़ हमेशा उभर कर सामने आएंगे, पहला, 1855 का संथाल विद्रोह और दूसरा, 1970–2000 के झारखंड आंदोलन का उत्कर्ष, जिसका नेतृत्व शिबू सोरेन ने किया. इन दोनों संघर्षों के समय, परिप्रेक्ष्य और रणनीतियां भिन्न हो सकती हैं लेकिन मूल चेतना, उद्देश्य और अस्मिता की रक्षा की भावना एक ही थी. संथाल हूल तत्कालीन ब्रिटिश राज, महाजनी शोषण और ज़मींदारी व्यवस्था के खिलाफ आदिवासी समाज की पहली संगठित प्रतिक्रिया थी. संथालों को उनकी ज़मीन से बेदखल किया जा रहा था, उन पर टैक्स थोपा जा रहा था, और महाजन उन्हें सूदखोरी के जाल में फंसा रहे थे. यह केवल अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह नहीं था, बल्कि एक समांतर शासन व्यवस्था की स्थापना का प्रयास भी था. सिदो-कान्हू ने घोषणा की थी कि अब वे ब्रिटिश राज से स्वतंत्र हैं, और संथाल क्षेत्र अब उनके अपने पारंपरिक प्रमुखों के नियंत्रण में रहेगा. उन्होंने ग्रामसभाओं की बैठकें और सामूहिक निर्णय प्रणाली को सक्रिय किया यानी एक वैकल्पिक, लोक-आधारित शासन मॉडल. हूल का प्रमुख लक्ष्य था जमीन की रक्षा. महाजनी और जमींदारी शोषण का प्रतिरोध और सांस्कृतिक और सामाजिक ढांचे की पुनः स्थापना. संथाल विद्रोह ने एक परंपरागत गणराज्य की कल्पना की थी. शिबू सोरेन ने ग्राम सभा की सर्वोच्चता, पेसा अधिनियम, और जनजातीय स्वशासन की धारणा को संवैधानिक पहचान दिलाने का प्रयास किया.

1970 के दशक में शिबू सोरेन के नेतृत्व में झारखंड आंदोलन ने रफ्तार पकड़ी. इस आंदोलन का उद्देश्य था—अलग झारखंड राज्य की स्थापना, ताकि आदिवासी बहुल इलाकों को उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पहचान मिल सके. 1972 में एके राय और बिनोद बिहार महतो के साथ मिलकर उन्होंने झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) की स्थापना की. यह पार्टी आदिवासियों की आवाज़ बनी. शिबू सोरेन ने जेएमएम के बैनर तले भूमि सुधार, वन अधिकार, और आदिवासी स्वशासन की मांग को लेकर आंदोलन चलाया. उनका आंदोलन सिर्फ भाषण नहीं था, वह आम जनता की चेतना का आंदोलन था. ग्रामीण क्षेत्रों में वह घर-घर जाकर लोगों को जगाते, बैठकें करते, और गीतों के ज़रिए लोगों को एकजुट करते. आदिवासी डोंग जैसे परंपरागत वाद्य यंत्रों की ध्वनि और शिबू के नारों की गूंज मिलती तो जंगल भी गवाह बन जाते.

ज़मीन और खनिज पर हक हूल और हुंकार दोनों के संघर्ष का केंद्र विंदु रहा. संथालों ने ज़मीन के लिए जान दी. संथाल हूल ने अस्मिता को जमीन से जोड़ा था. शिबू सोरेन ने संविधान के माध्यम से यही बात दोहराई—जंगल, जल, जमीन पर पहला हक़ आदिवासी का है. 1855 में संथालों की जमीन हड़पी जा रही थी. 1970 के बाद झारखंड में खनिज लूट के नाम पर जमीन अधिग्रहण, वन भूमि पर कब्जा, और विस्थापन की प्रक्रिया तेज़ हो गई. शिबू सोरेन ने कहा—झारखंड का खनिज झारखंडी का होना चाहिए. भूमि अधिग्रहण, खनिज लीज और विस्थापन के मुद्दे दोनों कालखंडों में प्रासंगिक रहे. शिबू सोरेन के आंदोलन ने भी आदिवासी भाषा, लिपि, रीति-नीति को सरकारी मान्यता दिलाने का प्रयास किया. शिबू सोरेन का आंदोलन इसके खिलाफ जनाधिकार का प्रतीक बना.

विवाद और संकट : शिबू सोरेन का राजनीतिक जीवन विवादों से अछूता नहीं रहा. 1994 में शशि नाथ झा हत्याकांड, 2004 में कोयला घोटाले और 2005 में राज्यसभा चुनाव में कैश फॉर वोट जैसे विवादों में उनका नाम आया. कुछ मामलों में वे दोषमुक्त हुए, तो कुछ में उन्हें इस्तीफा भी देना पड़ा. लेकिन इन संकटों ने उनकी लोकप्रियता को कभी पूरी तरह समाप्त नहीं किया. उनकी सादगी, धरातल से जुड़ाव और आदिवासी हितों के लिए संघर्ष करने की पहचान ने उन्हें बार-बार पुनः स्थापित किया.

जंगल की राजनीति से जनतंत्र की यात्रा : शिबू सोरेन का जीवन एक दार्शनिक पाठ की तरह है. यह बताता है कि राजनीति केवल कुर्सी का खेल नहीं, बल्कि संघर्षों से उपजा जनविश्वास है. उन्होंने जंगलों से निकलकर संसद का रास्ता तय किया, लेकिन जंगल की खुशबू कभी नहीं छोड़ी. उनकी कहानी हमें सिखाती है कि राजनीति तब तक जीवित है जब तक उसमें समाज की पीड़ा के प्रति संवेदना हो.

एक विचारधारा की लंबी यात्रा

संथाल विद्रोह और शिबू सोरेन का आंदोलन एक ही श्रृंखला की दो कड़ियां हैं. एक चेतना जो "हम अपने मालिक खुद हैं" के विश्वास से जन्मी थी. फर्क केवल समय, भाषा, राजनीति और रणनीति का है. 1855 में वह चेतना हूल थी, 1970 में हक़ बन गई, और आज वह संवैधानिक अधिकारों की मांग के रूप में खड़ी है. पर सवाल वही है-

-क्या झारखंड के आदिवासी अब भी मालिक हैं?

-क्या उनकी ग्राम सभाएं अब भी निर्णय लेने में स्वतंत्र हैं?

-क्या खनिज सम्पदा से उन्हें कोई लाभ मिल रहा है?

अगर इन सवालों के जवाब 'ना' हैं, तो हमें फिर से हूल की आत्मा और गुरुजी की रणनीति को याद करना होगा.

संघर्ष से सत्ता तक

शिबू सोरेन ने 1980 में पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ा और जीत हासिल की. उन्होंने दुमका से लोकसभा सांसद बनकर संसद में प्रवेश किया. यह एक ऐतिहासिक क्षण था—एक ऐसा व्यक्ति जो कभी सरकारी फाइलों में "अपराधी" लिखा जाता था, अब संसद में अपनी जनता की बात रखने वाला जननायक बन गया. इसके बाद 1989, 1991, 1996, 2002, 2004 और 2009 में भी वे सांसद बने. केंद्र सरकारों में उन्हें कोयला मंत्री और जनजातीय मामलों के मंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद मिले. उनके प्रयासों से कई जनजातीय क्षेत्रों में योजनाएं लागू हुईं, स्कूल खुले, सड़कें बनीं और वन अधिकार कानून की दिशा में भी माहौल बना. लेकिन उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी—झारखंड राज्य का निर्माण.

एक प्रतीक, एक प्रेरणा

झारखंडी समाज उन्हें "गुरुजी" कहता है. वे सिर्फ एक नेता नहीं रहे, बल्कि एक संस्कृति, एक भावना और एक चेतना बन गए हैं. वे जंगल के हैं, पर संसद को जंगल की आवाज़ देना जानते हैं. वे मिट्टी के हैं, पर मिट्टी को संविधान से जोड़ने की ताकत रखते हैं. उनका जीवन आदिवासी युवाओं को सिखाता है कि संघर्ष करें, पर रास्ता सोच-समझ कर चुनें. वह यह भी बताते हैं कि सत्ता में आकर भी मूल सवालों को न भूलें—जमीन, भाषा, संस्कृति, स्वशासन और आत्मसम्मान.

किसने क्या कहा

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और देश के वरिष्ठतम नेताओं में से एक, शिबू सोरेन जी, झारखंड के उन कद्दावर नेताओं में गिने जाते थे जिन्होंने जीवन भर समाज के कमजोर वर्गों, विशेषकर आदिवासी समुदाय के अधिकारों और सशक्तिकरण के लिए संघर्ष किया। वे हमेशा जमीन और जनता से जुड़े रहे. मेरा उनसे लंबा परिचय रहा. उनके निधन से मुझे गहरा दुख पहुंचा है। उनके परिवार और समर्थकों के प्रति मेरी संवेदनाएं. ओम शांति!' –

राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

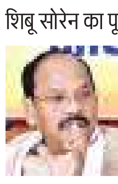

शिबू सोरेन का पूरा जीवन संघर्ष से भरा रहा. एक समाज सुधारक और आंदोलनकारी नेता के रूप में वे हमेशा याद किए जाएंगे. उनके मुख्यमंत्री कार्यकाल में मुझे मंत्री बनने का मौका मिला. वे गरीब और आदिवासी बच्चों के लिए रात्रि पाठशाला खोलने के पक्षधर थे. वे सिर्फ झारखंड नहीं, बल्कि पूरे देश में आदिवासी समाज की पहचान थे.

रघुवर दास, भाजपा नेता

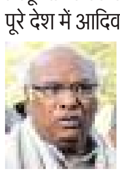

शिबू सोरेन को न केवल झारखंड, बल्कि पूरे देश में आदिवासी समाज के लिए संघर्ष किया. आज पूरा देश उन्हें याद कर रहा है. उनके निधन से झारखंड के आदिवासी समुदाय ही नहीं देश के एक बड़े नेता का अवसान हो गया है. हेमंत सोरेन और परिवार एवं झामुमो के सदस्यों को ईश्वर इस दुख को सहने की शक्ति दे.

मल्लिकार्जुन खरगे, कांग्रेस अध्यक्ष

गुरुजी के निधन से पूरा देश सदमे में है. यह बहुत बड़ी क्षति है, जिसकी भरपाई संभव नहीं. आज हम विधायक या सांसद हैं, तो वह गुरुजी की देन है. चुनाव के समय मैंने उनसे आशीर्वाद लिया था. मेरा पूरा परिवार इस दु:ख की घड़ी में उनके परिजनों के साथ खड़ा है.

इरफान अंसारी, स्वास्थ्य मंत्री झारखंड सरकार

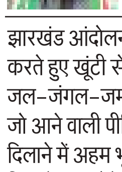

आज पूरा झारखंड इस खबर से स्तब्ध है. शिबू सोरेन झारखंड के लोगों के लिए हमेशा संघर्ष करते रहे. उन्होंने झारखंडवासियों के अधिकारों के लिए जीवन भर लड़ाई लड़ी. –

केशव महतो कमलेश, प्रदेश अध्यक्ष कांग्रेस

झारखंड आंदोलन के प्रणेता और दिशोम गुरु के रूप में लोकप्रिय शिबू सोरेन को याद करते हुए खूंटी से सांसद कालीचरण मुंडा ने कहा, "शिबू सोरेन ने सामाजिक न्याय, जल-जंगल-जमीन और आदिवासी संस्कृति की रक्षा के लिए आंदोलन खड़ा किया, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा रहेगा. उनके नेतृत्व ने झारखंड को राज्य का दर्जा दिलाने में अहम भूमिका निभाई. प्रदेश ही नहीं, देश ने एक महान जननायक को खो दिया है." उन्होंने आगे कहा, "मैं खूंटी की जनता की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें." वहीं, झामुमो रांची जिला अध्यक्ष मुस्ताक अहमद ने कहा, "यह अत्यंत दुखद समाचार है. झारखंड राज्य के निर्माता और हमारे अभिभावक अब हमारे बीच नहीं रहे. उन्हें देश का दूसरा गांधी भी कहा जाता था। यह अपूरणीय क्षति है, जिसकी भरपाई नहीं की जा सकती. ईश्वर से प्रार्थना है कि वे उनकी आत्मा को शांति दें और हम सभी को इस दुख को सहने की शक्ति दें."

राजकाज की व्यस्तता के बीच भी गुरुजी की सेवा को तत्पर रहे मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन

शुभम संदेश। रांची

पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन अब नहीं रहे. पिछले कई वर्षों से बीमार थे. पिछले दो महीने से वह काफी अस्वस्थ हो गए थे. 19 जून 2025 को रुटीन चेकअप के लिए उन्हें दिल्ली के गंगाराम अस्पताल में ले जाया गया था. तबीयत बिगड़ जाने के बाद उन्हें अस्पताल में रुटीन चेकअप के बाद भर्ती करना पड़ा. उसके बाद गुरुजी के स्वास्थ्य में लगातार उतार-चढ़ाव होता रहा. पक्षाघात भी हुआ. परिवार के लिए गुरुजी के स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार नहीं होने से चिंता बनी रही. लेकिन इस पूरी अवधि में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने पुत्र धर्म का ईमानदारी से ही नहीं आत्मीयता से पालन किया. 24 जून को गुरुजी को देखने दिल्ली पहुंचने के बाद से हेमंत सोरेन, लगातार दिल्ली में ही रहे. भले ही उनके लगातार दिल्ली में रहने को लेकर विपक्षी दलों व कुछ अपने ही दलों के नेता परोक्ष रूप से ताने भी मारते रहे. ये बातें हेमंत सोरेन के भी कान तक पहुंचती रही. लेकिन हेमंत सोरेन ने पिता गुरुजी का साथ नहीं छोड़ा. दिल्ली में डेरा डाले रहे. देश से लेकर विदेश के चिकित्सकों की सलाह लेकर गुरुजी को स्वस्थ कर लेने की अथक परिश्रम करते रहे. हेमंत सोरेन ही नहीं उनके साथ पत्नी कल्पना सोरेन भी पितृ सेवा में जुटी रही. यह अलग बात है कि ईश्वर ने उन्हें अपने पास बुला लिया. लेकिन पुत्र के नाते हेमंत सोरेन ने गुरुजी की सेवा में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ा. इतना ही नहीं पिता की सेवा के साथ साथ हेमंत सोरेन दिल्ली से झारखंड पर नजर रखे रहे। वहीं जरूरी मीटिंग और फाइल निबटाते रहे. दो-तीन ऐसे मौके आए जब हेमंत सोरेन को दिल्ली से रांची आना पड़ा. 16 वें वित्त आयोग की बैठक को लेकर उन्हें रांची आना पड़ा. इसके बाद उन्हें राष्ट्रपति के दौरे और झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र को लेकर 30 जुलाई को रांची आना पड़ा. मालूम हो कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू एम्स देवघर और आईआईटी धनबाद के दीक्षांत समारोह को लेकर 31 जुलाई को रांची पहुंची थी. फिर एक अगस्त को वह धनबाद से कोलकाता होते हुए दिल्ली चली गयीं. मुख्यमंत्री द्रौपदी मुर्मू के झारखंड दौरे के अलावा मानसून सत्र को लेकर रांची आए. मानसून सत्र के पहले दिन कार्यवाही में भाग लेने के समय ही उन्हें जब गुरुजी की तबीयत कुछ ज्यादा बिगड़ जाने की सूचना मिली तो आनन-फानन में भागे भागे दिल्ली रवाना हो गए. फिर वह एक अगस्त से लगातार दिल्ली में थे. गुरुजी को स्वस्थ करने के लिए कोई जुगत नहीं छोड़ी.

पूरी ईमानदारी से किया पुत्र धर्म का पालन

शिबू सोरेन के निधन पर झारखंड के राज्यपाल व नेता प्रतिपक्ष ने जताया शोक

रांची। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के निधन पर प्रदेश के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार और भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने शोक जताया है.

झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने अपने शोक संदेश में कहा कि राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी का निधन अत्यंत दुखद व पीड़ादायक है. वे जनजातीय अस्मिता और अधिकार के सशक्त स्वर थे. राजनीतिक और सामाजिक जगत में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा. शोकाकुल परिजनों के प्रति मेरी गहरी संवेदना.

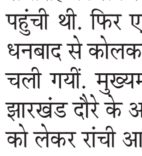

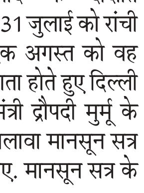

झारखंड में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने शिबू सोरेन के निधन को अपूरणीय क्षति बताया. उन्होंने कहा कि झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं झामुमो के संरक्षक शिबू सोरेन के निधन का समाचार अत्यंत दुःखद है. उनका जाना झारखंड के लिए एक अपूरणीय क्षति है. मैं ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति और शोक संतप्त परिवार को यह दुःख सहने की शक्ति देने की प्रार्थना करता हूं.

आज मैं शून्य हो गया हूं

इस एक पंक्ति से हेमंत सोरेन ने बयां कर दिया अपना सारा दर्द...

आज मैं शून्य हो गया. इस पंक्ति में वो क्रंदन है, जो सबके सामने खुलकर नहीं आ सकता, वो आंसू हैं, जो एक मुख्यमंत्री नहीं बल्कि एक बेटे की आंखों से बह रहे हैं. वो खामोशी है, जिसमें सैकड़ों यादें दब गई हैं. दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन के बाद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने यह पंक्ति लिखी है. इस एक लाइन में मुख्यमंत्री का पूरा दर्द छलक कर बाहर आ गया है. वह इस एक पंक्ति में वह बहुत सारी बातें कहना चाह रहे हैं. वह बता रहे हैं कि आज मेरे जीवन की सबसे गूंजती आवाज़ खामोश हो गई. जिसने चलना सिखाया, लड़ना सिखाया, सच का साथ देना सिखाया वो अब नहीं हैं. मैंने उन्हें ना सिर्फ पिता के रूप में देखा, बल्कि वो मेरे गुरु थे, मेरे मार्गदर्शक, मेरे सबसे बड़े आलोचक और सबसे सुरक्षित आश्रय थे. वो झारखंड की मिट्टी की आत्मा थे, और मेरे जीवन का आधार भी. जब मैंने राजनीति की राह पकड़ी, तो उनके पदचिह्न मेरे लिए दिशा बने. जब चुनौतियां आईं, तो उनकी आंखों की चमक से हौसला मिला. आज वही आंखें बंद हो गईं. भीड़ के बीच मैं अकेला हूं, शब्दों के बीच मैं मौन हूं, और जीवन की इस दौड़ में आज मैं शून्य हो गया हूं. यह शून्य सिर्फ मेरे भीतर नहीं है, यह उस हर झारखंडी के दिल में है, जिसने दिशोम गुरु की संघर्ष गाथा को सुना और जिया है. मेरे पिता, आप भले ही चले गए हों, लेकिन आपकी विरासत, आपकी लड़ाई और आपकी सीख, मेरे रक्त में बहती रहेगी. आपकी आत्मा को मेरा

नमन आज मैं शून्य हो गया... यह केवल एक पंक्ति नहीं, यह उस बेटे की टूटी हुई आवाज़ है. जिसने अपने जीवन का हर पाठ अपने पिता की छांव में सीखा. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की कलम से निकले ये शब्द सिर्फ़ भाव नहीं, बल्कि उस खालीपन की गवाही हैं, जो एक गूंजते नाम दिशोम गुरु शिबू सोरेन के न रहने से उपजा है. उन्होंने सिर्फ़ परिवार नहीं बनाया, एक पूरा आंदोलन खड़ा किया. जिस धरती को हाशिए पर छोड़ दिया गया था, उस धरती की आवाज़ बनकर उभरे थे शिबू सोरेन. झारखंड के वन, पर्वत, नदियों और आदिवासी आत्मा के भीतर वे बसते थे. उन्होंने जंगल के अधिकार के लिए संसद की दीवारें हिला दीं. वे न झुके, न थमे, न डरे और यही उनकी सबसे बड़ी शिक्षा थी, जिसे हेमंत सोरेन ने आत्मसात किया. आज मैं शून्य हो गया. भीड़ के बीच एक अजीब सी तन्हाई है जहां पिता की आवाज़ अब नहीं गूंजती, और वो हाथ, जो हर तूफान में कंधे पर था, अब हमेशा के लिए छूट गया. सीएम बता रहे कि मैं शून्य हो गया हूं. क्योंकि अब वो नहीं हैं, जो मेरी हर चुप्पी को सुन लेते थे. अब वो नहीं हैं, जो मेरे हर निर्णय के पीछे खड़े रहते थे. चाहे पूरी दुनिया मेरे खिलाफ क्यों न हो. लेकिन यह शून्य स्थायी नहीं होगा. आपकी तपस्या, आपकी चेतना, और आपके सिद्धांत मेरे रक्त में बहते रहेंगे. आपका नाम हर बार मेरे फैसलों में बोलेगा. आपकी आत्मा मेरे जीवन की अंतहीन ऊर्जा बनकर मेरे साथ चलेगी.

मियां मैजिक ओवल की छाती पर लहराया तिरंगा

https://epaper.shubhamsandesh.net

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

पेज 12

रांची, मंगलवार 05 अगस्त 2025 I श्रावण शुक्ल पक्ष 11, संवत 2082 I रांची एवं पटना से प्रकाशित I वर्ष : 3, अंक : 119 I मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

शिबू सोरेन के संघर्षों के साथी

सिर के नीचे ईंट को तकिया बना, बोरा बिछाकर सोए और लड़ते रहे : सहाय

- शिबू को याद कर छलक गईं इकलौते जीवित बचे साथी अवध किशोर सहाय की आंखें

अमित सिन्हा

धनबाद। संघर्ष के दिनों में शिबू सोरेन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले और लड़ने वाले झारखंड मुक्ति मोर्चा नेता अवध किशोर सहाय ने शिबू सोरेन के साथ बिताए क्षणों को साझा किया. जुबान से अल्फाजों की अदायगी के साथ आंखों का समंदर भी बह निकला. कभी चेहरे को अपने हाथ से साफ करते तो कभी यादों में खो जाते. कहते हैं कि उनसे पहली मुलाकात धनबाद में ही हुई थी. जब केबी सक्सेना धनबाद के उपायुक्त थे. डीसी से मिलते ही उन्होंने शिबू सोरेन से कहा था कि तुम्हें तो जेल में डालेंगे तब शिबू सोरेन ने जवाब दिया कि जेल जाने के लिए तैयार होकर आए हैं. सहाय ने बताया कि उस मुलाकात के बाद डीसी से उनका ऐसा संबंध बना कि शिबू सोरेन ने डीसी को एक बार टुंडी बुलाया. जहां महुआ को शुद्ध घी में रात भर तलकर सुबह खिलाया. खाने के बाद डीसी ने कहा कि ऐसा लजीज खाना उन्होंने इससे पहले नहीं खाया. आदिवासी होते हुए भी शिबू सोरेन शाकाहारी भोजन ही करते थे. शिबू सोरेन में किसी को भी पहचानने की गजब की क्षमता थी. वह अपने पराए का भेद भी तुरंत भांप लेते थे.

बिनोद बिहारी के घर में बोरा बिछा कर सोते थे शिबू

संघर्ष के दिनों में शिबू सोरेन विनोद बिहारी महतो के घर में जमीन पर बोरा बिछा कर सोते थे और तकिया की जगह ईंट रखते थे. वह ईंट ही उनके सिरहाने तकिया का काम करता था. विनोद बाबू के घर में रहकर की झारखंड मुक्ति मोर्चा पार्टी की स्थापना की सोच बनी. जिसके बाद एके राय, विनोद बिहारी महतो और शिबू सोरेन ने मिलकर पार्टी बनाई.

' शिबू के दोस्तों में अब सिर्फ मैं बचा '

शिबू सोरेन को जब पुलिस जोर शोर से खोज रही थी. तब एके सहाय उनकी दाढ़ी पर काला कपड़ा बांध कर अपने साथ ट्रेन से दिल्ली ले गए. दिल्ली में जब उनसे किसी ने शिबू सोरेन के बारे में पूछा तो उन्होंने नाईजीरिया का नागरिक बताया. दिल्ली के सुंदर नगर में दोनों ने एक होटल में कमरा लिया और उसी में ठहरे. सहाय ने बताया कि होटल में गद्देदार बिछावन पर शिबू सोरेन नहीं सोए और बेड से उतर कर जमीन पर ही सोए. इसके बाद एम्स में भर्ती हुए. जहां से सीबीआई ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया. जितने दिन शिबू सोरेन तिहाड़ जेल में रहे, उनके परिवार की देखरेख उन्होंने ही की. वह बराबर जेल में उनसे मिलते रहे. हीरापुर स्थित वसुंधरा होटल में शिबू सोरेन के साथ सारे मित्र बैठते थे. उसमें से सभी का निधन हो चुका है. शिबू के साथ बैठने वाले आलमगीर खान, अधिवक्ता पीके झा के साथ बलियापुर के ठाकुर और दत्ता शामिल थे. वह उम्र में शिबू सोरेन से दो वर्ष बड़े हैं. उनके साथ वाले सभी मित्रों में अब केवल वही जीवित हैं.

डुगडुगी बजते ही बिना कुछ सोचे-कहे तीर-धनुष उठाकर सभी पहुंचते थे पोखरिया

शिबू सोरेन के समानांतर सरकार के शिक्षा मंत्र शिक्षक राजेंद्र प्रसाद तिवारी की जुबानी

उमेश माहथा । टुंडी

झारखंड अलग राज्य की परिकल्पना को लेकर आंदोलन की शुरुआत करने वाले शिबू सोरेन उर्फ गुरुजी उर्फ दिशोम गुरु के निधन की खबर सुनकर टुंडी के लोग शोक में डूब गए. एक समय था जब उनकी एक आवाज पर टुंडी ही नहीं आसपास के दूसरे जिलों के लोग भी हजारों की संख्या में एकत्र हो जाते थे, नेतृत्व भी ऐसा की कोई अनुशासन भंग नहीं कर सकता था. 70 के दशक में जब नक्सली आंदोलन की यहां शुरुआत हो चुकी थी. उसी दौरान एक दूसरे धड़े झारखंड अलग राज्य आंदोलन का भी यहां बीजारोपण हो रहा था. आंदोलन की शुरुआत टुंडी प्रखंड के मनियाडीह पोखरिया से महाजनी प्रथा के विरोध के साथ हुआ, फिर उसमें नशाबंदी अभियान को जोड़ा गया. लोगों को जागरूक करने के लिए रात्रि पाठशाला भी चलाई गई. जिसमें लोगों को महाजनी प्रथा का विरोध करने एवं सूदखोरों के चंगुल से निकलने के लिए के लिए प्रेरित किया जाता था. इसके साथ थी उन्हें अक्षर ज्ञान भी दिया जाता था. शराबबंदी का असर ऐसा हुआ कि बड़े-बड़े नशेबाजों को शिबू सोरेन के नाम से ही दहशत हो जाती थी. आंदोलन को लेकर जब टुंडी हाई स्कूल के मैदान में जब सभा करने का ऐलान होता था तो मनियाडीह के पोखरिया स्थित आश्रम से जुलूस प्रारंभ होकर लोग टुंडी पहुंच जाते थे लेकिन जुलूस का सैलाब समाप्त नहीं होता था. उस समय डुगडुगी बजाना मतलब पोखरिया स्थित आश्रम पहुंचने का आदेश होता था जो जहां होते थे अपने-अपने साथ तीर, धनुष, टांगी, फरसा, डुगडुगी, मंदार, लेकर पोखरिया पहुंच जाते थे और जुलूस में बिना कुछ कहे शामिल हो जाते थे. इतना ही नहीं बहुत सारे लोग तो शिबू सोरेन को ठीक से पहचान भी नहीं पाते थे क्योंकि उनके कई हमशक्ल जुलूस के अंदर होते थे, कोई हमशक्ल भी आ जाता था तो उसे लोग शिबू सोरेन नहीं समझते थे. इसी कारण लोग उन्हें भगवान का रूप दिशोम गुरु कहने लगे. सभा के दौरान टुंडी हाई स्कूल का पूरा बड़ा सा मैदान का चप्पा चप्पा ठसाठस भर जाता था.

शेष पेज-07 पर

डीसी केबी सक्सेना और दरोगा किचिंगया ने बदल दी शिबू की दिशा

शिबू सोरेन द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन एवं जन सैलाब को देखकर प्रशासन भी पश्चिमी टुंडी क्षेत्र में जाने से डरता था. इस दौर में धनबाद के तत्कालीन डीसी केबी सक्सेना जो शिबू सोरेन के आंदोलन से काफी प्रभावित भी थे, उन्होंने शिबू सोरेन को मुख्य धारा से जोड़ने का काफी प्रयास किया. उनके इस कार्य में टुंडी के तत्कालीन दरोगा किचिंगिया का भी सहयोग रहा. जिन्होंने शिबू सोरेन के साथ उनकी मीटिंग पारसनाथ के पहाड़ी क्षेत्र में गुप्त स्थान पर करवाई. कई दौर की बैठकों के बाद शिबू सोरेन भूमिगत रहकर आंदोलन करने को छोड़कर मुख्य धारा में शामिल होकर आंदोलन करना स्वीकार कर लिया. लेकिन प्रशासन को यहां भी डर था कि उनके सरेंडर करते ही आदिवासी समाज में उबाल आ जाएगा, कानून व्यवस्था बिगड़ जाएगी और स्थिति विस्फोटक हो सकती है. ऐसे में पहले शिबू सोरेन की आवाज को रिकॉर्ड कर माइक से गांव-गांव में प्रचारित किया गया कि उनके सरेंडर के बाद लोग संयम बरते सरकार द्वारा क्षेत्र में उनकी भलाई के लिए कई तरह की विकास योजनाएं चलाएगी. जब प्रशासन को लगा कि अब स्थिति नियंत्रण में है फिर शिबू सोरेन को सरेंडर करवाया गया.

दौड़ी शोक की लहर, संवेदनाओं का तांता

झामुमो, कांग्रेस, भाजपा सभी राजनीतिक दलों ने जताई संवेदना

दिशोम गुरु के साथ एक युग का अंत हो गया : राज सिन्हा

शुभम संदेश। धनबाद

धनबाद के विधायक राज सिन्हा ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झामुमो के संस्थापक संरक्षक दिशोम गुरु आदरणीय शिबू सोरेन के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है. श्री सिन्हा ने कहा कि यह एक युग का अंत है. दिशोम गुरु आदरणीय शिबू सोरेन जी के निधन से उनके चाहने वाले और हम सभी शोकाकुल हैं. शिबू सोरेन ने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र, झारखंड और विशेष रूप से आदिवासी समाज की सेवा में समर्पित कर दिया. उनकी संघर्षशीलता, नेतृत्व क्षमता और

जनसेवा की भावना हमें सदैव प्रेरित करती रहेगी. ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा उनके परिवार और समस्त झारखंडवासियों को इस दुखद घड़ी में धैर्य और संबल प्रदान करें.

विधायक श्री सिन्हा ने कहा कि शिबू सोरेन ने अपने संघर्षों से राजनीति में उच्च मुकाम हासिल किया. वे दो बार केंद्रीय कोयला मंत्री और तीन बार झारखंड के मुख्यमंत्री रहे. 38 वर्षों तक वे झामुमो के केंद्रीय अध्यक्ष रहे और बाद में संस्थापक संरक्षक बने. वर्ष 1995 में अलग झारखंड राज्य के पहले पड़ाव, झारखंड क्षेत्रीय समिति (जैक) के अध्यक्ष के रूप में शिबू सोरेन को ही चुना गया था. यही कारण है कि गुरु जी की छवि न केवल झारखंड, बल्कि पूरे देश में एक जननेता के रूप में स्थापित थी.

पूर्व सांसद पीएन सिंह ने गहरा दुख जताया

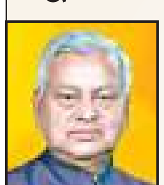

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पे धनबाद के पूर्व सांसद पशुपतिनाथ सिंह ने गहरा दुख प्रकट करते हुए कहा कि, समाचार अत्यंत दु:खद है. जनजातीय भाई - बहनों और वंचितों के अधिकारों के लिए वे सदैव संघर्षरत रहे. अपने सरल, सहज व्यक्तित्व के लिए शिबू सोरेन जी आमजनों में काफी लोकप्रिय थे. शोक संतप्त परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूँ. ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को श्रीचरणों में स्थान दें और शोकमय परिवार व उनके प्रशंसकों को इस कठिन घड़ी में सम्बल प्रदान करें.

भारतीय राजनीति की अपूर्णीय क्षति : सीपी चौधरी

गिरिडीह सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी ने अपने शोक संदेश में कहा कि झारखंड आंदोलन के अग्रणी नेता, पूर्व केंद्रीय मंत्री और झारखंड के मसीहा शिबू सोरेन जी के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है. उनका संपूर्ण जीवन सामाजिक न्याय, आदिवासी उत्थान और झारखंड की अस्मिता के लिए समर्पित रहा. उनके संघर्षों ने राष्ट्र और राज्य को जो दिशा प्रदान की, वह सदा प्रेरणा देती रहेगी. उनके निधन से एक युग का अंत हुआ है, जो झारखंड और भारतीय राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति है. मैं स्व. शिबू सोरेन जी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिजनों और अनुयायियों को यह दुख सहन करने की शक्ति दें.

आदिवासियों के उत्थान के लिए जीवन भर संघर्ष किया : हरेंद्र

शिबू सोरेन के निधन पर झामुमो नेता हरेंद्र चौहान ने गहरा दुख व्यक्त किया है. उन्होंने कहा कि झारखंड के दिग्गज नेता, झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक और पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन का 4 अगस्त 2025 को 81 वर्ष की आयु में दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में निधन हो गया. दिशोम गुरु शिबू सोरेन लंबे समय से किडनी की बीमारी और स्ट्रोक से जूझ रहे थे. उनके निधन ने झारखंड और भारतीय राजनीति में एक अपूरणीय क्षति पैदा की है. शिबू सोरेन ने आदिवासी समाज के उत्थान और उनके अधिकारों के लिए आजीवन संघर्ष किया. उनके नेतृत्व में झामुमो ने झारखंड के अलग राज्य के गठन में निर्णायक भूमिका निभाई, जो 2000 में वास्तविकता बनी. उनकी सादगी, दृढ़ता और जनसेवा की भावना ने लाखों लोगों को प्रेरित किया. शिबू सोरेन की विरासत सामाजिक न्याय, जनजातीय गौरव और संघर्ष की कहानी के रूप में चिरस्थायी रहेगी. उनके परिवार, समर्थकों और अनुयायियों के प्रति गहरी संवेदनाएं. झारखंड हमेशा अपने इस महान सपूत को याद रखेगा.

पूरे देश के लिए अपूर्णीय क्षति : शारदा सिंह

जिला परिषद अध्यक्ष शारदा सिंह ने दुख व्यक्त करते हुए कहा कि शिबू सोरेन का निधन न केवल झारखंड, बल्कि पूरे देश के लिए अपूरणीय क्षति है. झारखंड आंदोलन में उनका योगदान और राज्य के विकास में उनकी भूमिका अविस्मरणीय है. उनके कथन, झारखंड में रहने वाला हर व्यक्ति झारखंडी है और प्रत्येक झारखंडी के दिल में बेहतर झारखंड का सपना होना चाहिए, ने लोगों में नई आशा और उम्मीद जगाई. शिबू सोरेन की विरासत सामाजिक न्याय, जनजातीय गौरव और संघर्ष की कहानी के रूप में चिरस्थायी रहेगी. ईश्वर उनकी आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सहित पूरे परिवार को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करें.

झारखंड के इतिहास का सबसे दुखद दिन : आकाश रवानी

झामुमो महानगर समिति, धनबाद जिला के प्रवक्ता आकाश रवानी ने कहा कि आज का दिन झारखण्ड के इतिहास में सबसे दुखद और मार्मिक दिन है.

आज हमने झारखण्ड के जनक, दिशोम गुरु शिबू सोरेन को खो दिया. न केवल झामुमो परिवार, बल्कि समूचा झारखण्ड और देश उन्हें नम आँखों से श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है. महाजनी प्रथा के खिलाफ उनकी लड़ाई और वंचित समुदायों में हौसले को बढ़ाने में उनका योगदान अतुलनीय रहा. धनकटनी आंदोलन ने असमानता के खिलाफ समानता का प्रहार किया और वंचित समाज के लिए सार्थक सिद्ध हुआ. उनके नेतृत्व में झारखण्ड अलग राज्य आंदोलन को तीव्र गति मिली, जिसके अथक प्रयासों से झारखण्ड की भोली-भाली जनता को आज एक खुशहाल राज्य प्राप्त हुआ.

झारखंड के लिए अपूरणीय क्षति : झामुमो झरिया नगर कमेटी

झरिया। झारखंड राज्य के लिए लगातार लड़ने वाले व झारखंडवासियों की आवाज झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन का निधन झारखंड के लिए एक अपूर्णीय क्षति है जिसकी भरपाई कभी नही हो सकती है . झारखंड ने आज अपने एक वीर सपूत को खो दिया है, जिसे इतिहास में हमेशा याद किये जायेंगे . वही झारखंड मुक्ति मोर्चा के झरिया नगर अध्यक्ष फरीद मल्लिक ने कहा कि झरिया नगर कमेटी पूर्व मुख्यमंत्री जी के निधन पर गहरी शोक व्यक्त करता है . हम सब उनके निधन से मर्माहत हैं और उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं की भगवान उनके परिवारजनों इस दुख की पीड़ा को सहन करने की शक्ति प्रदान करें.

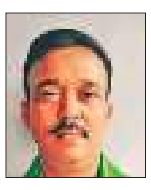

महुदा इंटर महाविद्यालय में शोक सभा

महुदा . महुदा इन्टर महाविद्यालय महुदा में झारखंड अलग राज्य के आंदोलन का जन्मदाता सह पूर्व मुख्यमंत्री राज्य सभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर कॉलेज परिसर में एक शोक सभा आयोजन किया गया. प्राचार्य प्रो सिकन्दर रवानी की अध्यक्षता में आयोजित कर सभा में दिशोम गुरू को श्रद्धांजलि दी गई . दो मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई . शोक सभा में प्राचार्य प्रो सिकन्दर रवानी , प्रो कौशिक बनर्जी , प्रो राजकुमार प्रसाद , प्रो उत्तम कुमार , प्रो खालदा मजहर , प्रो भरत महतो , प्रो परिमल सिंह , प्रो सुषमा हेम्ब्रम , प्रो आदित्य कुमार , प्रो नितिश कुमार , प्रो राज कुमार महतो , प्रो सुरेश कुमार रजक , हासीबुद्दीन अंसारी , रोहित कुमार चटर्जी , दिलीप रवानी , निखत प्रवीण , प्रफुल्ल कुम्हकार , कार्तिक चटर्जी , वकास अंसारी , सन्तोष ठाकुर , गौतम महतो आदि मुख्य रूप से मौजूद थे.

जन-जन के नेता थे दिशोम गुरु : राजकुमार

झरिया । झारखंड राज्य के प्रोधा अलग राज्य के लिए लगातार लड़ने वाले जन-जन के नेता झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन जी का निधन झारखंड के लिए एक अपूर्णीय क्षति है . झारखंड ने आज अपने एक वीर सपूत को खो दिया है . हम सब उनके निधन से मर्माहत हैं और उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार को इस दुख की घड़ी में ईश्वर सांत्वना प्रदान करें साथ ही दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन जी को भगवान अपने श्री चरणों में स्थान दें .

गुरुजी के जाने पर रो रही झारखण्ड की आत्मा : नीलम

झामुमो केंद्रीय सदस्य सह केंद्रीय मीडिया पैनलिस्ट डॉ नीलम मिश्रा ने शिबू सोरेन के निधन पर कहा कि आज झारखंड की आत्मा रो रही है . झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, राज्यसभा सांसद, आदिवासी समाज के महान प्रहरी और झारखण्डी माटी के सच्चे सपूत दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के निधन ने मन को झकझोर कर रख दिया है.

यह न केवल एक राजनेता का निधन है, बल्कि एक युग का अंत है.

हम सब उनकी विचारधारा, उनके संघर्षों और उनकी विरासत को याद रखते हुए प्रण करते हैं कि दिशोम गुरु का सपना, सशक्त और आत्मनिर्भर झारखण्ड को हम साकार करेंगे.

ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी, उनके समस्त परिवार व चाहने वालों को यह आघात सहने की शक्ति दें.

झामुमो जिला समिति ने जताया दुख

झारखण्ड आंदोलन के प्रणेता, झारखण्ड के महानायक और महान समाज सुधारक परम आदरणीय दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर झामुमो धनबाद जिला समिति गहरी संवेदना व्यक्त करती है और उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है.

झामुमो धनबाद जिला अध्यक्ष लक्खी सोरेन ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि झारखंड ने आज अपना पितामह खो दिया. दिशोम गुरु शिबू सोरेन न केवल एक राजनेता थे, बल्कि झारखंडी अस्मिता, संघर्ष और सम्मान के प्रतीक थे. उनका जाना झारखंड आंदोलन की आत्मा के वियोग जैसा है. हम सभी उनके आदर्शों को आत्मसात कर उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेते हैं. मैं झामुमो परिवार की ओर से इस अपूरणीय क्षति पर गहन शोक व्यक्त करता हूँ. ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें.

जिला सचिव मन्नू आलम ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि आज झारखंड की आत्मा रो रही है. दिशोम गुरु शिबू सोरेन का निधन न केवल एक राजनीतिक क्षति है, बल्कि यह एक युग का अंत है. उन्होंने संघर्षों की आग में तपकर झारखंड को जन्म दिया. वे हमारे मार्गदर्शक ही नहीं, बल्कि पिता तुल्य थे, जिन्होंने हमें स्वाभिमान, सत्य और सामाजिक न्याय की राह दिखाई. उनका संपूर्ण जीवन सादगी, ईमानदारी और संघर्ष की मिसाल रहा. सत्ता में रहते हुए भी वे हमेशा धरती से जुड़े रहे; गरीब की चौखट, किसान का खेत और मजदूर का आंगन ही उनका असली दरबार था. मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि गुरुजी की आत्मा को परम शांति प्रदान करें और हमें उनके दिखाए मार्ग पर चलने की शक्ति दें.

जिला प्रवक्ता समीर रवानी ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन का जाना केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि एक विचारधारा का वियोग है. वे हमारी मिट्टी की गंध थे, आदिवासी चेतना की आवाज थे और झारखंड के आत्मसम्मान के संरक्षक थे. उनका जीवन संघर्ष की रेखाओं से लिखा गया एक ग्रंथ है, जिसे पढ़कर हमने बोलना, लड़ना और अपने अधिकारों के लिए खड़ा होना सीखा.

निरसा बीडीओ के साथ चंदा मांग रहे युवकों की धक्का-मुक्की

माफी मांगने के बाद बीडीओ ने मधुबन पुलिस से वापस ले ली शिकायत

- बोकारो राजगंज फोरलेन में चंदा मांग रहे युवकों की कारस्तानी

शुभम संदेश। मधुबन

निरसा बीडीओ इंद्र लाल ओहोंदा के साथ सिनिडीह के एक युवक को अभद्र व्यवहार व धक्का मुक्की करना बहुत महंगा पड़ गया. समाज के लोगों के सामने अपने व्यवहार को लेकर मांगनी पड़ी माफी, तब जाकर मामला शांत हुआ. सोमवार को निरसा के प्रखंड विकाश पदाधिकारी इंद्र लाल ओहोंदा अपने किसी निजी काम से कहीं जा रहे थे. इसी क्रम में बोकारो-राजगंज फोर लाइन सड़क स्थित सिनिडीह हनुमान मंदिर के समीप कुछ लोगों के द्वारा श्री शिवमहापुराण कथा के अंतिम दिन के भंडारे के लिए सड़क पर चंदा मांगा जा रहा था. तभी वहां से गुजर रहे निरसा प्रखंड विकास पदाधिकारी इंद्रलाल होंदा की गाड़ी रुकवा कर उनसे भी चंदा मांगा गया. चंदा मांगने के क्रम में एक युवक ने उनके साथ अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए धक्का मुक्की भी कर दी. इसके बाद निरसा बीडीओ ने इसकी सूचना थाने को दी. सूचना मिलते ही मधुबन पुलिस की गाड़ी घटना स्थल पर पहुंची और भीड़ को हटाया. साथ ही निरसा प्रखंड विकास पदाधिकारी से आग्रह कर अपने साथ थाने ले आई. थाने में आसपास के गणमान्य लोगों ने निरसा बीडीओ से इस गलती के लिए लड़के को माफ करने की मिन्नत की. युवक के द्वारा भी सबके सामने माफी मांगी गई, दोबारा ऐसा कभी ना करने की बात कही. इसके बाद निरसा बीडीओ ने उस लड़के के भविष्य को ध्यान में रख कर इस अपराध के लिए माफ कर दिया और अपनी शिकायत वापस ले ली है. तब पुलिस ने बॉन्ड लिखवा कर उक्त लड़के को हिदायत दिया कि कि वह भविष्य में ऐसी गलती दोबारा नहीं करेगा. बाद में उसे मां के साथ वापस घर भेज दिया है.

मुराईडीह में नए पीओ पीएस सिन्हा ने संभाला पदभार

बरोरा (शुभम संदेश)। मुराईडीह कोलियरी में नए परियोजना पदाधिकारी (पीओ) के रूप में पी.एस. सिन्हा ने पदभार ग्रहण किया है. इससे पहले वे दामोदा कोलियरी में पीओ के पद पर कार्यरत थे. निवर्तमान परियोजना पदाधिकारी काजल सरकार ने उन्हें पुष्पगुच्छ देकर औपचारिक रूप से पदभार सौंपा. पदभार संभालने के बाद, पी.एस. सिन्हा ने कोयला उत्पादन को बढ़ाने पर विशेष ध्यान देने की बात कही. उन्होंने कहा कि उत्पादन क्षमता को और मज़बूत करने के लिए सभी के सहयोग से काम किया जाएगा. इस अवसर पर कोलियरी के कर्मचारी और अधिकारी मौजूद थे.

न्यूज अपडेट

मिठाई खरीद किया फर्जी आन लाइन भुगतान, पकड़ा गया पहुंचा थाने

पुटकी (शुभम संदेश)। पुटकी बाजार चेम्बर ऑफ कॉमर्स के महासचिव हीरालाल शर्मा के मिष्ठान्न दुकान अमृत भोग में मिठाई लेकर फर्जी एप से भुगतान करनेवाले युवक को घंटों पुटकी थाना के हिरासत में गुजारनी पड़ी. मिठाई दुकान में सोमवार को मुनीडीह का एक युवक 920 रुपया का मिठाई लिया, मिठाई लेने के बाद युवक ने भुगतान फोन पे पर सक्सेसफुल हो जाने की बात कही और जाने लगा. दुकान के स्टॉफ को शक हुआ तो उसे रुकने को कहा. जब बैंक अकाउंट देखा गया तो पैसे का कोई ट्रांजैक्शन ही नहीं हुआ था. इस संबंध में युवक से पूछताछ की गई तो वह उल्टा सीधा जवाब देने लगा. घटना की सूचना पुटकी पुलिस को दी गई. मौके पर पहुंची पुलिस उसे अपने साथ थाना ले गई.थाना में पूछताछ की. दुकान संचालक हीरालाल शर्मा घटना के वक्त कोर्ट में थे. बताया कि पूर्व में तीन बार युवक के द्वारा ठगी की गई है. तीसरी बार पकड़ा गया. दोपहर ढाई बजे पुनः प्रयास किया. स्टाफ को शक हुआ तो उसने उसे मिठाई नहीं देते हुए बैंक ट्रांजैक्शन की जानकारी मांगी. इसके बाद युवक कुछ भी कहने में असमर्थ था. थाना में युवक के परिजनों द्वारा माफी मांगने व भविष्य में ऐसी गलती नहीं करने पर दुकानदार ने माफ कर दिया.

माफी मांगने पर दुकानदार ने किया माफ

पेंशन योजना के लाभुकों का भौतिक सत्यापन

लोयाबाद (शुभम संदेश)। सोमवार को लोयाबाद 9 नंबर स्थित क्षेत्र में पुटकी अंचल प्रशासन द्वारा इंदिरा गांधी पेंशन योजना के तहत एक विशेष भौतिक सत्यापन शिविर का आयोजन किया गया.इस शिविर में करीब 300 पेंशनधारियों ने अपना पेंशन सत्यापन कराया.पुटकी अंचल की कंप्यूटर ऑपरेटर सुनीता महतो ने बताया कि शिविर में वृद्धा, विधवा एवं दिव्यांग पेंशनधारियों का आधार कार्ड और मोबाइल नंबर संग्रहित किया गया.इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि पेंशन का लाभ सही व जीवित व्यक्ति को ही मिले. उन्होंने कहा कि यह सर्वेक्षण लंबे अंतराल के बाद किया जा रहा है,ताकि पेंशन योजना में पारदर्शिता लाई जा सके और मृत अथवा अपात्र लोगों को मिलने वाला लाभ रोका जा सके.शिविर के दौरान स्थानीय निर्वतमान पार्षद महावीर पासी भी उपस्थित रहे और उन्होंने इस पहल की सराहना करते हुए लाभार्थियों को आवश्यक सहयोग प्रदान किया.

ब्रीफ खबरें

फोरमैन को दी गई विदाई

पुटकी। कच्छी बलिहारी 5/6 पीट हाइड्रो माईन्स में एक कार्यक्रम आयोजित कर सेवानिवृत फोरमैन रामविलास पासवान को सम्मानपूर्वक विदाई दी गयी.कर्मी को अंगवस्त्र व पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मान किया गया.सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया. व्यास संजय पासवान ने गीत पेश किए.विदाई समारोह की अध्यक्षता बीसीसीएल सिस्टा के अध्यक्ष प्रमोद कुमार एवं संचालन रामविलास राम ने की. सम्मान समारोह में सेवानिवृत कर्मी की पत्नी मीना देवी ,परिजन, सिस्टा राजकुमार कनौजिया, अर्जुन पासवान, मैनेजर अभिषेक कुमार राय, पीओ लखन लाल बरनवाल, आशुतोष तिवारी, पूर्व पार्षद देवाशीष पासवान, देवीलाल महतो, उमेश कुमार, शिवपूजन प्रसाद, मोहन राम, इंद्रदेव शर्मा, हीरा पासी, सुरेंद्र राम, बिंदु देवी आदि मौजूद थे.

प्रियंका ने संभाला चिरकुंडा नप कार्यपालक अधिकारी का पद

चिरकुंडा। चिरकुंडा नगर परिषद कार्यालय में सोमवार को कार्यपालक पदाधिकारी विजय कुमार हांसदा का विदाई समारोह आयोजित किया गया और नए कार्यपालक पदाधिकारी के रूप में प्रियंका कुमारी ने पदभार ग्रहण किया. पूर्व कार्यपालक पदाधिकारी विजय कुमार हांसदा ने फूलों का गुलदस्ता देकर प्रियंका कुमारी का स्वागत किया. पदभार ग्रहण करने के बाद प्रियंका कुमारी ने कहा कि हमारी पहली प्राथमिकता चिरकुंडा नगर परिषद क्षेत्र को स्वच्छ और सुंदर बनाए रखना होगा. इसके साथ ही, लंबित विकास योजनाओं को शीघ्र पूरा करने का प्रयास करूंगी. वहीं, निवर्तमान उपाध्यक्ष जय प्रकाश सिंह ने कहा कि आज झारखंड राज्य के लिए शोक का दिन है, क्योंकि पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन का निधन हो गया है. इस कारण कार्यक्रम को स्थगित कर केवल औपचारिक रूप से विदाई और सम्मान समारोह आयोजित किया गया. मुझे विश्वास है कि नई कार्यपालक पदाधिकारी प्रियंका कुमारी नगर परिषद क्षेत्र में विकास कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी. इस अवसर पर सिटी मैनेजर नजरूल इस्लाम, सिटी मिशन मैनेजर अरुण बड़ाईक सहित अन्य लोग उपस्थित थे.

एकड़ा हरिजन बस्ती में फिर बना गोफ, खौफ की लहर

शुभम संदेश। लोयाबाद

एकड़ा हरिजन बस्ती में रविवार की आधी रात को एक बार फिर जमीन धंसकने की घटना सामने आई है. स्थानीय निवासी गिरजा रविदास के आंगन में दो अलग-अलग स्थानों पर गहरे गोफ बन गए हैं. एक गोफ लगभग 4 फीट तो दूसरा करीब 5 फीट चौड़ा बताया जा रहा है. इनकी गहराई का सही अंदाजा अभी नहीं लगाया जा सका है हालांकि गोफ से फिलहाल गैस का कोई रिसाव नहीं हो रहा है, लेकिन परिवार के सदस्यों के बीच डर का माहौल व्याप्त है. खासकर छोटे बच्चों की सुरक्षा को लेकर परिवारजन बेहद चिंतित हैं.बच्चों को आंगन में जाने से रोकना मुश्किल हो रहा है,जिससे किसी अनहोनी की आशंका बनी हुई है.

पुनरावृत्ति की आशंका,पहले भी हुआ था हादसा : गौरतलब है कि इसी स्थान पर 16 सितंबर 2024 को भी गिरजा रविदास के आंगन और दरवाजे के सामने एक बड़ा गोफ बना था. तब पीड़ित परिवार ने खुद ही उसे भरकर किसी तरह स्थितियों को संभाला था. उस घटना के बाद से घर की दीवारों और फर्शों में लगातार दरारें बढ़ती जा रही हैं.परिवार के अनुसार हर कमरे में दरारें पड़ चुकी हैं,और वे दहशत में जीवन बिता रहे हैं.इस घर में छोटे बच्चों सहित करीब 25 से 26 लोग रहते हैं.

प्रबंधन को नहीं दी गई सूचना : घटना की सूचना अभी तक बीसीसीएल प्रबंधन को नहीं दी गई है. परिवार के सदस्य गुल्लू रविदास का कहना है कि सूचित करने से कोई लाभ नहीं होता. प्रबंधन की हमेशा एक ही बात होती है,रास्ता नहीं है,राहत वाहन कैसे जाएगा. उन्होंने बताया कि सितंबर 2024 की घटना के बाद बासदेवपुर कोलियरी प्रबंधन ने सिर्फ मापी और नंबरिंग की थी,लेकिन उसके बाद कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया.

ब्लास्टिंग के कारण बन रहा गोफ : स्थानीय लोगों ने गोपालीचक आउटसोर्सिंग परियोजना द्वारा की जा रही हैवी ब्लास्टिंग को गोफ बनने का मुख्य कारण बताया है. ग्रामीणों का आरोप है कि बार-बार की ब्लास्टिंग से बस्ती के लगभग हर घर में दरारें आ गई हैं. कई घरों के दरवाजे ठीक से बंद नहीं होते, टीन के छप्पर फटने लगे हैं और मकान लगातार नीचे धंसते जा रहे हैं. कोयला निकालकर जमीन खोखला कर दिया गया है. ग्रामीणों का कहना है कि प्रबंधन शायद किसी बड़े हादसे का इंतजार कर रहा है, तभी पुनर्वास और विस्थापन की कार्रवाई की जाएगी, उन्होंने जल्द से जल्द स्थायी समाधान की मांग की है.घटना के समय मौके पर गिरजा रविदास, गुल्लू रविदास, फेकनी देवी, सरस्वती देवी, सत्येन्द्र रविदास, निरंजन रविदास, भोला रविदास, संतोषी देवी सहित कई स्थानीय ग्रामीण उपस्थित थे।सभी ने एक स्वर में प्रशासन और बीसीसीएल प्रबंधन से अविलंब कार्रवाई की मांग की है.

पतंजलि ने आचार्य बालकृष्ण का जन्मोत्सव 'जड़ी बूटी दिवस' के रूप में मनाया

निरसा बाजार (शुभम संदेश)। भारत स्वाभिमान न्यास और पतंजलि योग समिति ने निरसा के पंजाबी मिलन प्रांगण में आचार्य बालकृष्ण का जन्मोत्सव 'जड़ी बूटी दिवस' के रूप में मनाया. इस अवसर पर पतंजलि परिवार ने 15 अगस्त तक पूरे धनबाद जिले में पौधरोपण और औषधीय पौधों के वितरण का संकल्प लिया.

आयुर्वेद ही भविष्य में स्वस्थ रखेगा : मनजीत सिंह : जिला संयोजक मनजीत सिंह ने कहा कि आचार्य बालकृष्ण ने आयुर्वेद को फिर से जीवित करने का काम किया है, जिससे आज भारतवासी अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख रहे हैं. उन्होंने कहा कि भविष्य में आयुर्वेद ही हमें स्वस्थ रख सकता है. उन्होंने कोरोना काल का उदाहरण देते हुए कहा कि जिन्होंने गिलोय, तुलसी, एलोवेरा और आँवला जैसी आयुर्वेदिक चीज़ों का सेवन किया, वे सुरक्षित रहे, जबकि अंग्रेजी दवाएं लेने वाले लोगों को अस्पतालों में जाना पड़ा.

औषधीय पौधों के बारे में दी गई जानकारी : जिला प्रभारी रविंद्र प्रधान ने औषधीय पौधों के बारे में विशेष जानकारी दी और आचार्य बालकृष्ण के प्रयासों की सराहना की. मुख्य योग शिक्षक मनोज सिंह ने गिलोय, एलोवेरा, हरसिंगार, पारिजात, तुलसी, नीम, पीपल और सहजन जैसे पौधों के महत्व के बारे में विस्तार से बताया, ताकि लोग आयुर्वेद से लाभ उठा सकें. इस कार्यक्रम को सफल बनाने में रंजीत कुमार साहू, तरुण कुमार, विजय कुमार, विशाल हर-हर आए आर्य, विपिन सिंह, अखिलेश पोद्दार सहित कई लोगों का योगदान रहा.

संडे हॉलीडे में अनियमितता के खिलाफ बीसीकेयू ने ठप किया उत्पादन

निरसा बाजार (शुभम संदेश)। ईसीएल मुगमा क्षेत्र के खुदिया कोलियरी में बिहार कोलियरी कामगार यूनियन (बीसीकेयू) के कार्यकर्ताओं ने संडे हॉलीडे की बिक्री में हो रही कथित अनियमितता के विरोध में सोमवार को करीब डेढ़ घंटे तक उत्पादन रोक दिया. यूनियन के प्रतिनिधियों ने प्रबंधन पर आरोप लगाते हुए कहा कि जो मजदूर पूरे सप्ताह काम करते हैं, उन्हें संडे हॉलीडे नहीं दिया जाता. इसके बजाय, पैसे देकर संडे हॉलीडे हासिल करने वाले लोगों को प्राथमिकता दी जा रही है. उन्होंने कहा कि नियमों के अनुसार, संडे हॉलीडे का प्रावधान सिर्फ़ उन मजदूरों के लिए है जो सप्ताह में 6 दिन अपने मूल पद पर काम करते हैं. यूनियन ने प्रबंधन की इस मनमानी और तानाशाही रवैये का कड़ा विरोध किया और इसे 'खुलेआम संडे हॉलीडे की बिक्री' बताया.

प्रबंधन के आश्वासन के बाद बहाल हुआ काम : यूनियन प्रतिनिधियों के विरोध के बाद, कोलियरी का उत्पादन ठप हो गया. इसके बाद, प्रबंधन की ओर से यूनियन को आश्वासन दिया गया कि इस मामले की विशेष रूप से जांच की जाएगी. प्रबंधन के आश्वासन के बाद मजदूर शांत हुए और उत्पादन दोबारा शुरू हुआ.

भौंरा में कोल ट्रांसपोर्टिंग ठप, जनता श्रमिक संघ ने उठाई छह सूत्री मांगें

शुभम संदेश। झरिया

जनता श्रमिक संघ असंगठित मोर्चा और झरिया विधायक रागिनी सिंह के समर्थकों ने सोमवार को भौंरा न्यू क्वार्टर के समीप अपनी छह सूत्री मांगों को लेकर भौंरा से विभिन्न संस्थानों के लिए होने वाले कोल ट्रांसपोर्टिंग को सुबह 10 बजे से ठप कर दिया. इस दौरान नारेबाजी भी की गई. समाचार लिखे जाने तक भौंरा से कोल ट्रांसपोर्टिंग बंद रहा. इस संबंध में असंगठित मोर्चा के सोनू सिंह ने कहा कि भौंरा में प्रदूषण की समस्या लगातार बढ़ रही है, लेकिन प्रबंधन बार-बार सूचना देने के बावजूद इसे नजरअंदाज कर रहा है. अब ऐसा नहीं चलेगा. भौंरा के चार नंबर, 12 नंबर और अब आठ नंबर क्षेत्र के लोगों को प्रबंधन विस्थापित कर रहा है, लेकिन उन्हें उचित पुनर्वास, मुआवजा और रोजगार उपलब्ध कराए बिना, जैसे-तैसे उनके हाल पर छोड़ दिया जा रहा है, जो गलत है. प्रबंधन को विस्थापितों के लिए समुचित पुनर्वास, मुआवजा और रोजगार की व्यवस्था करनी चाहिए, तभी उनके घर तोड़े जाएं. उन्होंने आगे कहा कि क्षेत्र में बेरोजगारी चरम पर है. प्रबंधन को ट्रकों में मैनुअल कार्य शुरू करना चाहिए ताकि बेरोजगार युवाओं को रोजगार मिल सके. साथ ही, आउटसोर्सिंग कार्यों में स्थानीय लोगों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा. क्षेत्र में कई महीनों से पेयजल आपूर्ति सुचारू रूप से नहीं हो रही है, इसे दुरुस्त किया जाना चाहिए. उन्होंने बताया कि वर्तमान में जो थोड़ी-बहुत पेयजल आपूर्ति हो रही है, वह दूषित है. भौंरा वाटर ट्रीटमेंट प्लांट से दामोदर नदी का प्रदूषित पानी बिना उपचार के लोगों के घरों में भेजा जा रहा है, जिसके कारण लोग बीमार हो रहे हैं. मौके पर सोनू सिंह, उमेश यादव, जय लाल शर्मा, पंकज यादव, रेणु देवी, अमर रवानी, बाघा सिंह, विकास सिंहा आदि उपस्थित थे.

जीएनएम दुर्गा पूजा कमिटी के अध्यक्ष बने शंकर जायसवाल

कतरास (शुभम संदेश)। श्री श्री सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति, जीएनएम हाई स्कूल मैदान, कतरास बाजार की वर्ष 2025 के लिए समिति का गठन किया गया. संरक्षक मोहन प्रसाद लाला की अध्यक्षता में आयोजित सभा में पुरानी समिति को भंग कर नई समिति के गठन की प्रक्रिया शुरू की गई.षशंकर जायसवाल को पुनः अध्यक्ष चुना गया, जबकि मुकेश भट्ट को चौथी बार निर्विरोध सचिव नियुक्त किया गया. बबलू चौरसिया को कोषाध्यक्ष के पद पर चुना गया. समिति के विस्तार की जिम्मेदारी कार्यकारी बैठक बुलाकर सचिव को सौंपी गई. सभा में संरक्षक मोहन प्रसाद लाला, सुरेंद्र सिंह, प्रताप नारायण पांडे, विनय सिन्हा, धीरेन सिंह, सरोज विश्वकर्मा, अशोक शर्मा, पंकज सिन्हा, मनोज राय, दिलीप तर्वे, कुलदीप सिंह, शैलेंद्र सिन्हा, मोनू सिंह, चंद्रकांत कुमार, गोपाल बोस, प्रदीप लाला, रामजी हजारी, अयोध्या सिंह, संदीप जायसवाल, प्रकाश रजक, राखोहरि पटवा, गणेश मोदक, बबलू शर्मा, ईश्वर लाल शर्मा, सहायक राहुल राज, शिवम दसोंधी, राजेंद्र ठाकुर, सुनील यादव, चितरंजन कुमार, अजय स्वर्णकार, पिंटू दे, चंदन नंदन, आकाश खंडेलवाल, शेखर प्रमाणिक, तापस दे, कौशल ठाकुर, करण रवानी, निखिल राय, अरुण राणा, विशाल केडिया, जीत कुमार, भोला मोदक, रोशन सिंह और अन्य उपस्थित थे.

आखिरी सोमवारी को शिवालयों में उमड़ी भक्तों की भीड़

शुभम संदेश। चासनाला

सावन माह की आखिरी सोमवारी के अवसर पर क्षेत्र के विभिन्न शिवालयों में प्रातः 4 बजे से ही बाबा भोलेनाथ पर जलाभिषेक करने के लिए मंदिरों में श्रद्धालुओं की काफी भारी भीड़ उमड़ पड़ी. महिला, पुरूष,बच्चे , बच्चियां बारी-बारी से अपने आराध्य देव शिव की पूजा अर्चना कर जलाभिषेक करने में लगे रहे. चासनाला केके गेट स्थित बाबा प्रेमनाथ शिव मंदिर,चासनाला महतो बस्ती के चंद्रमौलेश्वर महादेव मंदिर, माँ कल्याणेश्वरी मंदिर परिसर के कल्याणेश्वर नाथ शिव मंदिर, चासनाला साउथ कालोनी के श्रीश्री दामोदर नाथ शिव मंदिर, पाथरडीह बस स्टैंड स्थित बाबा कल्याणेश्वर नाथ मंदिर, पाथरडीह अजमेरा स्थित श्रीश्री महा मृत्युंजय महादेव मंदिर,लोको बाजार सर्वोदय मन्दिर, बोल बम शिव मंदिर,पाथरडीह मोहन बाजार,एनबीसीसी पंचदेव शिव मंदिर, पाथरडीह पुराना बस स्टैंड स्थित बाबा त्रिलोकी नाथ शिव मंदिर आदि मंदिरों में सोमवारी जलाभिषेक करने के लिए भक्त श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी थी. भक्तों ने सुख शांति व समृद्धि के लिए बाबा भोलेनाथ से मन्नते माँगी. चासनाला केके गेट बाबा प्रेमनाथ शिव मंदिर के पुजारी शम्भूनाथ तिवारी, पाथरडीह मोहन बाजार शिव मंदिर के पुजारी नीरज पांडेय, पाथरडीह थाना परिसर के श्री श्री अनीश्वर नाथ शिव मंदिर के पुजारी अखलेश पाठक आदि ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ विधिवत पूजा अर्चना कराई.देर शाम भजन कीर्तन के पश्चात भक्तों के बीच प्रसाद वितरण किया गया.

लोयाबाद में हर हर महादेव की गूंज

लोयाबाद। 'हर हर महादेव' और ३बोल बम३ के नारों से सोमवार को पूरा लोयाबाद भक्तिमय वातावरण में डूब गया. सावन के अंतिम सोमवार पर क्षेत्र के सभी शिवालयों में सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी .भोलेनाथ की पूजा-अर्चना और जलाभिषेक के लिए मंदिरों में दिनभर भक्तों की लंबी कतारें देखी गईं .श्रद्धालुओं ने पूरे उत्साह एवं श्रद्धा के साथ विधिवत पूजा कर भगवान शिव से आशीर्वाद मांगा .क्षेत्र के कई मंदिरों में शिवभक्तों द्वारा विशेष रुद्राभिषेक का आयोजन किया गया,जिसमें भक्तों ने परिवार की सुख-शांति और समृद्धि की कामना की. प्राचीन ठाकुरबाड़ी मंदिर में विशेष प्रसाद वितरण : लोयाबाद के सबसे प्राचीन मंदिर ठाकुरबाड़ी में चारों सावन सोमवार को विशेष आयोजन किए गए. मंदिर कमेटी द्वारा अंतिम सोमवार को भी विशेष प्रसाद तैयार कर श्रद्धालुओं के बीच वितरण किया गया. प्रसाद वितरण में स्थानीय समिति के सदस्य सक्रिय रूप से शामिल रहे और व्यवस्था को सुचारु रूप से संभाला.

सावन की विदाई पर भावुक हुए भक्त : सावन के अंतिम सोमवार को लेकर शिवभक्तों में विशेष उत्साह के साथ-साथ थोड़ी भावुकता भी देखी गई. भक्तों ने कहा कि सावन का पावन महीना भक्ति और आस्था से भरपूर होता है .

चिटाहीधाम के श्रीराम राज मंदिर में रुद्राभिषेक और महाभोग का आयोजन

बरोरा। सावन के चौथे सोमवार को चिटाहीधाम स्थित श्री श्रीराम राज मंदिर में आर्यादेव समर्पण सेवा फाउंडेशन ने रुद्राभिषेक, पूजन और महाभोग प्रसाद वितरण का आयोजन किया। फाउंडेशन के संस्थापक खुशवंत कुमार ने अपने परिवार के साथ भगवान भोलेनाथ का विधि-विधान से रुद्राभिषेक किया और सभी के लिए कृपा की कामना की। पूजा के बाद, सैकड़ों श्रद्धालुओं के बीच प्रेमपूर्वक महाभोग प्रसाद वितरित किया गया। इस आयोजन को सफल बनाने में फाउंडेशन के सदस्य रवि पांडेय, विजय, पन्ना लाल, रामायण सिंह, सूरज और अन्य लोगों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। आर्यादेव समर्पण सेवा फाउंडेशन सावन के प्रत्येक सोमवार को ऐसे धार्मिक और सेवाभाव से जुड़े कार्यक्रम आयोजित कर रहा है, जिसका उद्देश्य समाज में आध्यात्मिक ऊर्जा, सद्भावना और सेवा भाव को बढ़ावा देना है।

सावन माह की अंतिम सोमवारी जोगिडीह शिव मंदिर में भव्य आयोजन

बरोरा (शुभम संदेश)। सावन माह की अंतिम सोमवारी के पावन अवसर पर बहियरडीह पंचायत के जोगिडीह शिव मंदिर परिसर में उप मुखिया धनंजय चौहान और ऐ डी चौहान के नेतृत्व में एक भव्य आयोजन किया गया. इस दौरान मंदिर में भगवान शिव की विशेष पूजा-अर्चना की गई और महाभोग प्रसाद का वितरण हुआ, जिसमें ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और महत्वपूर्ण योगदान दिया. आयोजन की शोभा तब और बढ़ गई, जब प्रसिद्ध शिव नारायण संगीतकार ने अपने भक्ति भजनों से उपस्थित भक्तों को झूमने पर मजबूर कर दिया. उनके भजनों ने माहौल को पूरी तरह शिवमय बना दिया और 'हर हर महादेव' के जयकारों से मंदिर परिसर गूंज उठा. इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे, जिन्होंने एकजुट होकर इस धार्मिक आयोजन को सफल बनाया. उप मुखिया धनंजय चौहान ने कहा कि सावन का अंतिम सोमवार भगवान शिव की कृपा प्राप्त करने का विशेष अवसर है. हमारी कोशिश थी कि इस पावन दिन को पूरे उत्साह और भक्ति के साथ मनाया जाए. वहीं ऐ डी चौहान ने ग्रामीणों के सहयोग की सराहना करते हुए कहा कि सामूहिक प्रयासों से ही यह आयोजन इतना भव्य और सफल हो सका. यह आयोजन न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा, बल्कि ग्रामीणों के बीच एकता और सामुदायिक भावना को भी मजबूत करने वाला साबित हुआ. मंदिर परिसर में भक्ति, उत्साह और भाईचारे का अनूठा संगम देखने को मिला.

झारखंड आंदोलन के प्रणेता शिबू सोरेन का निधन

झारखंड के कद्दावर नेता, पूर्व केंद्रीय मंत्री और झारखंड आंदोलन के प्रणेता शिबू सोरेन का निधन हो गया. उनके निधन से राज्य की राजनीति, आदिवासी समाज और जनआंदोलनों को गहरा आघात पहुंचा है. लंबे समय तक जनहित में संघर्ष करने वाले शिबू सोरेन को 'दिशोम गुरु' के नाम से भी जाना जाता था. इनके निधन से झारखंड के सभी जिलों को शोक की लहर दौड़ गई. शिबू सोरेन के निधन की सूचना मिलते ही लोगों में मायूसी देखी गई और शोकसभा प्रस्तुत कर सभी ने अपना दुख प्रकट किये. शिबू सोरेन के निधन से केवल पार्टी के लोगों में ही नहीं बल्कि अधिकारियों के साथ-साथ राज्य के विभिन्न पार्टी के कार्यकर्ताओं ने भी शोकसभा प्रस्तुत कर उन्हें श्रद्धांजलि दी.

दिशोम गुरुजी शिबू सोरेन के निधन पर दुमका में शोक सभा

शुभम संदेश। दुमका

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री सह राज्यसभा सदस्य, दिशोम गुरुजी शिबू सोरेन के निधन पर आज संथाल परगना प्रमंडल, दुमका के आयुक्त कार्यालय के सभागार में एक शोक सभा आयोजित की गई. इस सभा की अध्यक्षता प्रमंडलीय आयुक्त लालचंद डाडेल ने की. शोक सभा की शुरुआत शिबू सोरेन के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करके और दो मिनट का मौन रखकर की गई. आयुक्त लालचंद डाडेल ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि शिबू सोरेन केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि एक आंदोलन के प्रतीक थे. उन्होंने शिबू सोरेन के जीवन को आदिवासी समाज और अन्य वंचित समुदायों को पहचान, अधिकार और स्वाभिमान दिलाने के लिए समर्पित बताया. आयुक्त के सचिव अमित कुमार ने कहा कि शिबू सोरेन के नेतृत्व में झारखंड की आत्मा को एक आवाज मिली. उनके जीवन को आदिवासी अस्मिता का प्रतीक बताते हुए उन्होंने कहा कि गुरुजी ने जनजातीय समाजों के सांस्कृतिक गौरव को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. क्षेत्रीय विकास पदाधिकारी विभूति मंडल ने कहा कि उनके निधन से न केवल झारखंड बल्कि पूरे भारत ने एक दूरदर्शी नेता और समाज सुधारक को खो दिया है. शिबू सोरेन का जन्म 11 जनवरी 1944 को रामगढ़ जिले के नेमरा गांव में हुआ था. उन्होंने तीन बार मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया और केंद्र सरकार में कोयला मंत्री भी रहे. शोक सभा में प्रशाखा पदाधिकारी राजेश कुमार, सहायक प्रशाखा पदाधिकारी सौरभ कुमार तिवारी सहित कई अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे.

शिबू सोरेन के निधन से कसमार में शोक की लहर

कसमार (बोकारो)। दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन से कसमार प्रखंड में शोक की लहर दौड़ गई है. झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ताओं के साथ-साथ अन्य राजनीतिक दलों और आम जनता ने भी उनके निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है. शिबू सोरेन का कसमार प्रखंड से गहरा रिश्ता रहा है और वे यहां के कई आंदोलनों से जुड़े रहे हैं, जिसके कारण वे यहाँ के लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय थे. झामुमो के कसमार प्रखंड अध्यक्ष दिलीप हेंब्रम ने कहा कि शिबू सोरेन सिर्फ एक नेता नहीं, बल्कि एक युग पुरुष थे. उनका निधन एक युग का अंत है और झारखंड की राजनीति में उनकी जगह कोई नहीं ले सकता. प्रखंड प्रमुख नियोती कुमारी ने कहा कि गुरुजी सिर्फ कोई नाम नहीं, झारखंड की रगों में बहता हुआ एक विश्वास थे.

झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के कार्यकर्ता शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि देते हुए

शिबू सोरेन के निधन पर ईएसएल स्टील ने जताया शोक

बोकारो। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और 'दिशोम गुरु' शिबू सोरेन के निधन पर ईएसएल स्टील लिमिटेड ने गहरा शोक व्यक्त किया है. ईएसएल स्टील लिमिटेड के उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी रविश शर्मा ने एक शोक संदेश जारी कर कहा कि हम शिबू सोरेन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं. वे एक प्रखर जननेता और झारखंड राज्य के गठन के पीछे एक प्रेरणादायी शक्ति थे. रविश शर्मा ने कहा कि सामाजिक न्याय, आदिवासी उत्थान और वंचित समुदायों के सशक्तिकरण के लिए शिबू सोरेन का जीवन भर का संघर्ष राज्य के इतिहास में एक अमिट छाप छोड़ गया है. उनके दूरदर्शी नेतृत्व ने कई पीढ़ियों को आवाज दी और झारखंड की पहचान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. कंपनी ने उनके परिवार, अनुयायियों और उन सभी लोगों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की है, जो उनके जीवन से प्रेरणा लेते रहे हैं.

पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर शोक

दुमका। सोमवार को झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री सह राज्यसभा सदस्य शिबू सोरेन के निधन की खबर सामने आने के बाद पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने ट्विटर पर इसकी जानकारी दी, जिसके बाद झारखंड सरकार ने तीन दिनों का राजकीय शोक और दो दिनों का अवकाश घोषित कर दिया. इसके चलते सभी सरकारी कार्यालय बंद रहे. शिबू सोरेन के निधन पर शोक व्यक्त करने के लिए शिकारीपाड़ा प्रखंड के सरसाजोल उच्च विद्यालय में एक शोक सभा का आयोजन किया गया. प्रधानाध्यापक असीम कुमार मंडल के नेतृत्व में हुई इस सभा में विद्यालय के सभी शिक्षक और छात्र-छात्राएं शामिल हुए.

झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा ने शिबू सोरेन को दी श्रद्धांजलि

डुमरी (गिरिडीह)। झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा, डुमरी की एक बैठक सोमवार को जामतारा पंचायत सचिवालय में हुई. मोर्चा के अध्यक्ष लालमणी साव की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के निधन पर दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई. इस बैठक में मोर्चा की आगे की रणनीति पर भी चर्चा की गई. आंदोलनकारियों ने झारखंड विधानसभा सत्र के दौरान अपनी मांगों को उठाने की तैयारी पर विचार-विमर्श किया. मोर्चा की प्रमुख मांगों में जेल की बाध्यता को खत्म करते हुए उत्तराखंड की तर्ज पर सभी चिह्नित आंदोलनकारियों को पेंशन देना शामिल है. इस बैठक में मोर्चा के उपाध्यक्ष जितेंद्र प्रसाद, कोषाध्यक्ष जागेश्वर यादव, अशोक जैन, निर्मल जायसवाल, दीपक जैन, नागेश्वर मंडल, डालोराम महतो, डुमरचंद महतो, बिजय महतो, राजकमल महतो, नागेश्वर महतो, अयोध्या प्रसाद, अमृत शर्मा, मुंशी महतो, वजीर मंडल, देवेन्द्र विश्वकर्मा, भूषण प्रसाद, प्रेमचंद महतो, जगदीश महतो, महेन्द्र महतो, चरन महतो, प्रयाग महतो, विश्वानाथ महतो, होरिल महतो, सहदेव महतो, मजहर इमाम, अवल ठाकुर, श्याम प्रसाद चौधरी, मुकेश कुमार, अजय कुमार सिंह, डेगलाल साव, रामेश्वर महतो, प्रेमचंद महतो, करमचंद महतो गांधी, प्रयाग यादव, कांशी राम, छोटन विश्वकर्मा, सतीश साहु, जितेंद्र सिन्हा सहित कई लोग उपस्थित थे.

शिबू सोरेन के निधन पर विधायक ने जताया शोक

बोकारो। विधायक श्वेता सिंह ने झारखंड के महान नेता, पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड आंदोलन के अग्रदूत शिबू सोरेन के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है. उन्होंने कहा कि उनका जाना एक युग का अंत है. विधायक ने कहा कि शिबू सोरेन का पूरा जीवन संघर्ष और जनसेवा को समर्पित था. उन्होंने न केवल झारखंड राज्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि हमेशा समाज के सबसे कमज़ोर वर्ग के लोगों के अधिकारों के लिए भी लड़ाई लड़ी. श्वेता सिंह ने दुख व्यक्त करते हुए कहा कि पहले बाऊजी (वीर समरेश सिंह), फिर राजेंद्र सिंह, कुछ दिन पहले ददई दुबे और अब गुरुजी का हम सबको छोड़कर चले जाना अत्यंत दुखदाई है. उन्होंने कहा कि झारखंड की राजनीति ने अपने अभिभावकों को एक-एक कर खो दिया है और यह हम सभी के लिए एक कठिन समय है. विधायक ने कहा कि अब यह नई पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वे इन मार्गदर्शकों की विचारधारा और अधूरे सपनों को पूरा करें. उन्होंने विश्वास जताया कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में वे इस चुनौतीपूर्ण समय से बाहर निकलेंगे और अपने पूज्य अभिभावकों के सपनों का 'नया झारखंड' गढ़ने में सफल होंगे. उन्होंने कहा कि यही शिबू सोरेन के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी.

शिबू सोरेन के निधन से मर्माहत हैं कुड़को गांव के ग्रामीण

गिरिडीह। पूर्व मुख्यमंत्री और झामुमो सुप्रीमो शिबू सोरेन का सोमवार को दिल्ली में निधन हो गया. उनके निधन की खबर मिलते ही गिरिडीह में भी शोक की लहर दौड़ गई.

झामुमो कार्यालय में शोक सभा : झामुमो के जिला महासचिव महालाल सोरेन के नेतृत्व में पार्टी कार्यालय में एक शोक सभा का आयोजन किया गया. इस सभा में अजित कुमार पप्पू, शाहनवाज अंसारी, दिलीप मंडल, प्रमिला मेहरा, राकेश सिंह रॉकी सहित कई नेता और कार्यकर्ता शामिल हुए. महालाल सोरेन ने शिबू सोरेन के निधन को पार्टी और पूरे राज्य के लिए एक बड़ी क्षति बताया. उन्होंने कहा कि झारखंड ने एक बड़े आंदोलनकारी नेता को खो दिया है

कुड़को हत्याकांड से जुड़ा था शिबू सोरेन का आंदोलन

शिबू सोरेन ने 70 के दशक में गिरिडीह के पीरटांड और धनबाद के टुंडी में सूदखोरी प्रथा के खिलाफ आंदोलन छेड़ा था. गिरिडीह के पीरटांड का चर्चित कुड़को हत्याकांड इसी आंदोलन से जुड़ा था. उस समय महाजनों द्वारा मजदूरों से भारी सूद वसूला जाता था. इस आंदोलन के दौरान, 1970 से 1973 के बीच, कुड़को गांव में कुछ महाजनों की हत्या हो गई थी. बाद में, इस मामले में शिबू सोरेन के खिलाफ हत्या का केस दर्ज हुआ. झारखंड बनने के बाद, मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा की सरकार ने इस केस को फिर से खोला और शिबू सोरेन को गिरिडीह कोर्ट में पेश होना पड़ा. हालांकि, गवाहों के शिबू सोरेन को पहचानने से इनकार करने के बाद कोर्ट ने उन्हें बरी कर दिया था.

बोकारो समाहरणालय में शिबू सोरेन को दी गई श्रद्धांजलि

बोकारो। झारखंड आंदोलन के पुरोधा और पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर सोमवार को बोकारो समाहरणालय में एक शोक सभा का आयोजन किया गया. उपायुक्त अजय नाथ झा, पुलिस अधीक्षक हरविंदर सिंह, उप विकास आयुक्त शताब्दी मजूमदार सहित सभी वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों ने शिबू सोरेन के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी.

झारखंड की माटी के कण-कण में रहेंगे जीवंतः उपायुक्त

श्रद्धांजलि के बाद, सभी ने दो मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की. इस मौके पर उपायुक्त अजय नाथ झा ने कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन भारत की आदिवासी चेतना के महानायक थे. उनका संघर्ष, बलिदान और नेतृत्व आने वाली पीढ़ियों को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा. वह झारखंड की मिट्टी के कण-कण में सदैव जीवंत रहेंगे. शोक सभा में डीपीएलआर मेनका, अपर समाहर्ता मो. मुमताज अंसारी, अनुमंडल पदाधिकारी प्रांजल ढांडा, अपर नगर आयुक्त संजीव कुमार, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी रवि कुमार और अन्य अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे.

शिबू सोरेन के निधन पर वीएचपी ने दी श्रद्धांजलि

बोकारो। विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के बोकारो जिला अध्यक्ष और बोकारो चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष राजेंद्र विश्वकर्मा ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की. राजेंद्र विश्वकर्मा ने कहा कि शिबू सोरेन का जाना झारखंड में एक युग का अंत है. उन्होंने अपना पूरा जीवन राष्ट्र, झारखंड और समाज की सेवा में समर्पित कर दिया था. उनकी संघर्षशीलता, नेतृत्व क्षमता, जनसेवा और राष्ट्रभक्ति की भावना देश और झारखंड के लोगों को हमेशा प्रेरणा देती रहेगी. विश्वकर्मा ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और परिवार व समस्त झारखंडवासियों को इस दुखद घड़ी में धैर्य और साहस प्रदान करने की कामना की.

जुआ खेलते पांच लोग गिरफ्तार

शुभम संदेश। बोकारो

सिटी थाना क्षेत्र के कॉपरेटिव मोड़ से जुआ खेलने के आरोप में पांच लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया. पुलिस को सूचना मिली थी कि वहां बड़े पैमाने पर जुआ खेला जा रहा है, जिसके बाद यह कार्रवाई की गई. 3 अगस्त 2025 को पुलिस अधीक्षक हरविंदर सिंह को मिली गुप्त सूचना के आधार पर एक विशेष छापेमारी दल का गठन किया गया. पुलिस दल ने कॉपरेटिव मोड़ स्थित एक झोपड़ी में जुआ खेलते हुए पांच लोगों को रंगे हाथों पकड़ा. मौके से पुलिस ने 7,000 नकद, ताश के पत्ते, दो कैलकुलेटर, फर्नीचर और पांच रजिस्टर सहित कई अन्य सामान बरामद किए. इस संबंध में बी.एस. सिटी थाने में केस दर्ज कर सभी पांचों आरोपियों को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया.

गिरफ्तार किए गए लोगों में पवन राय (चास), भीम कुमार (सेक्टर-9, हरला), जीतू कुमार (दुदीबाजार), संजय कुमार सिंह (सेक्टर-3ए), सच्चिदानंद कुमार (कॉपरेटिव, बोकारो) शामिल है.

युवा लायंस फोर्स ने कराया बाबा गौरीनाथ धाम का दर्शन

बोकारो (शुभम संदेश)। युवा लायंस फ़ोर्स ने अपनी एक दशक से चली आ रही परंपरा को निभाते हुए इस साल भी शिवभक्तों के लिए 'बोल-बम जत्था' का आयोजन किया. फ़ोर्स के केंद्रीय अध्यक्ष देव शर्मा के नेतृत्व में लगभग 2250 श्रद्धालुओं को सिर्फ़ एक रुपये के शुल्क पर बाबा गौरीनाथ धाम का दर्शन कराया गया. इस यात्रा को देव शर्मा के माता-पिता सुखेन्द्र नाथ शर्मा और यमुना देवी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया. यह विशाल जत्था चास के बोदरो गांव से शुरू हुआ. इसमें दर्जनों वाहन, डीजे, प्रसिद्ध महाराजा बैंड, बंगाल के कलाकार और कई एम्बुलेंस शामिल थे. श्रद्धालु नाचते-गाते हुए बोल बम और हर हर महादेव का जयघोष करते हुए दामोदर नदी से जल लेकर चिड़का स्थित बाबा गौरीनाथ धाम पहुंचे और जलाभिषेक किया. पूरे रास्ते में, युवा लायंस फ़ोर्स के सेवा दल द्वारा हर किलोमीटर पर शिविर लगाए गए थे. इन शिविरों में भक्तों के लिए फल, चाय, मिठाई, जूस, पानी और दवा जैसी सभी ज़रूरी चीज़ें उपलब्ध थीं.

गंगा के बढ़ते जलस्तर का अपर समाहर्ता ने किया निरीक्षण

शुभम संदेश। साहिबगंज

गंगा नदी के लगातार बढ़ रहे जलस्तर और बाढ़ की आशंका को देखते हुए सोमवार को अपर समाहर्ता गौतम भगत ने साहिबगंज के रामपुर दियारा क्षेत्र का दौरा किया. उन्होंने वहां हो रहे भू-क्षरण (कटाव) और जलस्तर में हो रही तेज़ी से वृद्धि का जायजा लिया. अपर समाहर्ता ने अधिकारियों को लगातार स्थिति पर नजर बनाए रखने का निर्देश दिया. उन्होंने स्थानीय निवासियों से बातचीत करते हुए उनसे सुरक्षित स्थानों पर, विशेषकर आश्रम गृह राहत शिविर में, जल्द से जल्द जाने की अपील की. गौतम भगत ने बताया कि राहत शिविर में सभी बुनियादी सुविधाएं जैसे भोजन, पीने का साफ पानी, चिकित्सा सेवाएं, शौचालय और बच्चों व बुजुर्गों के लिए विशेष इंतज़ाम किए गए हैं. अपर समाहर्ता ने क्षेत्र के लोगों से किसी भी तरह की अफवाह पर ध्यान न देने और जिला प्रशासन द्वारा जारी निर्देशों का पालन करने का आग्रह किया. उन्होंने कहा कि प्रशासन किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है और चौबीसों घंटे स्थिति पर नजर रखी जा रही है. किसी भी आपातकालीन स्थिति में लोग ज़िला नियंत्रण कक्ष से संपर्क कर सकते हैं.

न्यूज अपडेट

रोटरी क्लब ने मनाया 'रिमझिम सावन सेलिब्रेशन'

बोकारो (शुभम संदेश)। रोटरी क्लब ऑफ बोकारो मिडटाउन कपल्स ने 'रिमझिम सावन सेलिब्रेशन' का भव्य आयोजन किया. इस कार्यक्रम में बोकारो के तीनों रोटरी क्लब के सदस्यों ने अपने परिवार के साथ भाग लिया, जिससे माहौल में और भी उत्साह भर गया. क्लब की अध्यक्ष मिनी स्टीफन कपूर ने बताया कि इस कार्यक्रम का मकसद सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि आपसी सौहार्द और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ाना भी था. इस मौके पर सदस्यों ने पारंपरिक वेशभूषा में रंगारंग प्रस्तुतियाँ दीं और सावन की थीम पर आधारित संगीत, नृत्य और मज़ेदार गेम्स का आयोजन किया गया. क्लब के सचिव मोहित अग्रवाल ने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य व्यस्त जीवन से कुछ पल निकालकर सभी को एक साथ लाना और रोटरी की भावना को मजबूत करना था. कार्यक्रम का संचालन साक्षी अग्रवाल और प्रज्ञा तिवारी ने बहुत ही रोचक अंदाज में किया. क्लब के प्रवक्ता साजन कपूर ने कहा कि इस आयोजन ने चास-बोकारो रोटरी परिवार में नई ऊर्जा और एकता का संचार किया है.

उमरा से लौटे 58 यात्रियों का जमुआ में स्वागत

जमुआ (शुभम संदेश)। उमरा की यात्रा से लौटे जमुआ प्रखंड के 58 यात्रियों का सोमवार को लोगों ने फूल-मालाओं और पारंपरिक रीति-रिवाजों से भव्य स्वागत किया. ये सभी यात्री 11 जुलाई को जमजम टूर एवं ट्रेवेल्स के सदस्य मौलाना सगीर अहमद रिजवी के साथ मक्का-मदीना के लिए रवाना हुए थे और रविवार शाम को घर लौटे. यात्रा से लौटने पर जायरीनों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया. इस मौके पर अमन-चैन और मुल्क की तरक्की के लिए दुआएं भी मांगी गईं. लोगों ने जायरीनों पर फूल बरसाए और उनका अभिनंदन किया.

असमाजिक तत्वों ने शिलापट्ट तोड़ा, आक्रोश

कसमार (शुभम संदेश)। कसमार थाना क्षेत्र की सोनपुरा पंचायत में शनिवार को लगाए गए मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना से संबंधित एक शिलापट्ट को सोमवार की सुबह कुछ असामाजिक तत्वों ने तोड़ दिया. इस घटना के बाद स्थानीय कार्यकर्ताओं में भारी आक्रोश है. दो दिन पहले ही राज्य के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री योगेंद्र प्रसाद ने सोनपुरा पीडब्ल्यूडी रोड से पुरनाटांड तक सड़क निर्माण कार्य का शिलान्यास किया था. झामुमो के प्रखंड अध्यक्ष दिलीप कुमार हेंब्रम ने इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि यह सीधे तौर पर कानून का उल्लंघन है. उन्होंने इसे विकास विरोधी लोगों का काम बताया और जिला प्रशासन से जल्द से जल्द ऐसे लोगों की पहचान कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की. इस मामले में विभागीय जेई समीर कुमार दास ने बताया कि उन्हें अभी तक शिलापट्ट टूटने की कोई जानकारी नहीं मिली है. उन्होंने कहा कि वे ठेकेदार से इस बारे में जानकारी लेंगे.

खैराचातर में अंतिम सोमवारी पर उमड़ी भीड़

कसमार (शुभम संदेश)। सावन की अंतिम सोमवारी के अवसर पर कसमार प्रखंड के खैराचातर में कांवर जल यात्रा निकाली गई. खैराचातर पंचायत के मुखिया विजय कुमार जायसवाल के नेतृत्व में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने विदाहा नदी से जल उठाया. बोल बम और हर हर महादेव के जयकारे लगाते हुए श्रद्धालु गाजे-बाजे के साथ खैराचातर शिव मंदिर पहुँचे और पंडित परमेश्वर पांडेय के मंत्रोच्चार के बीच बाबा भोलेनाथ को जल अर्पित किया. पूजा के बाद, ग्रामीणों के बीच खीर का महाप्रसाद वितरित किया गया. इस कांवर यात्रा में स्थानीय मुखिया विजय कुमार जायसवाल के साथ सुनील कपरदार, नीशु जायसवाल, सौरभ राय और बड़ी संख्या में महिलाएं, पुरुष और बच्चे शामिल हुए.

विधायक ने किया पीसीसी सड़क का उद्घाटन

बोकारो (शुभम संदेश)। विधायक श्वेता सिंह ने अपने विधायक निधि से बोकारो जिले के चास प्रखंड, वार्ड संख्या 6 के लोकनाथ पुरी में एक पीसीसी सड़क का उद्घाटन किया. यह सड़क विजय भट्टाचार्य के घर से दुर्गा दास के घर तक 300 फीट लंबी है. उद्घाटन के अवसर पर विधायक ने वहां मौजूद जनता को संबोधित करते हुए कहा कि उनकी हर समस्या का समाधान करना और सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाना उनका मुख्य उद्देश्य है. उन्होंने कहा कि जनता का प्यार उन्हें क्षेत्र का विकास करने की ताकत देता है. विधायक ने यह भी बताया कि भविष्य में बोकारो विधानसभा को झारखंड के सबसे विकसित क्षेत्रों में शामिल करना है. उन्होंने कहा कि कई और लोकहितकारी योजनाएं जल्द ही शुरू होंगी, जिनसे क्षेत्र का सर्वांगीण विकास होगा.

मोती झरना में अंतिम सोमवारी पर उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

दो किलोमीटर लंबी कतारें, डेढ़ लाख श्रद्धालुओं ने किया जलाभिषेक

शुभम संदेश। साहिबगंज

सावन की अंतिम सोमवारी को तालझारी प्रखंड के बाबा मोतीनाथ धाम, महाराजपुर में आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा. बारिश की फुहारों के बीच गंगा घाट से लेकर मंदिर तक हर ओर भगवा रंग के श्रद्धालु नज़र आए और बोल बम के नारों से पूरा इलाका गूंज उठा. रात 1 बजे से ही जलाभिषेक शुरू हो गया था और देर शाम तक लगभग डेढ़ लाख श्रद्धालुओं ने बाबा मोतीनाथ धाम में गंगाजल अर्पित किया. श्रद्धालुओं की भीड़ इतनी ज़्यादा थी कि मंदिर से लेकर मोती झरना के मेन गेट तक, करीब दो किलोमीटर लंबी कतार लग गई थी. इस दौरान पुलिस को भीड़ नियंत्रित करने में काफ़ी मशक्कत करनी पड़ी. जिला पुलिस, महिला पुलिस और चौकीदारों को सुरक्षा-व्यवस्था के लिए तैनात किया गया था. श्रद्धालु कतार में लगकर, बोल बम का जयकारा लगाते हुए गुफा में स्थित शिवलिंग पर जल चढ़ाकर मन्नतें मांग रहे थे. यहां साहिबगंज और आसपास के जिलों के अलावा, बिहार के पूर्णिया, कटिहार और पश्चिम बंगाल के रामपुरहाट, बोलपुर, कटवा जैसे स्थानों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु बाबा की पूजा करने पहुंचे थे. तालझारी थाना प्रभारी नितेश कुमार पांडेय ने बताया कि श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए पुख्ता इंतजाम किए गए थे. मोतीनाथ धाम विकास समिति के सदस्य भी भक्तों की सेवा में लगे हुए थे. स्वास्थ्य विभाग द्वारा एक मेडिकल कैंप भी लगाया गया था, ताकि किसी भी श्रद्धालु को जरूरत पड़ने पर तुरंत उपचार मिल सके.

बासुकीनाथ धाम में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

दुमका। सावन की अंतिम सोमवारी को बाबा बासुकीनाथ धाम पूरी तरह से केसरिया रंग में रंग गया. हर हर महादेव और बोल बम के जयकारों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया. हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने कतारबद्ध होकर अर्घा के माध्यम से जलाभिषेक किया. दुमका के उपायुक्त अभिजीत सिन्हा ने अंतिम सोमवारी पर मेला क्षेत्र का निरीक्षण किया. उन्होंने कंट्रोल रूम से हर गतिविधि की निगरानी करने और प्रतिनियुक्त अधिकारियों को अलर्ट रहने के निर्देश दिए. उपायुक्त ने सुरक्षाबलों की तैनाती सुनिश्चित की, जो श्रद्धालुओं को कतार में खड़ा करने और उन्हें सहजता से दर्शन कराने में मदद कर रहे थे. सुरक्षा और सुविधा को प्राथमिकता देते हुए पूरे मेला क्षेत्र में पुख्ता इंतजाम किए गए थे. उन्होंने स्वास्थ्य शिविर का भी निरीक्षण किया और चिकित्सा कर्मियों को किसी भी आपात स्थिति में तुरंत सहायता देने के लिए वेदनशील रहने को कहा. अंतिम सोमवारी पर बासुकीनाथ धाम की यह व्यवस्था यह दर्शाती है कि जब शासन और श्रद्धा एक साथ काम करते हैं, तो हर आयोजन सफल होता है.

अंतिम सोमवारी पर सैकड़ों श्रद्धालु पहुंचे चेचका धाम

तलगड़िया। चास प्रखंड के पौराणिक चेचका धाम में सावन की चौथी सोमवारी को श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा. कुम्हरी, डुमरदा और आसपास के दर्जनों गांवों से सैकड़ों की संख्या में महिलाएं, पुरुष और बच्चे चेचका धाम पहुंचे. श्रद्धालुओं ने दामोदर नदी में आस्था की डुबकी लगाई और कांवड़ व लोटे में जल भरकर बोल बम के जयकारों के साथ बाबा के दरबार में जलाभिषेक किया. मंदिर परिसर में पूजा के बाद प्रसाद वितरण का भी आयोजन किया गया. मंदिर के पुजारी विजय उपाध्याय, सदानंद उपाध्याय, किशोर उपाध्याय, दिलीप पाठक, सुधीर पाठक सहित कई अन्य पुजारियों ने श्रद्धालुओं को संकल्प कराकर पूजा-अर्चना कराई. चेचका धाम के अलावा, तलगड़िया के सिलफोड़ धाम, बाटबिनोर बुढ़ा बाबा मंदिर, शिव मंदिर अलुवा मांचाटांड, शिवालय बुढिबिनोर, महादेव मंदिर टुधरी, शिव मंदिर अलकुशा, बोदरो और जमगढ़िया जैसे मंदिरों में भी श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखने को मिली.

ब्रीफ खबरें

चोरी के स्मार्टफोन के साथ गिरफ्तार

धनबाद। वरीय मंडल सुरक्षा आयुक्त के निर्देशन में सोमवार को प्रभारी निरीक्षक द्वारा गठित गश्ती दल ने धनबाद रेलवे स्टेशन के नॉर्थ साइड पोर्टिको के पास एक अभियुक्त, मोहम्मद छोटू उर्फ लंगड़ा (28 वर्ष), को चोरी के स्मार्टफोन के साथ गिरफ्तार किया. जिस फोन की अनुमानित लागत बारह हजार रुपए है. पूछताछ में अभियुक्त ने स्वीकार किया कि उसने ट्रेन संख्या 12322 (मुंबई मेल एक्सप्रेस) के स्लीपर कोच में सो रही यात्री वर्षा खातून (19 वर्ष, खानपुर, दक्षिण दिनाजपुर, बंगाल) का स्मार्टफोन चुराया था.

बार एसोसिएशन के चुनाव की तारीख का हुआ एलान

शुभम संदेश। धनबाद

धनबाद बार एसोसिएशन में सोमवार को चुनावी बिगुल बज गया है. झारखंड बार काउंसिल द्वारा मनोनीत किए गए चुनाव समिति ने सोमवार को चुनाव से संबंधित सभी जानकारियां साझा की. चुनाव समिति के सदस्य अयोध्या प्रसाद, कामदेव शर्मा, सत्य प्रकाश सिंह ने बताया कि धनबाद बार एसोसिएशन में 16 पदों पर चुनाव कराए जाने हैं. चुनाव शांतिपूर्ण ,निष्पक्ष हो इसके लिए सारी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं. 30 अगस्त 25 को अधिवक्ता मतदाता सुबह 8:30 बजे से लेकर शाम 4:30 बजे तक मतदान कर सकेंगे. मतदान व मतगणना की पूरी प्रक्रिया सीसीटीवी के निगरानी में होगी . 31 अगस्त को सुबह 8:30 बजे से मतगणना शुरू होगी. चुनाव समिति ने बताया कि 7 अगस्त, 8 अगस्त,एवं 11 अगस्त तक सोलह विभिन्न पदों के लिए नामांकन फार्म भरे जाएंगे.। 12 अगस्त एवं 13 अगस्त को नामांकन पत्र की जांच की जाएगी.14 अगस्त को शाम चार बजे तक नामांकन पत्र वापस लिया जा सकेगा. 20 अगस्त को उम्मीदवारों के नाम की सूची प्रकाशित होगी. चुनाव समिति ने बताया कि मतदाताओं को मत देने के लिए यूनिफॉर्म में अपने पहचान पत्र के साथ आना होगा. किसी भी दूसरे व्यक्ति को मतदान केंद्र के अंदर प्रवेश की इजाजत नहीं होगी. कोई भी व्यक्ति किसी भी मतदाता को प्रभावित करने वाला कोई काम नहीं करेगा.

चुनाव से 24 घंटे पहले बार परिसर में किसी तरह का पोस्टर, बैनर नहीं लगाया जा सकेगा. इसके पूर्व बार काउंसिल के ऑब्जर्वर परमेश्वर मंडल एवं संजय विद्रोही के साथ चुनाव समिति की बैठक हुई, जिसके बाद चुनाव से संबंधित कई और दिशा निर्देश दिए गए. चुनाव समिति ने बताया कि कोई भी प्रत्याशी अथवा बार का सदस्य किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध चरित्र हनन का कोई भी आरोप अथवा बयान, सोशल मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया, व अखबार तथा पंपलेट क सहारे नहीं करेगा . यदि कोई प्रत्याशी अथवा उसका समर्थक अथवा बार एसोसिएशन का सदस्य इस निर्देश की अवहेलना करेगा तो ऐसे प्रत्याशी के नामांकन पत्र को रद्द कर उस पर 25 हजार रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा, जुर्माने की राशि इलेक्शन कमेटी को देय होगी.

सोलह पदों के लिए तीस अगस्त को डाले जाएंगे वोट

मुख्य बातें

- 31 अगस्त को सुबह 8 :30 बजे से शुरू होगी मतगणना
- पांच अगस्त से लेकर सात अगस्त तक खरीदे जा सकेंगे नामांकन पत्र
- 0 7 अगस्त 8 अगस्त एवं 11 अगस्त को किए जा सकेंगे नामांकन।
- 12 से 13 अगस्त तक होगी नामांकन पत्रों की जांच
- 14 अगस्त नामांकन वापसी की तारीख
- 20 अगस्त को प्रकाशित होगी प्रत्याशियों की अंतिम सूची

सात किलो गांजा के साथ दो महिलाओं सहित 5 गिरफ्तार

शुभम संदेश। धनबाद

सरायढेला थाना क्षेत्र में पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ बड़ी सफलता हासिल की है. वरीय पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर रविवार की दोपहर से सोमवार की सुबह तक चले विशेष अभियान में 7 किलोग्राम गांजा बरामद किया गया और 5 तस्करों को गिरफ्तार किया गया. इस अवैध कारोबार में दो महिलाएं भी शामिल थी. पुलिस निरीक्षक-सह-थाना प्रभारी नूतन मोदी के नेतृत्व में छापेमारी दल ने दो स्थानों पर कार्रवाई की. पहली कार्रवाई धीवर बस्ती, कोलाकुसमा में हुई, जहां उज्जवल कुमार धीवर, टुम्पा धीवर उर्फ कालोराम देवी और रूम्पा धीवर उर्फ अष्टमी देवी के घर से 2 किलोग्राम गांजा बरामद हुआ. दूसरी कार्रवाई ढांगी मोड़, बसंत विहार में हुई, जहां शेखर कुमार महतो उर्फ बबलू की दुकान से 5 किलोग्राम गांजा जब्त किया गया. गिरफ्तार अभियुक्तों में उज्जवल कुमार धीवर, उम्र 21 वर्ष, टुम्पा धीवर उर्फ कालोराम देवी, उम्र 58 वर्ष, रूम्पा धीवर उर्फ अष्टमी देवी, उम्र 40 वर्ष, शेखर कुमार महतो उर्फ बबलू, उम्र 48 वर्ष, राकेश कुमार गुप्ता उर्फ मुन्ना गुप्ता, उम्र 45 वर्ष शामिल हैं. सभी अभियुक्तों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है. पुलिस के अनुसार, ये अभियुक्त गांजा रखने और उसकी खरीद-बिक्री में शामिल थे. अन्य संदिग्धों की भूमिका की जांच जारी है.

झरिया-बलियापुर मुख्य मार्ग पर बना गोफ

45 करोड़ की लागत से बनी सड़क के निर्माण गुणवत्ता पर उठे सवाल

शुभम संदेश। झरिया

सोमवार को झरिया से डेढ़ किलोमीटर दूर मोहरीबांध के पास नवनिर्मित सड़क के 50 मीटर के दायरे में गोफ (धंसाव) होने से अफरा-तफरी मच गई. लगभग 45 करोड़ रुपये की लागत से बनी इस सड़क में दरारें पड़ने से लोग आश्चर्यचकित हैं. धनबाद के पथ निर्माण अधिकारी पंकज कुमार, बीसीसीएल के प्रतिनिधि संजीव कश्यप सहित संबंधित अधिकारियों और नेताओं का घटनास्थल पर आना-जाना दिनभर जारी रहा. फिलहाल, भारी वाहनों के आवागमन पर रोक लगाने की कोशिश की जा रही है, जबकि छोटे वाहनों का आवागमन जारी है. यह सड़क झरिया से बलियापुर, चिरकुंडा होते हुए पश्चिम बंगाल तक जाती है. झरिया से गोलकडीह तक, यानी लगभग 3 किलोमीटर के दायरे में, सड़क के बीच में कई जगहों पर दरारें पड़ गई हैं. जहां सीमेंट की ढलाई की गई है, वहां दोनों तरफ भू-धंसान और आग की चपेट में सड़क धीरे-धीरे धंस रही है. जनता मजदूर संघ के स्थानीय नेता सेलो पासवान ने कहा कि सड़क निर्माण में लापरवाही बरती गई है, जिसके कारण कई जगहों पर दरारें पड़ गई हैं. यह स्थिति हर कोई देख सकता है. घटनास्थल को ड्रम और बांस से घेरकर चिह्नित किया गया है और भारी वाहनों के आवागमन पर रोक लगाने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों से संपर्क किया जा रहा है. घटनास्थल से 100 गज की दूरी पर आज भी लगभग एक दर्जन विस्थापित परिवार खपरैल और झोपड़ियों में रहने को मजबूर हैं. बीसीसीएल प्रबंधन का कहना है कि कई लोगों को आवास उपलब्ध कराया जा चुका है, फिर भी कुछ लोग वहां से हटने को तैयार नहीं हैं. कुछ महीने पहले भी गोलकडीह कोल डंप के पास सड़क में गोफ हो गया था, जिसे प्रबंधन ने तुरंत होल पैक से भरवा दिया था. कुजामा में बंद पेट्रोल पंप के पास भी सड़क धंस गई थी, जो आज भी देखी जा सकती है.

केशरवानी महिला समिति ने मनाया सावन उत्सव

झरिया (शुभम संदेश)। केशरवानी महिला समिति, झरिया ने एक भव्य सावन उत्सव का आयोजन किया, जिसका उद्घाटन रिंकी केसरी ने दीप प्रज्वलित कर किया. कार्यक्रम में अध्यक्ष सरिता केसरी और उपाध्यक्ष रीना केसरी ने गणेश वंदना प्रस्तुत की, जबकि आरोही केसरी ने स्वागत नृत्य किया. उत्सव में कई मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमें नृत्य, मेहंदी, अंताक्षरी और सावन क्वीन प्रतियोगिता शामिल थीं. सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार दिए गए. 'सावन क्वीन 2025' का खिताब ग्रुप 'ए' में माधुरी केशरी और ग्रुप 'बी' में रोशनी केशरी ने जीता. इस मौके पर अध्यक्ष सरिता केसरी, उपाध्यक्ष रीना केसरी, कोषाध्यक्ष पूजा केसरी और अन्य सदस्यों सहित श्री केशरवानी पंचायत के अध्यक्ष रोहित कुमार केसरी और तरुण सभा के अध्यक्ष सुधांशु केसरी भी मौजूद थे.

राष्ट्र के लिए मध्यस्थता अभियान की मासिक समीक्षा

शुभम संदेश। धनबाद

नालसा द्वारा चलाई जा रही 90 दिवसीय राष्ट्र के लिए मध्यस्थता एक विशेष अभियान के तहत अब तक 281 विवादों का निपटारा सुलह समझौते के आधार पर कर दिया गया. यह अभियान 1 जुलाई 2025 से लेकर 30 सितंबर तक चलाई जाएगी. जिसकी समीक्षा सोमवार को प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार धनबाद वीरेंद्र कुमार तिवारी के निर्देश पर अवर न्यायाधीश सह सचिव डालसा मयंक तुषार टोपनो द्वारा की गई. उन्होंने मध्यस्थता की विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की. जिसमें इस अभियान के तहत न्यायालय द्वारा अग्रसारित विभिन्न प्रकार के मामलों जिनमें वैवाहिक विवाद, दुर्घटना दावे, घरेलू हिंसा, चेक बाउंस, वाणिज्यिक विवाद, सेवा मामले, समझौता योग्य आपराधिक मामले, उपभोक्ता विवाद, ऋण वसूली, विभाजन, बेदखली, भूमि अधिग्रहण और मध्यस्थता योग्य दीवानी मामले शामिल हैं. सचिव डालसा ने बताया कि विभिन्न न्यायालयों से मध्यस्थता के लिए 538 मामले मेडिएशन सेंटर में ले गए जिसमें अबतक 281 मामलों का निपटारा किया गया. अभियान में, पक्षकारों की सुविधा के लिए, सप्ताह के सातों दिन मध्यस्थता निपटान के प्रयास किए जाएंगे, जो पूरी तरह से ऑफ़लाइन, ऑनलाइन या हाइब्रिड मोड में आयोजित की जा सकती है. जिसमें ज़िला विधिक सेवा प्राधिकरण ऑनलाइन मध्यस्थता की सुविधा प्रदान करेगा. साथ ही सभी मध्यस्थ से कहा गया कि आप सभी के द्वारा मध्यस्थता केंद्र धनबाद में वादी और प्रतिवादियों के सुविधा अनुसार सौहार्दपूर्ण वातावरण मुहैया करवाकर त्वरित न्याय दिलाने की परिकल्पना को सार्थक करना है.

सरायढ़ेला मोड पर चला वाहन चेकिंग अभियान

धनबाद (शुभम संदेश)। सोमवार को सरायढेला मोड़ पर धनबाद यातायात पुलिस ने ट्रैफिक नियमों का पालन सुनिश्चित करने के लिए एक विशेष जांच अभियान चलाया. इस अभियान का नेतृत्व यातायात थाना प्रभारी लव कुमार कर रहे थे, जिसमें बिना हेलमेट और नशे में गाड़ी चलाने वालों पर विशेष ध्यान दिया गया. इस अभियान के तहत अब तक 30 से ज़्यादा दोपहिया वाहनों की जांच की गई है. जिन चालकों के पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस या वाहन के कागजात नहीं थे, या जो बिना हेलमेट के पाए गए, उनके खिलाफ मोटर वाहन अधिनियम के तहत कार्रवाई की गई है. कई वाहनों का चालान काटा गया और कुछ को ज़ब्त भी किया गया है. नशे में गाड़ी चला रहे लोगों की मौके पर ब्रेथ एनालाइजर और मेडिकल जाँच की गई. दोषी पाए गए लोगों को थाने ले जाकर कानूनी कार्रवाई की जा रही है. थाना प्रभारी लव कुमार ने कहा कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करना और दुर्घटनाओं को कम करना है.

आसनसोल

आसनसोल - चितरंजन की बदहाल सड़क पर हो रहे हादसे

शुभम संदेश। सालानपुर

सालानपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली आसनसोल चितरंजन मुख्य मार्ग पर देन्दुआ के निकट सड़क की हालत बेहद जर्जर हो चुकी है. यह सड़क आसनसोल चितरंजन एक महत्वपूर्ण मार्ग है, लेकिन लंबे समय से इसकी मरम्मत नहीं होने के कारण यह राहगीरों के लिए परेशानी और दुर्घटनाओं का सबब बन चुका है. स्थानीय निवासी सालानपुर नेता फुचु बाउरी तृणमूल कांग्रेस बताया कि इस सड़क से कोलियरी और कारखाने कंपनी के बड़े-बड़े भारी वाहन प्रतिदिन गुजरते हैं, जिससे सड़क की स्थिति और भी खराब हो गई है. उन्होंने कहा कि सड़क पर कई जगह गहरे गड्ढे हो गए हैं, जिनके कारण वाहन फंस जाते हैं और अक्सर संतुलन बिगड़ने से दुर्घटनाएं हो रही हैं. खासतौर पर स्कूल जाने वाले छात्र और बीमार मरीज इस रास्ते से आने-जाने में काफी दिक्कतें झेल रहे हैं. बरसात के मौसम में सड़क पर कीचड़ और जलजमाव की स्थिति बन जाती है, जिससे पैदल चलना भी मुश्किल हो जाता है. स्थानीय ने बताया कि ग्रामीणों ने कई बार स्थानीय प्रशासन और संबंधित विभाग से सड़क की मरम्मत की मांग की लेकिन अब तक कोई सुनवाई नहीं हुई है. उन्होंने कहा, हम लोग अपनी जान हथेली पर रखकर इस रास्ते से गुजरते हैं. कब कौन दुर्घटना का शिकार हो जाए, कहा नहीं जा सकता. स्थानीय लोगों की मांग है कि प्रशासन इस गंभीर समस्या का जल्द से जल्द संज्ञान लेकर सड़क की मरम्मत कार्य शुरू कराए, ताकि भविष्य में कोई बड़ी दुर्घटना न हो और आमजन को राहत मिल सके.

रानीगंज के मुख्य डाक प्रभारी का स्वागत

रानीगंज (शुभम संदेश)। सुरक्षा संस्था की तरफ से रानीगंज के मुख्य डाकघर के नए प्रभारी दीपक भगत का स्वागत किया गया. सुरक्षा के अध्यक्ष सरदार दलजीत सिंह वाधवा ने उन्हें उत्तरी पहनाकर स्वागत किया एवं कहा कि हमें उम्मीद है कि आप अपने नए पद पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करेंगे. डाकघर के कार्यों को सफलतापूर्वक संचालित करेंगे. इस अवसर पर डाक विभाग अधिकारी सूरज सील एवं दीप्तिकाना महतो के साथ कई सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे. डाकघर प्रभारी दीपक भगत ने कहां की वे ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करेंगे. अपने सहकर्मियों के साथ सहयोग करेंगे और एक सकारात्मक कार्य वातावरण बनाएंगे.

व्यापारी और व्यवसाय देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ : ओम बिड़ला

शुभम संदेश। रानीगंज

संसद सदस्य एवं कॉन्फेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण खंडेलवाल के नेतृत्व में संसद में कैट के व्यापारियों के लिए एक विशेष दौरे का आयोजन किया गया. इस ऐतिहासिक अवसर पर देशभर से आए लगभग 150 प्रमुख व्यापारी नेताओं को नए और पुराने संसद भवन का भ्रमण कराया गया और उन्हें संसद सत्र का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने का अवसर भी मिला. इस दौरे का मुख्य आकर्षण तब बना जब कैट व्यापारियों को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने संसद परिसर स्थित अपने मीटिंग कक्ष में संबोधित किया. अपने संबोधन में बिड़ला ने कहा, "कैट व्यापारियों का एक देशव्यापी संगठन है, जो पूरे देश में व्यापारियों के हित में कार्य कर रहा है. व्यापारी और व्यापार, देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं. व्यापारी न केवल रोजगार सृजित करते हैं, बल्कि देश की आर्थिक वृद्धि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं." उन्होंने आगे कहा कि बदलते आर्थिक परिवेश को देखते हुए व्यापारियों को अपने स्तर को ऊँचा उठाना होगा. हम सभी को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रयासरत रहना चाहिए. उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संदेश को दोहराते हुए कहा कि, "व्यापारियों को देश और अपने हित में स्वदेशी सामान ही बेचना और खरीदना चाहिए." लोकसभा अध्यक्ष ने उपस्थित व्यापारियों को आश्वस्त किया कि व्यापार और व्यापारियों से जुड़े मुद्दों को यदि उनके संज्ञान में लाया जाए, तो वे उन विषयों को संसद में चर्चा के लिए लाने का प्रयास करेंगे. इस अवसर पर सांसद एवं कैट के राष्ट्रीय महामंत्री श्री प्रवीण खंडेलवाल ने कहा, "देश के व्यापारी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ पूरी मजबूती से खड़े हैं. हम उनके 'भारतीय सामान खरीदो और बेचो' के आह्वान का पूर्ण समर्थन करते हैं और 10 अगस्त से पूरे देश में स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने हेतु एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया जाएगा.

पटना साहिब से निकलेगी गुरु तेग बहादुर की शहीदी यात्रा

डेढ़ सौ शहरों का करेगी भ्रमण, याद की जाएगी उनकी कुर्बानी

शुभम संदेश। रानीगंज

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की 350 साल शहीदी समागम को समर्पित एक यात्रा निकलेगी जो 31 अगस्त को गुरु का बाग गुरुद्वारा पटना साहिब से आरंभ होगी. यात्रा में सिख संगत द्वारा डेढ़ सौ शहरों के अंदर यात्रा जाएगी. उसकी यात्रा का आरंभ जो है वह नीतीश कुमार जी करेंगे. तख्त श्री हरमंदिर साहिब पटना के प्रबंधक कमेटी के प्रमुख सरदार हरपाल सिंह जोहल ने बतलाया कि सभी राज्यों में यात्रा जाएगी. गुरु तेग बहादुर साहिब जी की कुर्बानी भारत के लिए अद्वितीय है. भारत की संस्कृति के लिए है, इसलिए हर भारतवासी इसका आगे स्वागत करें और इसमें हिस्सा लें. पत्रकार सम्मेलन में मुख्य रूप से उपस्थित सिख समाज के प्रमुख पदाधिकारी सरदार दर्शन सिंह, सरदार परमजीत सिंह, सुरजीत सिंह ,सुखविंदर सिंह बिट्टू, सतपाल सिंह, जसवंत सिंह सहित समाज के कई वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित थे.

चौथी सोमवारी को बैगुनिया सिद्धेश्वरी मंदिर में भक्तों का सैलाब उमड़ा

- बोल बम के जयकारों से गुंजायमान रहा बराकर

शुभम संदेश। बराकर

श्रावण महीने की चौथी सोमवारी को बराकर सिद्धेश्वरी मंदिर में जल चढ़ाने वाले भक्तों का जन सैलाब देखने को मिला. हज़ारों की तादाद में शिव भक्तों ने बोल बम के नारों के साथ जलाभिषेक किया. पुरुष भक्तों की तुलना में महिलाओं भक्तों की तादाद ज्यादा देखी गई. रविवार की रात्रि से ही बाबा को जल चढ़ाने के लिए कुल्टी बराकर झारखंड के चिरकुंडा, कुमारधुबी, मुग्मा निरसा, कालू बथान, से शिव भक्त सड़क मार्ग से ओर रेल मार्ग से बराकर बैगुनिया मोड पहुंचे थे. रविवार को हो रही दिन भर भारी वारिश के बावजूद बाबा के भक्तों का हुजूम थमने का नाम ही नहीं ले रहा था. संध्या छह बजे से ही भक्त डिशेरगढ़ नदी पहुंच कर पवित्र स्नान कर जल लेकर बराकर बैगुनिया स्थित बाबा सिद्धेश्वरी नाथ मंदिर सात किलोमीटर पैदल चलकर जल बाबा को अर्पित किया. इस दौरान बराकर , बैगुनिया, हनुमान चढ़ाई, चेकपोस्ट, झाल बागान में भक्तों की सेवा के लिए शिव भक्त द्वारा नाना प्रकार व्यंजन निर्मल जल, शरबत, पायस, खीर, दूध, चाय, बिस्किट, कैंप का आयोजन किया गया. जिनमें बैगुनिया चेकपोस्ट शीतला मंदिर, बैगुनिया दुर्गा मंदिर स्थित स्वर्ण व्यवसाई संघ, श्रीश्री महावीर अखाड़ा नवयुवक संघ कुल्टी पोस्ट ऑफिस , एचपी पेट्रोल पंप के रमेश अग्रवाल, बोलबम सेवा संघ समिति निमाकलोंनी, बराकर ,युवा भोले नाथ ग्रुप, मारवाड़ी युवा मंच बराकर ग्रेटर शाखा , बराकर कुल्टी पुलिस प्रशासन मुख्य रूप से शामिल रहीं. जिन्होंने दिल खोलकर भक्तों को चारों सोमवार को भरपूर सेवा दी. सेवा का योगदान देने वालों में बीएचपी, आरएसएस, बजरंगदल, के साथ बोलबम सेवा समिति है, जो पिछले पच्चीस वर्षों से मंदिर पूरी रात ड्यूटी कर भक्तों की सेवा ,मंदिर के बाहर ओर भीतर कांवड़ियों के लिए कतारबद्ध तरीके से जल अर्पण करवाना, सुरक्षा प्रदान करना महत्वपूर्ण कार्य रहा है.

ईसीएल मुख्यालय सकतोड़िया

ठीका कर्मियों के बकाया बोनस का भुगतान पूजा के पहले : अभिजीत

शुभम संदेश। कुल्टी

सकतोड़ीया स्थित ईसीएल मुख्यालय में कार्यरत ठेका कर्मियों को पंद्रह दिनों के भीतर बकाया बोनस भुगतान किया जाएगा. दुर्गापूजा के एक महीने पहले ठेकाकर्मियों को बोनस मिल जाएगा. इस बात से ठेका कर्मियों में खुशी की लहर देखी गई. मालूम हो सकतोड़िया स्थित ईसीएल के मुख्यालय में सैकड़ों की तादाद ठेका कर्मियों के बकाया बोनस को लेकर भाजपा जिला नेता अभिजीत आचार्य के नेतृत्व आंदोलन लगातार जारी था. जहां सोमवार को ईसीएल अधिकारियों ने ठेका कर्मियों के बकाया बोनस की मांग को स्वीकार किया. उक्त बातें भाजपा जिला उपाध्यक्ष अभिजीत आचार्य ने जानकारी दी, उन्होंने बताया कि ईसीएल के महाप्रबंधक पुण्यदीप भट्टाचार्य के साथ ठेकाकर्मियों के बजाय बोनस को लेकर बैठक की गई. इस बैठक में अधिकारी ने बताया कि पंद्रह दिनों के भीतर बकाया राशि का भुगतान किया जाएगा., भाजपा के जिला उपाध्यक्ष द्वारा ठेका कर्मियों की बकाया राशि के लिए किया गया आंदोलन रंग लाया और कर्मियों की मांग पूरी हुई.

शिबू सोरेन के दोस्त शिव कुमार शिबू की आंखों के नहीं रुक रहे आंसू, कहा-

भगवान उन्हें भी गुरुजी के पास ही भेज दें

शुभम संदेश। हजारीबाग

झारखंड आंदोलन के प्रणेता पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन नहीं रहे. उनसे जुड़ी कई स्मृति आज जीवित है. लोग उन पलों को याद कर रहे हैं जो गुरु जी जुड़े हुए थे. हजारीबाग के रहने वाले शिबू सोरेन के अजीज मित्र शिवकुमार शिबू जो उनके मित्र थे आज उनके आंख से आंसू थमने का नाम नहीं ले रहा है. अपने दोस्त को यही कह रहे हैं कि वो भी उसे अपने साथ बुला लें ताकि दोनों मित्र एक साथ मरणोपरांत भी रह सके. यह एक अटूट दोस्ती के वह शब्द हैं, जिसे सुनकर हर एक व्यक्ति भावुक हो जाएगा.

शिवकुमार शिबू मूल रूप से मंडई हजारीबाग के रहने वाले हैं. वर्तमान समय में वह कालीबाड़ी रोड स्थित अपने आवास में रहते हैं. 1972 में जब शिबू सोरेन जरीडीह विधानसभा से चुनाव लड़े थे तो वे हजारीबाग विधानसभा से दोनों का चुनाव चिन्ह तीर धनुष छाप था. उस वक्त अखिल भारतीय झारखंड पार्टी हुआ करता था. जो बाद में झारखंड मुक्ति मोर्चा का स्वरूप में आया. 1972 से दोनों की दोस्ती रही. गुरुजी और हजारीबाग के शिव कुमार शिबू ने एक साथ महाजन जुल्म के खिलाफ लड़ाई लड़ी. हजारीबाग जब भी गुरु जी आते थे तो शिव कुमार शिबू से उनकी मुलाकात कचहरी में होती थी क्योंकि शिवकुमार शिबू पेशे से वकील हैं. इन्होंने बताया कि उस वक्त एक नारा दिया गया था कि झारखंड की उच्च शिखर से बागे बागुन ने ललकारा है झारखंड वासियों होश में आओ झारखंड राज्य हमारा है.

शिवकुमार शिबू बताते हैं कि गुरुजी हमेशा शिक्षा पर जोर देते थे. उनका कहना था कि जब तक झारखंड के लोग शिक्षित नहीं होंगे वे अपना अधिकार नहीं समझ पाएंगे. इस कारण हर एक व्यक्ति को शिक्षित होना जरूरी है. शिवकुमार शिबू शारीरिक रूप से अस्वस्थ हैं और वह बोलने में भी सक्षम नहीं हैं. फिर भी इन्होंने इस दौरान अपनी भावुकता जताते हुए कहा कि हेमंत सोरेन के ऊपर उनके पिता ने बड़ी जिम्मेदारी छोड़कर इस दुनिया से रुखसत हुए हैं. उनका सपना को साकार करना है. जमींदारी अभी भी अवशेष रुप से बचा हुआ है. पूंजीपति गरीबों का शोषण कर रहे हैं. इसे खत्म करना जरूरी है.

झारखंड ने एक अनमोल हीरा खो दिया: जयशंकर पाठक

हजारीबाग। हिन्दू धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष जय शंकर पाठक नें पूर्व मुख्यमंत्री सह राज्य सभा के सदस्य दिशोम गुरु सिबू सोरेन के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है. पाठक ने अपने शोक संदेश में कहा कि दिशोम गुरु सिबू सोरेन के निधन से झारखंड ने एक अनमोल हीरा खो दिया है. उन्होंने कहा कि झारखंड आंदोलन के पुरोधा और आदिवासी अस्मिता के प्रतिक और जन-जन के नेता सिबू सोरेन के निधन का समाचार अत्यंत दु:खद है. उनका संपूर्ण जीवन संघर्ष, न्याय और अधिकार की लड़ाई को समर्पित रहा. वे केवल एक राजनेता नही बल्कि एक विचार थे, जो जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए सदैव खड़े रहे. उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति और इस कठीन समय में शोकाकुल परिवार को धैर्य व सहन शक्ति प्रदान हो इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना भी की है.

शिबू सोरेन के निधन पर कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह ने जताया शोक

हजारीबाग। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड आंदोलन के प्रणेता दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर पूरे राज्य में शोक की लहर दौड़ गई है. उनके जाने से झारखंड ने एक युग पुरुष, एक विचार और एक आंदोलन की जीवंत आवाज़ को खो दिया है. पूर्व सदर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी रह चुके मुन्ना सिंह ने सोमवार को गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि दिशोम गुरु का निधन झारखंड की आत्मा के मौन हो जाने के समान है. मुन्ना सिंह ने कहा कि शिबू सोरेन सिर्फ एक राजनेता नहीं, बल्कि आदिवासी अस्मिता और सामाजिक चेतना के प्रतीक थे. उन्होंने झारखंड राज्य की परिकल्पना को अपने संघर्ष और बलिदानों से साकार किया. वे वंचितों, श्रमिकों, किसानों और आदिवासी समाज के लिए जीवनभर लड़ते रहे. उन्होंने सत्ता में रहकर भी जनता से जुड़ाव नहीं छोड़ा और अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया. मुन्ना सिंह ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि वह शिबू सोरेन को चिरशांति दें और उनके परिवार व अनुयायियों को इस दु:ख को सहने की शक्ति प्रदान करें.

गुरुजी का जाना राजनीति के लिए अपूरणीय क्षतिः विकास राणा

हजारीबाग। झारखंड आंदोलन के प्रणेता, राज्यसभा सांसद, पूर्व केन्द्रीय मंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु बाबा शिबू सोरेन के निधन की खबर से पूरा झारखंड स्तब्ध है. गुरुजी का जाना झारखंड की राजनीति और जनजीवन के लिए अपूरणीय क्षति है. उन्होंने झारखंड के हक़, अधिकार और अस्मिता की लड़ाई को अपने संपूर्ण जीवन का उद्देश्य बनाया. उनके नेतृत्व और दूरदृष्टि ने झारखंड को एक नए राज्य के रूप में स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया. शिबू सोरेन न केवल एक दूरदर्शी नेता थे, बल्कि जनसेवा के लिए समर्पित एक सच्चे योद्धा भी थे. उनका संघर्ष और बलिदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सहित पूरा प्रदेश उनके निधन से गहरा शोक मना रहा है. इस कठिन समय में हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे शोकाकुल परिवार को धैर्य और सहनशीलता प्रदान करें. गुरुजी की आत्मा को शांति मिले और उनका विजन झारखंड की जनता के दिलों में सदैव जीवित रहे.

शिबू सोरेन के निधन पर समाहरणालय में शोकसभा का आयोजन

चतरा। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के दुखद निधन पर सोमवार को जिला समाहरणालय सभागार में शोकसभा का आयोजन किया गया. इस अवसर पर जिला प्रशासन के सभी वरीय पदाधिकारी एवं कर्मी उपस्थित रहे. शोकसभा की शुरुआत दो मिनट के मौन के साथ दिवंगत आत्मा की शांति हेतु की गई. उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने शिबू सोरेन जी के द्वारा झारखंड के सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में दिए गए योगदान को स्मरण करते हुए गहरी संवेदना व्यक्त की.

शोकसभा का समापन श्रद्धांजलि स्वरूप मौन प्रार्थना के साथ किया गया.

ब्रीफ न्यूज

अंतिम सोमवारी पर निकली 11वीं भव्य जल यात्रा

डोमचांच (कोडरमा)। सावन की अंतिम सोमवारी के अवसर पर हरिओम कृष्णा समाज, जेरुवाडीह द्वारा 11वीं भव्य जल यात्रा निकाली गई. ₹बोलबम₹ और ₹हर हर महादेव₹ के जयकारों से क्षेत्र गूंज उठा. इस जल यात्रा में नावाडीह, बेहराडीह, जेरुआडीह, मधुबन, लेंगरापीपर, भेलवाटांड़, रुपनडीह व डोमचांच सहित अन्य क्षेत्रों से हजारों की संख्या में शिवभक्त शामिल हुए. श्रद्धालुओं ने दोमनिया नदी से जल भरकर लगभग 10 किलोमीटर पैदल चलकर जेरुवाडीह शिव मंदिर में जलाभिषेक किया. एक शिवभक्त कांवर में जल भरकर पैदल यात्रा करते दिखे.

तेज रफ्तार टेंपो अनियंत्रित होकर खेत में पलटा

जयनगर (कोडरमा)। सोमवार सुबह कोडरमा-कोवाड मुख्य मार्ग पर एक तेज रफ्तार सवारी टेंपो अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खेत में पलट गया. यह हादसा पांडु गांव स्थित शांति ढाबा के पास हुआ. दुर्घटना में एक यात्री बासुदेव यादव घायल हो गया, जिसे स्थानीय लोगों की मदद से इलाज के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है. प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार टेंपो (नंबर जेएच 02बीबी 8746) तेतरौन की ओर से आ रहा था. जैसे ही वह शांति ढाबा के समीप पहुंचा, चालक ने नियंत्रण खो दिया और वाहन खेत में जा गिरा. पलटने की तेज आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और राहत कार्य में जुट गए.

चट्टी पेटो पंचायत में डायरिया से एक की मौत

केरेडारी। प्रखंड के चट्टी पेटो पंचायत में डायरिया का प्रकोप फैल गया है. इस बीमारी से 58 वर्षीय सीता देवी की मौत हो गई है. उनके पति सुरेश साव और उनके परिवार के कई सदस्य भी डायरिया से पीड़ित हैं, जिनका इलाज हजारीबाग सदर अस्पताल में चल रहा है. ग्रामीणों ने बताया कि बरसात में बारिश का पानी कुएं और तालाब में प्रवेश कर पानी दूषित हो गया था, जबकि ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव नहीं हुआ था. केरेडारी स्वास्थ्य केंद्र की टीम ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का निरीक्षण किया और रोकथाम के निर्देश दिए.

युवक की मौत, परिजनों ने की सड़क जाम

डोमचांच (कोडरमा)। कोडरमा-जमुआ मुख्य मार्ग पर रविवार रात मेहता भवन के समीप एक सड़क दुर्घटना में युवक की मौत हो गई. मृतक की पहचान राज सिंह निवासी कालीमंडा, डोमचांच के रूप में हुई है. बताया जा रहा है कि राज सिंह किसी कार्य से घर लौट रहे थे, तभी अज्ञात वाहन की चपेट में आ गए. मौके पर ही उनकी मौत हो गई. सूचना पाकर डोमचांच पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए कोडरमा सदर अस्पताल भेजा.

ध्वजाधारी धाम में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब, प्रशासन रहा पूरा मुस्तैद

अंतिम सोमवारी पर निकली भव्य कांवर पदयात्रा

शुभम संदेश। कोडरमा

श्रावण माह की अंतिम सोमवारी के पावन अवसर पर कोडरमा जिले के झरनाकुंड धाम से प्रसिद्ध ध्वजाधारी धाम तक हजारों श्रद्धालुओं ने भव्य कांवर पदयात्रा में भाग लिया. यह पदयात्रा लगभग 16 किलोमीटर लंबी रही, जिसमें भक्तों का उत्साह और आस्था देखते ही बन रही थी. हाथों में ध्वजा, त्रिशूल और बेलपत्र लिए ₹बोल बम₹ के जयघोष के साथ कांवरिये कठिन रास्तों और 777 सीढ़ियों को पार कर भगवान भोलेनाथ को गंगाजल अर्पित करने ध्वजाधारी धाम पहुंचे.

धार्मिक वातावरण में डूबे इस आयोजन के दौरान ध्वजाधारी धाम परिसर 'हर-हर महादेव' और ₹बोल बम₹ के नारों से गूंजता रहा. कई श्रद्धालु मन्नत पूरी होने की भावना के साथ विशेष प्रतीक लेकर मंदिर पहुंचे. महामंडलेश्वर श्री सुखदेव दास जी महाराज ने श्रद्धालुओं को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि श्रावण का यह दिन शिवभक्तों के लिए अत्यंत पुण्यदायी होता है. जो भी भक्त सच्चे मन से भोलेनाथ का जलाभिषेक करता है, उसकी मनोकामनाएं अवश्य पूर्ण होती हैं. इस भव्य आयोजन के सफल संचालन के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद रहा. उपायुक्त ऋतुराज स्वयं ध्वजाधारी धाम पहुंचे और सुरक्षा, विधि-व्यवस्था एवं यातायात प्रबंधन की गहन समीक्षा की. उन्होंने दंडाधिकारियों और पुलिस पदाधिकारियों को दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और इसके लिए प्रशासन पूरी तरह सतर्क है. साफ-सफाई, पेयजल, प्राथमिक चिकित्सा, नियंत्रण कक्ष और पुलिस बल की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित की गई थी.

पुलिस अधीक्षक अनुदीप सिंह एवं अनुमंडल पदाधिकारी रिया सिंह ने भी मौके पर उपस्थित रहकर भीड़ नियंत्रण और व्यवस्था को संभाला. अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अनिल कुमार सिंह, पुलिस उपाधीक्षक रतिभान सिंह, नगर प्रशासक शम्भू प्रसाद कुशवाहा, डीटीओ विजय सोनी, डीपीओ अनूप कुजूर, दंडाधिकारी नीतीश कुमार निशांत सहित अनेक अधिकारी व सुरक्षाकर्मी व्यवस्था में तैनात रहे. इस दौरान जगह-जगह स्वास्थ्य जांच शिविर, ठहराव स्थल, पेयजल और आपातकालीन सेवाओं की व्यवस्था की गई थी.

सामाजिक संगठनों और स्वयंसेवकों ने भी श्रद्धालुओं की सेवा में विशेष सहयोग दिया. ध्वजाधारी धाम के प्रमुख सेवकों में मनोज कुमार झुन्नू, जमुना यादव, अशोक यादव, शशि सिंह, चंदन बाबा, मनीष कुमार, इंद्रदेव यादव, पिंटू पासवान, धीरज कुमार, रामचंद्र यादव, शंकर मोदी, अनिल पासवान व धीरज तिवारी प्रमुख रूप से सक्रिय रहे. श्रावण की अंतिम सोमवारी को लेकर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ और अनुशासित यात्रा ने यह एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि ध्वजाधारी धाम झारखंड राज्य का एक प्रमुख और प्रतिष्ठित धार्मिक स्थल है.

पचड़ा जोरदाग में भक्ति का उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

केरेडारी। पचड़ा जोरदाग में सावन की चौथी व अंतिम सोमवारी को भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी. श्रद्धालुओं ने बुढ़िया माता स्थान एवं पचड़ा बड़की नदी से जल उठाकर हर-हर महादेव के जयकारों के साथ विभिन्न शिवालयों में जलाभिषेक किया. महिलाओं, पुरुषों, युवाओं व बच्चों ने बेलपत्र, गंगाजल, दूध, धतूरा, पुष्प आदि अर्पित कर भोलेनाथ से मनोकामनाएं मांगीं. सुबह से शाम तक शिव मंदिरों में घंटियों की गूंज और बोलबम के नारों से वातावरण भक्तिमय बना रहा. इस दौरान श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद का वितरण भी किया गया. कार्यक्रम में प्रमुख सुनीता देवी, मुखिया महेश प्रसाद साव, प्रेम रंजन पासवान, जागेश्वर साव, कुलदीप साव, उदय लाल गुप्ता, राम कुमार, श्याम देव साव समेत कई गणमान्य व बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे.

चरही के शिवालयों में जलार्पण के लिए उमड़ी भीड़

चरही। सावन मास की चौथी और अंतिम सोमवारी पर सोमवार को प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न शिवालयों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी. अहले सुबह से ही श्रद्धालु जलाभिषेक एवं पूजा-अर्चना के लिए मंदिरों में पहुंचने लगे. चरही, चनारो, बहेरा, कजरी, सडवाहा, इंद्रा, जरबा, तापिन, प्रेमनगर और हेंदेगड़ा सहित क्षेत्र के प्रमुख शिवालयों को विशेष रूप से फूलों से सजाया गया था. शिवलिंग का विशेष श्रृंगार किया गया और ब्राह्मणों द्वारा विधिवत पूजा संपन्न कराई गई. बोल-बम के नारों से मंदिर परिसर गूंजायमान रहा. महिला, पुरुष, युवक और युवतियों ने श्रद्धा भाव से भगवान शिव की महाआरती की और प्रसाद अर्पित किया. व्रतधारी भक्तों ने विशेष अनुष्ठानों में भाग लिया. अंतिम सोमवारी होने के कारण श्रद्धालुओं की संख्या सामान्य से अधिक रही. पूरे दिन मंदिरों में धार्मिक माहौल बना रहा और श्रद्धालु भगवान शिव के जयकारों के साथ भक्ति में लीन दिखे. प्रशासन और स्थानीय समितियों द्वारा सुरक्षा और व्यवस्था का समुचित प्रबंध किया गया था.

महेश्वरनाथ धाम से घोड़मेश्वर धाम तक कांवरियों की निकली पदयात्रा, 'बोल बम' से गुंजा पूरा इलाका

सतगावां (कोडरमा)। सावन के अंतिम सोमवारी पर सोमवार को महेश्वरनाथ धाम से बाबा घोड़मेश्वर धाम तक जलाभिषेक के लिए सैकड़ों कांवरियों का जत्था निकला. सकरी नदी घाट पर उत्तरायण गंगा में स्नान कर डाक कांवरियों ने जलपात्र में पवित्र जल भरकर शिवभक्ति का संकल्प लिया और 10 किलोमीटर लंबी पदयात्रा पर निकल पड़े. भगवामय परिधानों में हर हर महादेव और बोल बम के जयघोष से पूरा मार्ग भक्तिमय हो गया. साउंड सिस्टम और मांदर की धुन पर थिरकते कांवरिये शिवभक्ति में लीन नजर आए. पदयात्रा का उद्घाटन जिला परिषद सदस्य नीतू कुमारी, प्रमुख ललिता देवी, उपप्रमुख मनोज निराला समेत कई जनप्रतिनिधियों ने किया. स्थानीय थाना प्रभारी सौरभ कुमार शर्मा दलबल के साथ मुस्तैद रहे, जबकि स्वास्थ्य विभाग भी पूरी तरह अलर्ट मोड में दिखा. यात्रा में विधायक प्रतिनिधि धनंजय यादव, समाजसेवी रामावतार चौधरी, राजेश यादव, पंकज गुप्ता सहित अनेक श्रद्धालु शामिल हुए. श्रद्धा और भक्ति से ओत-प्रोत यह आयोजन पूरे क्षेत्र में आकर्षण का केंद्र बना रहा.

शिबू सोरेन के निधन पर विधायक प्रदीप प्रसाद ने जताया शोक

हजारीबाग। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और वरिष्ठ नेता शिबू सोरेन 'गुरुजी' के निधन पर हजारीबाग सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है. उन्होंने कहा कि गुरुजी का जाना केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि एक युग का अंत है. वे आदिवासी समाज की बुलंद आवाज़ थे, जिन्होंने संघर्ष और समर्पण से झारखंड की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर बनाई. विधायक ने उन्हें सादगी, सेवा और सामाजिक न्याय की प्रतिमूर्ति बताया और कहा कि उनका जीवन सभी जनप्रतिनिधियों के लिए प्रेरणा है

गुरु जी हमेशा रहेंगे युवाओं के प्रेरणास्रोतः हर्ष अजमेरा

हजारीबाग। युवा समाजसेवी हर्ष अजमेरा ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि शिबू सोरेन का जाना केवल एक नेता नहीं, बल्कि एक विचारधारा और संघर्ष की समाप्ति है. उन्होंने कहा कि झारखंड के निर्माण में दिशोम गुरु की भूमिका अविस्मरणीय रही. वे हमेशा आदिवासियों, श्रमिकों, किसानों और वंचितों की आवाज बने रहे. हर्ष अजमेरा ने कहा कि वे सत्ता में रहते हुए भी जमीन से जुड़े रहे और अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया. उनके संघर्ष और त्याग ने उन्हें आमजन का नायक बनाया.

एक नजर

जलजमाव से परेशान ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

पथरगामा। घरों और खेतों में पानी घुस जाने से नाराज ग्रामीणों ने फोरलेन सड़क बना रही कंपनी डीबीएल के खिलाफ प्रदर्शन किया. यह समस्या लगातार हो रही बारिश के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग एनएच 133 पर पथरगामा प्रखंड के दाढ़ी घाट गांव में उत्पन्न हुई है. ग्रामीणों का आरोप है कि सड़क निर्माण के दौरान जल निकासी की उचित व्यवस्था नहीं की गई, जिसके कारण बारिश का पानी उनके घरों और खेतों में भर गया. ग्रामीणों ने पहले भी कंपनी से इस समस्या को ठीक करने की मांग की थी, लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया गया. ग्रामीणों के विरोध के बाद स्थानीय विधायक और मंत्री संजय यादव ने हस्तक्षेप किया. इसके बाद, प्रखंड विकास पदाधिकारी एन.के. गौतम की मौजूदगी में ग्रामीणों और डीबीएल कंपनी के प्रतिनिधियों के बीच एक बैठक हुई. बैठक में ग्रामीणों ने अपनी समस्याएं विस्तार से बताईं और कंपनी की लापरवाही पर गुस्सा ज़ाहिर किया. उन्होंने जल्द से जल्द स्थायी समाधान की मांग की. बीडीओ ने डीबीएल के अधिकारियों को तुरंत इस गंभीर समस्या को हल करने का निर्देश दिया. कंपनी के अधिकारियों ने आश्वासन दिया कि वे नाला बनाकर पानी की निकासी की व्यवस्था करेंगे और जल्द ही काम शुरू कर देंगे. इस आश्वासन पर ग्रामीणों ने सहमति जताई.

इस बैठक में लालू भारद्वाज, ललन श्रीवास्तव, रितेश कुमार यादव और बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे.

चास मुफस्सिल थाना में श्रद्धांजलि सभा

बोकारो। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के निधन पर सोमवार को चास मुफस्सिल थाना परिसर में एक शोक सभा का आयोजन किया गया. थाना प्रभारी प्रकाश मंडल सहित वहां उपस्थित सभी अधिकारियों और कर्मियों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी. इस मौके पर थाना प्रभारी ने कहा कि शिबू सोरेन का योगदान झारखंड की राजनीति और आदिवासी समाज के उत्थान के लिए अविस्मरणीय रहेगा. उन्होंने ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति और परिवार को दुख सहने की शक्ति देने की प्रार्थना की.

मालदा डिवीजन ने किया रेलवे स्कूल साहिबगंज में हर घर तिरंगा अभियान के पहले चरण का आयोजन

शुभम संदेश। मालदा

हर घर तिरंगा 2025 एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन है, जो प्रत्येक भारतीय को 2 से 15 अगस्त 2025 तक राष्ट्रीय ध्वज को गर्व के साथ फहराने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह एक प्रतीकात्मक इशारे से कहीं अधिक है; यह हमारी साझा पहचान, स्वतंत्रता और एकता का उत्सव है।

इस अभियान के हिस्से के रूप में, मालदा डिवीजन, पूर्वी रेलवे ने साहिबगंज के पूर्वी रेलवे हाई स्कूल में पहले चरण के उत्सव को चिह्नित करने के लिए एक चित्रकला और तिरंगा निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस आयोजन में 300 से अधिक छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया, जिन्होंने तिरंगा चित्रकला और तिरंगा निर्माण प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। माहौल देशभक्ति के उत्साह से भरा हुआ था, क्योंकि विभिन्न कक्षाओं के छात्रों ने रंग-बिरंगे चित्रों और खूबसूरती से बनाए गए ध्वज मॉडलों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता और राष्ट्र के प्रति प्रेम का प्रदर्शन किया। कक्षा-वार तिरंगा मॉडल निर्माण कार्यक्रम नवाचार, टीमवर्क और राष्ट्रीय गौरव का एक जीवंत प्रदर्शन बन गया। शिक्षकों और कर्मचारियों ने युवा प्रतिभागियों को मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देने के लिए हाथ मिलाया, जिससे यह आयोजन न केवल एक प्रतियोगिता रहा, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के महत्व और गरिमा के बारे में एक यादगार सीखने का अनुभव भी बना। मालदा डिवीजन की पहल ने 2025 अभियान की शुरुआत को मजबूती से चिह्नित किया, जो प्रत्येक भारतीय के तिरंगे के साथ गहरे जुड़ाव को और मजबूत करता है। आने वाले दिनों में डिवीजन भर में राष्ट्रीय गौरव और एकता के संदेश को और बढ़ाने के लिए ऐसी और गतिविधियों की योजना बनाई गई है।

हावड़ा डिवीजन में स्वच्छता जागरूकता अभियान आयोजित

कोलकाता, 04 अगस्त, 2025

78वें स्वतंत्रता दिवस की तैयारियों के तहत चल रहे स्वच्छता अभियान के हिस्से के रूप में, हावड़ा डिवीजन, पूर्वी रेलवे ने 4 अगस्त 2025 को स्वच्छता जागरूकता की एक श्रृंखला आयोजित की। इन गतिविधियों का आयोजन हावड़ा के डिवीजनल रेलवे मैनेजर श्री संजीव कुमार के निर्देशन में किया गया, जिसका उद्देश्य रेलवे परिसरों में स्वच्छता के प्रति जनता की जिम्मेदारी को और मजबूत करना था। डिवीजन के विभिन्न स्टेशनों — जैसे हावड़ा, मगरा, पाकुड़, बर्द्धमान, कमरकुंडु, आजimganj, खनयान, रामपुरहाट, श्रीरामपुर, कटवा और बंडेल — पर यात्रियों को स्वच्छता शपथ दिलाई गई, जिसमें उन्हें ट्रेनों के अंदर और बाहर स्वच्छता बनाए रखने और स्वच्छता प्रयासों में सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

पेज तीन का शेष

डुगडुगी बजते ही बिना कुछ सोचे-कहे तीर-धनुष उठाकर सभी...

शिबू की चलती थी समानांतर सरकार, होते थे मंत्री : झारखंड अलग राज्य आंदोलन को लेकर उन दिनों सरकार के खिलाफ उनकी समानांतर सरकार भी चलती थी. जिसमें वह खुद मुख्यमंत्री की रोल पर रहते थे जबकि गांडेय के उनके सहयोगी बसंत पाठक गृह एवं रक्षा मंत्री हुआ करते थे. जामताड़ा के झगरू पंडित कृषि मंत्री टुंडी के पुरनाडीह निवासी शिक्षक राजेंद्र प्रसाद तिवारी शिक्षा मंत्री के अलावा कीनू मुर्मू खामोशी मुर्मू हरिराम आदि कई अन्य लोग भी कैबिनेट के मिनिस्टर हुआ करते थे. उनकी कैबिनेट की बैठक बलमा स्थित एक घर में होती थी, जिसे कैबिनेट आश्रम कहा जाता था. इसी कैबिनेट के फैसले के तहत महाजनों द्वारा स्थानीय लोगों की जमीन जो आने-पोने दामों पर या किसी तरह दारू शराब पिलाकर लिखवा लिया गया था, उस पर कब्जा कर उन जमीनों पर सामूहिक खेती की जाने लगी, उसकी उपज उसमें काम करने वाले लोगों के बीच बराबर-बराबर बांट दिया जाता था. धीरे-धीरे महाजनों ने भी अपना बोरिया बिस्तर समेट कर क्षेत्र से भागने में ही भलाई समझी. यह सभी कार्रवाई उस समय शिबू सोरेन भूमिगत रहकर करते थे.

शिबू के निधन पर जताया दुःख : सोमवार को शिबू सोरेन के निधन पर टुंडी विधायक मथुरा प्रसाद महतो, टुंडी विधानसभा के झामुमो नेता रतिलाल टुडू, टुंडी प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष इंद्रलाल बास्की,झामुमो अध्यक्ष फुलचंद किस्कू, सचिव रसिद अंसारी, कामेश्वर सिंह,छोटू अंसारी, आदि ने दुःख जताया है.

मंथन

जनजातीय जनचेतना के प्रकाश स्तंभ का अवसान

झारखंड की धरती ने अपने एक महान बेटे और युगपुरुष को खो दिया है. दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन की खबर केवल एक राजनेता के जाने की सूचना नहीं है, बल्कि यह उस जनजातीय चेतना के अवसान की सूचना है, जिसने आदिवासी अस्मिता, अधिकार और आत्मसम्मान के लिए दशकों तक संघर्ष किया. गुरुजी के अवसान की खबर देते हुए झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का यह कथन –आज मैं शून्य हो गया हूं – केवल एक पुत्र की पीड़ा नहीं है, बल्कि पूरे झारखंड की आत्मा की वेदना है. दिशोम गुरु शिबू सोरेन का जीवन किसी साधारण राजनेता का जीवन नहीं था. वे पूरे आदिवासी समाज की आवाज बने, जब व्यवस्था मौन थी. जब देश में विकास की दौड़ में जनजातीय समाज की पहचान धुंधली पड़ती जा रही थी, तब दिशोम गुरु ने जंगल, जमीन और जल के अधिकार की लड़ाई को राष्ट्रीय विमर्श में स्थापित किया. उन्होंने अपनी राजनीति को सत्ता का साधन नहीं, संघर्ष का माध्यम माना. यही कारण है कि वे झारखंड मुक्ति मोर्चा जैसे आंदोलनकारी संगठन के नेतृत्वकर्ता बने, जिसने अंततः झारखंड राज्य निर्माण की नींव रखी. अलग झारखंड राज्य लेकर दिखाया भी. तीन बार मुख्यमंत्री का पद संभालने वाले शिबू सोरेन का शासनकाल भले ही हरबार अल्पकालिक रहा हो, लेकिन उनका प्रभाव दीर्घकालिक और गहरा था. उनका राजनीतिक दर्शन सामाजिक न्याय और हाशिए पर खड़े लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने पर केंद्रित था. उनके भीतर एक संत, एक योद्धा और एक किसान बसता था. वे किसी बड़ी राजनीतिक वंश परंपरा से नहीं आए थे, बल्कि उन्होंने खेत-खलिहानों और आंदोलनों की मिट्टी से अपना नेतृत्व उगाया. स्वाभाविक है कि उनका निधन न केवल झारखंड के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है. वे भारतीय राजनीति में उस पीढ़ी के प्रतिनिधि थे, जिन्होंने लोकतंत्र की नींव को जमीनी स्तर तक मजबूत किया. उनके जाने से एक ऐसा शून्य उत्पन्न हुआ है, जिसे केवल संवैधानिक पदों से नहीं, जनसमूहों के संघर्षों और उनके साथ की आत्मीयता से ही भरा जा सकता है. शिबू सोरेन का जीवन अनेक विरोधाभासों से भी भरा रहा, लेकिन इन सबके बीच उनकी जनप्रतिबद्धता कभी डिगी नहीं. उनकी नीतियों और विचारों ने आदिवासी समाज को न केवल राजनीतिक चेतना दी, बल्कि सामाजिक जागरूकता की नई दिशा भी दी. वे अपने समर्थकों के लिए 'गुरुजी' थे – मार्गदर्शक, संरक्षक और प्रेरणास्त्रोत. विषम से विषम परिस्थिति में भी कभी हार न मानने वाले दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने महाजनी व्यवस्था के खिलाफ राजनीति शुरू की थी, और हमेशा ऐसे समाज के खिलाफ रहे, जो गरीबों-वंचितों की हकमारी करता है. गुरुजी हमेशा आम लोगों के बीच खड़े मिलते थे. उनकी राजनीति में किसी तरह का छल-कपट या अहंकार नहीं था. अपने हजारों करीबियों को गुरुजी नाम से पहचानते थे. हमेशा सबके साथ आत्मीयता से मिलते थे. आज जब झारखंड सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों से जूझ रहा है, तब दिशोम गुरु शिबू सोरेन के विचार और संघर्ष की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है. उनकी विरासत केवल उनके पुत्र हेमंत सोरेन के राजनीतिक नेतृत्व तक सीमित नहीं है, बल्कि वह हर उस युवा में जीवित है, जो समाज के कमजोर वर्गों के लिए न्याय और अधिकार की बात करता है. देश और राज्य के लिए यह गहरे शोक का क्षण है, लेकिन साथ ही यह एक संकल्प लेने का भी समय है – कि दिशोम गुरु का सपना अधूरा न रह जाए. उनके दिखाए रास्ते पर चलकर झारखंड को एक समावेशी, न्यायप्रिय और आत्मनिर्भर समाज की दिशा में ले जाया जाए.

(नमन दिशोम गुरु... आप हमारे विचारों में जीवित रहेंगे, हमारी लड़ाइयों में प्रकट होंगे और हमारी विजय में मार्गदर्शन करेंगे.)

शिबू सोरेनः जल-जंगल-जमीन का महानायक

बृजेंद्र दुबे

झारखंड की राजनीति और सामाजिक चेतना को गढ़ने वाले युगपुरुष, दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने 81 वर्ष की आयु में अंतिम सांस ली. सोमवार, 4 अगस्त 2025 की सुबह 8:56 बजे उन्होंने दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में दुनिया को अलविदा कह दिया.

उनके निधन की खबर झारखंड ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए एक भावनात्मक क्षण बन गई. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, जो उनके पुत्र भी हैं, ने ट्वीट कर अपने पिता के निधन की पुष्टि की. उन्होंने लिखा, आदरणीय दिशोम गुरुजी हम सभी को छोड़कर चले गए हैं. आज मैं शून्य हो गया हूं. इस एक वाक्य में झारखंड की राजनीति, सामाजिक चेतना और आदिवासी नेतृत्व की अपूरणीय क्षति की अनुभूति होती है. शिबू सोरेन अपने पीछे एक बड़ा और राजनीतिक रूप से सक्रिय परिवार छोड़ गए हैं. उनकी पत्नी रूपी सोरेन और चार बच्चे तीन बेटे और एक बेटी हैं. उनके सबसे बड़े बेटे दुर्गा सोरेन, जो झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के सक्रिय नेता थे, वर्ष 2009 में रहस्यमय परिस्थितियों में मृत पाए गए थे. उनकी पत्नी सीता सोरेन हैं और वो तीन बेटियों की मां हैं.

दूसरे नंबर पर हैं बेटी अंजलि सोरेन, जो सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं. तीसरे नंबर पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन हैं, जो झारखंड की राजनीति में वर्तमान समय में सबसे प्रभावशाली आदिवासी चेहरा हैं. सबसे छोटे बेटे बसंत सोरेन, झामुमो की युवा इकाई के प्रमुख हैं और संगठनात्मक स्तर पर सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं. हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन भी राजनीतिक रूप से सक्रिय हैं. वे गांडेय विधानसभा सीट से विधायक हैं और एक शिक्षित नेता के रूप में उनकी छवि बनी है. कल्पना बीटेक और एमबीए की डिग्रीधारी हैं और हेमंत सोरेन के साथ मिलकर जनसेवा के कार्यों में योगदान दे रही हैं. दंपती के दो बेटे निखिल और अंश हैं.

शिबू सोरेन का जन्म 11 जनवरी 1944 को वर्तमान झारखंड के रामगढ़ जिले (तब बिहार) के एक छोटे से गांव में हुआ था. वे संथाल जनजाति से आते थे और आदिवासी परंपराओं में पले-बढ़े. उनका जीवन प्रारंभ से ही संघर्षों से भरा रहा. 18 वर्ष की आयु में उन्होंने संथाल नवयुवक संघ की स्थापना की, जो आदिवासी युवाओं को सामाजिक जागरूकता और संगठित संघर्ष की दिशा में प्रेरित करने वाला संगठन था. वर्ष 1972 में उन्होंने झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की स्थापना की. उनके साथ इस ऐतिहासिक पहल में दो और बड़े नेता एके रॉय और बिनोद बिहारी महतो भी थे. यही संगठन आगे चलकर झारखंड राज्य निर्माण आंदोलन की अगुआई करने वाला सबसे बड़ा मंच बना.

शिबू सोरेन की राजनीति केवल चुनावी सीमाओं तक सीमित नहीं रही, वह आंदोलन की कोख से जन्मी राजनीति थी. 1980 से 1984 और फिर 1989 से 1999 तक वे दुमका से लोकसभा सांसद रहे. इसके बाद 2002 से 2019 तक उन्होंने संसद में लगातार झारखंड की आवाज उठाई. उनके नेतृत्व और आवाज ने आदिवासी समाज के जल, जंगल, जमीन के अधिकार को राष्ट्रीय राजनीति में पहचान दिलाई.

शिबू सोरेन ने तीन बार झारखंड के मुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारी संभाली. पहली बार वे 2 मार्च 2005 को मुख्यमंत्री बने, लेकिन यह कार्यकाल केवल 10 दिनों का रहा और 12 मार्च को उन्हें इस्तीफा देना पड़ा. इसके बाद वर्ष 2008-09 और 2009-10 में उन्होंने दो बार फिर मुख्यमंत्री पद संभाला. उनके कार्यकाल भले ही लंबे न रहे हों, लेकिन उन्होंने राज्य में आदिवासी हितों को प्राथमिकता देने की स्पष्ट दिशा दी. इसके अलावा, उन्होंने तीन बार केंद्र में कोयला मंत्री के रूप में भी सेवाएं दीं—2004, 2004-05 और 2005-06 के बीच. यह तथ्य उन्हें न केवल एक क्षेत्रीय नेता, बल्कि एक राष्ट्रीय राजनेता के रूप में स्थापित करता है.

शिबू सोरेन केवल एक राजनेता नहीं थे. वे आंदोलनकारी, समाज सुधारक और जनजातीय अस्मिता के रक्षक थे. उन्होंने हमेशा आदिवासी संस्कृति, भाषा, परंपरा और अस्तित्व को बचाने की लड़ाई लड़ी. उनकी भूमिका जनपक्षीय नेता की रही.

झारखंड के अलग राज्य बनने की नींव जिन हाथों ने रखी, उनमें शिबू सोरेन अग्रिम पंक्ति में थे. उन्होंने 'अलग राज्य आंदोलन' को गांव-गांव तक पहुंचाया, आदिवासी चेतना को राजनीतिक स्वरूप दिया और जन-आंदोलन को सत्ता के गलियारों तक पहुंचाया. यही प्रयास अंततः वर्ष 2000 में झारखंड को बिहार से अलग एक स्वतंत्र राज्य का दर्जा दिलाने में सफल हुआ. उनकी भूमिका को केवल एक राजनीतिक उपलब्धि के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति के रूप में देखा जाना चाहिए. शिबू सोरेन ने झारखंड के करोड़ों लोगों को यह अहसास दिलाया कि वे भी इस देश के बराबरी के नागरिक हैं और उनका अधिकार किसी से कम नहीं है.

शिबू सोरेन केवल एक राजनेता नहीं थे. वे एक आंदोलनकारी, समाज-सुधारक और जनजातीय अस्मिता के रक्षक थे. उन्होंने हमेशा आदिवासी संस्कृति, भाषा, परंपरा और अस्तित्व को बचाने की लड़ाई लड़ी. चाहे वह भूमि अधिग्रहण का मामला हो या वन अधिकार कानून का सवाल—शिबू सोरेन की भूमिका हमेशा स्पष्ट और जनपक्षीय रही.

उन्होंने झारखंड के हर तबके, खासकर वंचित और हाशिए पर खड़े समाज को राजनीतिक जागरूकता दी. उनके जीवन से यह सिखने को मिलता है कि संघर्ष ही परिवर्तन की असली शक्ति है.

शिबू सोरेन के निधन से झारखंड ने न केवल अपना एक वरिष्ठ नेता खोया है, बल्कि वह आत्मा खो दी है जिसने इस राज्य को आकार दिया, उसे चेतना दी और उसे एक पहचान दी. दिशोम गुरु अब नहीं हैं, लेकिन उनके विचार, उनके संघर्ष और उनके दिखाए रास्ते आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बने रहेंगे. वे एक व्यक्ति नहीं, एक विचार थे. और विचार कभी मरते नहीं.

आज का इतिहास

1775: बंगाल नवाब के अधिकारी नंदकुमार को कलकत्ता में फांसी दी गई.
1914: अमेरिका में पहली इलेक्ट्रिक ट्रैफिक लाइट लगाई गई.
1914: क्यूबा, उरुग्वे, मैक्सिको व अर्जेंटीना ने प्रथम विश्व युद्ध में तटस्थ रहने की घोषणा की.
1923: हेनरी सुलिवान इंग्लिश चैनल पार करने वाले पहले अमेरिकी तैराक बने.
1945: अमेरिकी हवाई जहाज ने जापान के हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराया.
1962: मशहूर हॉलीवुड अभिनेत्री मर्लिन मुनरो अपने लॉस एंजेलिस स्थित आवास पर मृत पाई गईं.
1963: रूस ब्रिटेन और अमेरिका ने मॉस्को में परमाणु परीक्षण निषेध सन्धि की.
1991: न्यायमूर्ति लीला सेठ दिल्ली हाईकोर्ट में पहली महिला न्यायधीश बनीं.
2011: नासा के वैज्ञानिकों ने मंगल ग्रह पर पानी होने का साइंस पत्रिका में दावा किया.

लक्ष्य के पास पहुंच कर जल्दबाजी कभी न दिखाएं

चिंतन

सुंदरबन के निवासियों पर हर समय जंगली जानवरों का खतरा बना रहता था. यही वजह थी की वे सब पेड़ों पर तेजी से चढ़ने-उतरने की ट्रेनिंग लिया करते थे. ट्रेनिंग एक बुजुर्ग देते थे , जो अपने समय में इस कला के महारथी थे. सब उन्हें बाबा-बाबा कहते थे. बाबा युवाओं के एक समूह को पेड़ों पर चढ़ने-उतरने की बारीकियां सिखा रहे थे. उनकी ट्रेनिंग का आखिरी दिन था.

बाबा बोले, आपकी ट्रेनिंग का आखिरी दिन है, मैं चाहता हूं, आप सब एक-एक बार इस चिकने और लंबे पेड़ पर चढ़ – उतर कर दिखाएं. पहले युवक ने चढ़ना शुरू किया और देखते -देखते पेड़ की सबसे ऊंची शाखा पर पहुंच गया. फिर उसने उतरना शुरू किया. जब वो आधा उतर आया तो बाबा बोले, सावधान, संभल कर. आराम से उतरो जल्दबाजी नहीं. युवक सावधानी से नीचे उतर आया. बाकी के युवक भी पेड़ पर चढ़े और उतरे, और हर बार बाबा ने आधा उतर आने के बाद ही उन्हें सावधान रहने को कहा. ये बात सबको अजीब लगी, और एक ने पूछा, बाबा, हमें एक बात समझ में नहीं आई , पेड़ का सबसे कठिन हिस्सा तो ऊपर वाला था, आपने तब सावधान होने को नहीं कहा, पर जब हम आधा पेड़ उतर आए.और बाकी उतरना आसान था तभी आपने हमें सावधान क्यों किया? बाबा बोले, बेटे! सब जानते हैं कि ऊपर का हिस्सा सबसे कठिन होता है, इसलिए वहां हम खुद ही सतर्क रहते हैं और सावधानी रखते हैं. लेकिन जब हम लक्ष्य के समीप पहुंचने लगते हैं तो वह हमें बहुत ही सरल लगने लगता है. हम जोश में होते हैं और अति उत्साह में आ जाते हैं. इसी समय सबसे अधिक गलती होती है. यही कारण है कि मैंने तुम लोगों को आधा पेड़ उतर आने के बाद सावधान किया ताकि तुम मंजिल के निकट आकर गलती न कर बैठो! युवक बाबा की बात समझ गए, उन्हें बहुत बड़ी सीख मिल चुकी थी.

मित्रों, सफलता के लिए लक्ष्य बनाना बहुत ही जरूरी है, लेकिन, मंजिल को सामने पाएं तो जल्दबाजी न करें और पूरे धैर्य से कदम बढ़ाएं. बहुत से लोग लक्ष्य के निकट पहुंच कर धैर्य खो देते हैं और गलतियां कर बैठते हैं जिससे लक्ष्य से चूक जाते हैं. इसलिए लक्ष्य के आखिरी पड़ाव पर मत चूकिए, लक्ष्य पाकर ही दम लीजिए.

इंडिया पर ट्रेंडिंग

1. #ShibuSoren
2. शिबू सोरेन
3. #MondayMotivation
4. #DefeatNegativity
5. #Jharkhand
6. झारखंड आंदोलन
7. गंगाराम अस्पताल
8. #HemantSoren
9. Saint Dr MSG
10. हेमंत सोरेन

बहुरंग

'सन ऑफ सरदार 2' की धीमी शुरुआत के बाद कमाई में मामूली सुधार

- 'सन ऑफ सरदार 2' ने अपनी ओपनिंग डे पर 7 .25 करोड़ रुपये की कमाई की

अजय देवगन की चर्चित फिल्म 'सन ऑफ सरदार 2' आखिरकार 01 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है. हालांकि रिलीज से पहले फिल्म को लेकर काफी चर्चा थी और दर्शकों में उत्सुकता भी दिखी, लेकिन रिलीज के बाद यह उम्मीदों पर पूरी तरह खरी नहीं उतर पाई. कॉमेडी और एक्शन से भरपूर इस सीक्वल को समीक्षकों से मिली-जुली प्रतिक्रिया मिली है. जहां कुछ ने फिल्म के मसाला एंटरटेनमेंट की तारीफ की, वहीं कई लोगों को इसकी स्क्रिप्ट और ह्यूमर प्रभावित नहीं कर सका. बॉक्स ऑफिस पर भी फिल्म ने अब तक औसत प्रदर्शन ही किया है.

खासकर तीसरे दिन की कमाई पर नज़र डालें तो यह काफी हद तक फिल्म की लोकप्रियता का संकेत देती है. अब 'सन ऑफ सरदार 2' की तीसरे दिन की कमाई सामने आ गई है. बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के अनुसार, 'सन ऑफ सरदार 2' ने अपनी ओपनिंग डे पर 7.25 करोड़ रुपये की कमाई करते हुए एक ठीक-ठाक शुरुआत की थी. दूसरे दिन यानी शनिवार को फिल्म की कमाई में हल्की बढ़त देखने को मिली और इसने 8.25 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया. वहीं रविवार को छुट्टी का फायदा उठाते हुए फिल्म ने 9.25 करोड़ रुपये का बिजनेस किया. इस तरह रिलीज के पहले वीकेंड में 'सन ऑफ सरदार 2' का कुल कलेक्शन 24.75 करोड़ रुपये पहुंच चुका है.

बताया जा रहा है कि फिल्म का कुल बजट करीब 80 करोड़ रुपये है, ऐसे में इसे हिट होने के लिए अभी लंबा रास्ता तय करना बाकी है. 'सन ऑफ सरदार 2' में अजय देवगन पहली बार मृणाल ठाकुर के साथ स्क्रीन शेयर कर रहे हैं. फिल्म में मृणाल राबिया का किरदार निभा रही हैं और अजय के साथ उनकी जोड़ी को दर्शकों का अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है. फिल्म का निर्देशन विजय कुमार अरोड़ा ने किया है, जिन्होंने इसे एक मसाला एंटरटेनर के तौर पर पेश किया है. कास्ट की बात करें तो फिल्म में नीरू बाजवा, रोशनी वालिया, कुब्रा सैत, दीपक डोबरियाल, साहिल मेहता, चंकी पांडे और रवि किशन जैसे कई दमदार कलाकार भी अहम भूमिकाओं में नज़र आ रहे हैं.

'सारे जहां से अच्छा' का ट्रेलर रिलीज, देशभक्ति के रंग में रंगे प्रतीक

बॉलीवुड अभिनेता प्रतीक गांधी पिछली बार फिल्म 'फुले' में पत्रलेखा के साथ नजर आए थे. जहां उनके अभिनय की खूब तारीफ हुई, वहीं फिल्म बॉक्स ऑफिस पर खास कमाल नहीं दिखा पाई. अब प्रतीक जल्द ही वेब सीरीज 'सारे जहां से अच्छा' में दिखाई देंगे, जिसका निर्देशन गौरव शुक्ला ने किया है. इस सीरीज को लेकर दर्शकों में काफी उत्सुकता बनी हुई है. इस तरह से अब इंतजार खत्म हुआ, 'सारे जहां से अच्छा' का ट्रेलर आखिरकार रिलीज कर दिया गया है. 'सारे जहां से अच्छा' का प्रीमियर 13 अगस्त, 2025 को नेटफ्लिक्स पर होने जा रहा है. यह वेब सीरीज 1970 के दशक की राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल भरे दौर पर आधारित है. कहानी में जासूसी, बलिदान और देशभक्ति के भाव गहराई से पिरोए गए हैं. फिल्म में प्रतीक गांधी एक खुफिया एजेंट विष्णु शंकर की भूमिका निभा रहे हैं, जो अपने फर्ज और देश के लिए हर जोखिम उठाने को तैयार है. सीरीज में प्रतीक के साथ-साथ सनी हिंदुजा, सुहैल नैय्यर, कृतिका कामरा, तिलोत्तमा शोम, रजत कपूर और अनूप सोनी जैसे दमदार कलाकार भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे.

एआई से बदला गया 'रांझणा' का क्लाइमेक्स अभिनेता धनुष और सोनम कपूर आएंगे नजर

साउथ अभिनेता धनुष ने साल 2013 में फिल्म 'रांझणा' के जरिए हिंदी सिनेमा में कदम रखा था. इस फिल्म में उनके साथ सोनम कपूर नजर आई थीं और दोनों की केमिस्ट्री को दर्शकों ने खूब सराहा. फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर बेहतरीन प्रदर्शन किया और इसके गाने, संवाद और कलाकारों की अदाकारी आज भी लोगों के दिलों में बसे हुए हैं.

'रांझणा' को आज भी बॉलीवुड की कल्ट क्लासिक्स में शुमार किया जाता है. हाल ही में इस फिल्म को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तकनीक की मदद से एक नए क्लाइमेक्स के साथ दोबारा रिलीज़ किया गया है, जिससे दर्शकों को एक ताज़ा और अलग अनुभव मिला है.

फिल्म 'रांझणा' के ओरिजिनल क्लाइमैक्स में कुंदन की मौत एक भावनात्मक मोड़ लेकर आती है, जो दर्शकों के दिल को छू जाती है. लेकिन हाल ही में एआई तकनीक की मदद से फिल्म का अंत बदल दिया गया है, जिसमें दिखाया गया है कि कुंदन मरता नहीं, बल्कि एक चमत्कारी रूप से फिर से जीवित हो जाता है. इस नए क्लाइमेक्स को देखकर अभिनेता धनुष ने अपनी नाखुशी जाहिर की है.

उन्होंने सोशल मीडिया पर एक भावुक पोस्ट में लिखा, 'रांझणा' के एआई-बदले हुए क्लाइमेक्स को देखकर बेहद दुख हुआ. यह वह फिल्म नहीं है जिसके लिए मैंने 12 साल पहले दिल से काम किया था. इस बदलाव से फिल्म की आत्मा ही खो गई है. सबसे ज़्यादा तकलीफ़ इस बात की है कि मेरे विरोध के बावजूद यह बदलाव लागू कर दिया गया.₹ धनुष की इस प्रतिक्रिया से साफ है कि उन्होंने इस क्लासिक फिल्म को सिर्फ एक किरदार की तरह नहीं, बल्कि एक कलाकार के जुनून के तौर पर जिया था.

धनुष ने अपनी नाराज़गी जताते हुए आगे लिखा, किसी फिल्म की मूल थीम, उसकी भावनात्मक गहराई या किसी खास दृश्य में एआई से छेड़छाड़ करना, उस पूरी कलाकृति की आत्मा को खत्म करने जैसा है. यह न केवल रचनात्मकता का अपमान है, बल्कि उस फिल्म की विरासत के लिए भी एक गंभीर खतरा बन सकता है. मैं उम्मीद करता हूं कि भविष्य में इस तरह की अनुचित तकनीकी हस्तक्षेप को रोकने के लिए सख्त नियम और कानून बनाए जाएंगे. उनका यह बयान सिर्फ 'रांझणा' से जुड़ा विरोध नहीं, बल्कि तेजी से बदलती तकनीक और सिनेमा के भविष्य पर एक गहरी चिंता भी जाहिर करता है.

बॉक्स ऑफिस पर नहीं चला 'धड़क 2' का जादू

इस समय सिनेमाघरों में कई फिल्में रिलीज़ हो चुकी हैं, जो दर्शकों का भरपूर मनोरंजन कर रही हैं. इन्हीं में से एक है 'धड़क 2', जिसमें सिद्धांत चतुर्वेदी और तृप्ति डिमरी की जोड़ी नजर आ रही है. फिल्म की कहानी और दोनों सितारों की केमिस्ट्री को दर्शकों ने सराहा है, लेकिन इसके बावजूद 'धड़क 2' बॉक्स ऑफिस पर वैसी कमाई नहीं कर पा रही, जैसी उम्मीद की गई थी. अब फिल्म के तीसरे दिन की कमाई के आंकड़े सामने आ चुके हैं, जिससे इसके शुरुआती प्रदर्शन की तस्वीर और साफ हो गई है. बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क की रिपोर्ट के अनुसार, 'धड़क 2' ने रिलीज के तीसरे दिन यानी रविवार को 4.25 करोड़ रुपये की कमाई की. इसके साथ ही फिल्म का कुल कलेक्शन अब 11.50 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है. फिल्म ने पहले दिन 3.5 करोड़ रुपये की औसत ओपनिंग ली थी, जबकि दूसरे दिन 3.75 करोड़ रुपये का बिजनेस किया. गौरतलब है कि इस फिल्म का बजट लगभग 60 करोड़ रुपये बताया जा रहा है, ऐसे में इसे हिट होने के लिए अभी लंबा सफर तय करना बाकी है. 'धड़क 2' का निर्देशन शाजिया इकबाल ने किया है, जबकि फिल्म के निर्माता हैं करण जौहर. यह एक रोमांटिक ड्रामा है जिसमें तृप्ति डिमरी ने विधि और सिद्धांत चतुर्वेदी ने नीलेश का किरदार निभाया है. दोनों के बीच के इमोशनल और इंटेंस सीन्स दर्शकों को भावनात्मक रूप से काफी प्रभावित कर रहे हैं. फिल्म में आशीष चौधरी, विपिन शर्मा, मंजिरी पुपला, दीक्षा जोशी, अशवंत लोधी, अमित जाट, प्रियांक तिवारी, मयंक खन्ना और आदित्य ठाकरे जैसे कलाकार भी अहम भूमिकाओं में नजर आ रहे हैं.

आचार्य प्रणव मिश्रा
मोबाइल नंबर
8210075897

मेष : परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. पर प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए. कल का परिश्रम आज लाभ देगा. आलस्य का त्याग करें. कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा. दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा. शुभांक-2-5-7

वृष : जोखिम से दूर रहना ही बुदि्धमानी होगी. दिमाग में निर्मूल तर्क-कुतर्क पैदा होंगे. महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा. आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी. कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी. बाहरी व अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा. शुभांक-5-6-7

मिथुन : परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी. नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें. लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे. समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा. शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे. शुभांक-5-6-9

कर्क : किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा. बुदि्घ और धन का दुरूपयोग न करें व्यर्थ के आडम्बरों से बचें. अपनी परिसंपत्ति को संभालकर रखें. परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता हैं. मानसिक तनाव में बढ़ोतरी होगी. बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी. शुभांक-1-6-7

सिंह : भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है. शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है. स्वास्थ्य मध्यम रहेगा. जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा. व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी. कार्यसिदि्घ होने में देर नहीं लगेगी. आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा. ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा. शुभांक-2-5-6

कन्या : शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी. परिवार में कोई मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी. स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं. मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा. कारोबारी काम में प्रगति रहेगी. लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे. शुभांक-3-8-7

तुला : जमीन जायदाद का लाभ भी हो सकता है. आवास, मकान तथा वाहन की सुविधाएं मिलेंगी. कर्ज तथा रोगों से मुक्ति भी संभव है. मान-सम्मान में वृदि्घ होगी. अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे. रुपए पैसों की सुविधा मिल जाएगी. कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे. शुभांक-2-3-7

वृश्चिक : स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा. यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा. मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. बनते हुए कार्यों में बाधा आएगी. धन से लाभ होने लगेगा. घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी. शुभांक-2-6-8

धनु : बढ़ते घाटे से कुछ राहत मिलने लगेगी. व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी. नौकरी में पदोन्नति की संभावना है. मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है. ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा. धार्मिक स्थलों की यात्रा का योग बना है. शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे. शुभांक-4-8-9

मकर : संतोष रखने से सफलता मिलेगी. नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी. शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी. मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा. कार्यक्षेत्र में तनाव पैदा होगा. खान-पान में सावधानी रखें. आगे बढने के अवसर लाभकारी सिद्‌घ हो रहे है. शुभांक-5-6-8

कुंभ : महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा. आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी. कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी. बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा. लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे. मान-सम्मान बढ़ेगा. शुभांक-6-8-9

मीन : शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे. स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी. बुरी संगति से बचें. नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें. अपनों का सहयोग प्राप्त होगा. मान-सम्मान बढ़ेगा. धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी. भगवान शिव का ध्यान करें. शुभांक-3-6-8

ये तस्वीर इंसानियत और राजनीति को नए सिरे से परिभाषित करती है !

आनंद सिंह

> प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एक साथ हैं. मुख्यमंत्री के पिता का निधन हो गया, इसलिए देश के प्रधानमंत्री मिलने आए, सांत्वना देने आए. मिलने के पहले उन्होंने एक संदेश भी लिखा-एक्स पर. उन्होंने लिखाः शिबू सोरेन एक जमीनी नेता थे, जिन्होंने जनता के प्रति अटूट समर्पण के साथ सार्वजनिक जीवन में ऊंचाइयों को छुआ

जीवन में दो सत्य हैं. तीसरा कुछ भी नहीं. प्रथम सत्य है जीवन. अंतिम सत्य है मृत्यु. मृत्यु को आप जिस नाम से भी पुकारें, चलेगा. आप उसे प्रयाण कहें, महाप्रयाण कहें, अलविदा कहें, जीवन का अंत कहें, जो मन में आए कहें. प्रथम और अंतिम सत्य होकर ही रहता है. जिसका जन्म हुआ है, उसका मरण तो तय ही है. इसमें कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो किसी भी सीमा में नहीं बंधते. वह सीमाओं से परे होते हैं. वह लालसाओं, लिप्साओं, अहम और नश्वर दुनिया से सर्वथा पृथक और भिन्न होते हैं.

कई नेता सार्वकालिक, सार्वदेशिक और सर्वदलीय हो जाते हैं. दिशोम गुरु शिबू सोरेन भी उन्हीं में से एक हैं. जो झारखंडी हैं, उन्हें पता है कि वह इस प्रदेश के सबसे दिग्गज नेता थे. प्रदेशवासी ही नहीं, इस धराधाम पर जहां भी झारखंडी बसते हैं, वो दुखी हैं.

अब इस तस्वीर को देखें. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एक साथ हैं. मुख्यमंत्री के पिता का निधन हो गया, इसलिए देश के प्रधानमंत्री मिलने आए, सांत्वना देने आए. मिलने के पहले उन्होंने एक संदेश भी लिखा-एक्स पर. उन्होंने लिखाः शिबू सोरेन एक जमीनी नेता थे, जिन्होंने जनता के प्रति अटूट समर्पण के साथ सार्वजनिक जीवन में ऊंचाइयों को छुआ. वे आदिवासी समुदायों, गरीबों और वंचितों के सशक्तीकरण के लिए विशेष रूप से समर्पित थे. उनके निधन से दुख हुआ. मेरी संवेदनाएं उनके परिवार और प्रशंसकों के साथ हैं. झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से बात की और संवेदना व्यक्त की.

इसके बाद, जब वह सर गंगाराम अस्पताल से श्रद्धांजलि देकर लौटे, तब फिर एक संदेश ट्वीट किया जिसमें लिखा थाः झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की. दुख की इस घड़ी में उनके परिजनों से मिलकर अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं. उनका पूरा जीवन जनजातीय समाज के कल्याण के लिए समर्पित रहा, जिसके लिए वे सदैव याद किए जाएंगे.

इस तस्वीर को देखने के लिए क्यों कह रहा हूं? इसके अपने निहितार्थ हैं. बेशक झारखंड मुक्ति मोर्चा के अपने सिद्धांत हैं, भारतीय जनता पार्टी के अपने. बेशक चुनाव के दौरान दोनों दल एक-दूसरे पर आक्रमण करते रहे, क्योंकि यह राजनीति का लक्षण है. लेकिन, वही राजनीति हमें यह भी बताती है कि जब आत्मा देह त्याग देती है, तब सिर्फ एक ही धर्म बचता है- इंसानियत का. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उसी इंसानियत का परिचय दिया और हमारे मुख्यमंत्री उनसे गले मिल कर फफक-फफक कर रो पड़े. कल्पना कीजिए या फिर गौर से इस तस्वीर को देखिए, जिसमें एक प्रधानमंत्री के कंधे पर एक राज्य के मुख्यमंत्री का सिर है और वह (मुख्यमंत्री) रो रहा हो... प्रधानमंत्री की विचारधारा अलग है, मुख्यमंत्री की विचारधारा अलग है. लेकिन प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के बीच में एक किरदार ऐसा है, जो दोनों को मिलाने का काम करता है, बेशक हर चीज के उत्सर्ग के बाद. बेशक काया त्यागने के बाद. वह किरदार दिशोम गुरु शिबू सोरेन का ही है! राजनीति में बहुत सारी चीजें होती हैं. कुछ चीजें आपको अच्छी लग सकती हैं, कुछ खराब. लेकिन, कुछ मौके ऐसे आते हैं, जब राजनीति खुद को नए सिरे से परिभाषित करती है. नरेंद्र मोदी और हेमंत सोरेन का इस तरह मिलना, गले मिलना, रोना और मोदी जी का उनके कंधे पर थपकियां देकर सांत्वना देना....यह भी राजनीति का ही एक रूप है. टुच्ची मानसिकता वाले इसे इवेंट मैनेजमेंट करार दें, इससे पहले आप दिशोम गुरु को जरूर याद करें, क्योंकि झारखंड का असली नायक वही हैं, कोई और नहीं. उस महानायक को इवेंट मैनेजमेंट से कोई लेना-देना नहीं. वह अंतिम सत्य की राह पर जा चुके हैं. बस, यही एकमात्र सत्य है!!

शराब व शोषण के खिलाफ शिबू सोरेन का जनांदोलन

खूंटे में बांधकर पिटाई, रात्रि पाठशाला से शिक्षा का संदेश

शुभम संदेश। रांची

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और आदिवासी समाज के महानायक शिबू सोरेन ने न सिर्फ राजनीतिक मंचों पर बल्कि गांव-गांव में जनांदोलनों के जरिए आदिवासी अस्मिता और आत्मनिर्भरता की लड़ाई लड़ी. उन्होंने महाजनी प्रथा के खिलाफ जोरदार आंदोलन चलाया, जिससे उन्हें राष्ट्रीय पहचान मिली. लेकिन इसके साथ ही उन्होंने आदिवासी समाज को भीतर से खोखला कर रही शराब की लत को भी गरीबी और शोषण की जड़ बताया और उसके खिलाफ भी एक बड़ा सामाजिक अभियान शुरू किया. शिबू सोरेन का मानना था कि शराब, विशेषकर हड़िया और देशी दारू, आदिवासियों की कमजोरी बन चुकी है. इसी कमजोरी का फायदा महाजन, साहूकार और जमीन लुटेरे उठाते हैं. आदिवासी जब नशे में होते हैं, तो उनकी जमीन, जंगल और अधिकार छिन जाते हैं. इसी सोच के तहत उन्होंने शराबबंदी को लेकर एक सशक्त आंदोलन की शुरुआत की. झारखंड मुक्ति मोर्चा के पुराने नेताओं के अनुसार, धनबाद और कोयलांचल क्षेत्र में इस अभियान का जबरदस्त असर हुआ.

शराबबंदी आंदोलन के दौरान शिबू सोरेन ने अवैध शराब बनाने और बेचने वालों के खिलाफ सख्त रुख अपनाया. गांवों में यदि किसी को शराब बनाते या बेचते पकड़ा जाता, तो उसे गांव लाकर खुले मैदान में एक खूंटे से बांध दिया जाता. फिर सार्वजनिक रूप से उसकी फटकार और पिटाई की जाती. एक व्यक्ति उस पर पानी डालता रहता और दूसरा व्यक्ति उसकी पिटाई करता. हालांकि, इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता कि उसे गंभीर चोट या जान का खतरा न हो. इस तरह की सार्वजनिक चेतावनी के बाद ऐसे लोगों को दोबारा शराब कारोबार न करने की शपथ दिलाई जाती और छोड़ा जाता. इस सामाजिक आंदोलन की खास बात यह थी कि यह केवल दंडात्मक नहीं, बल्कि सुधारात्मक भी था. शराब छुड़वाने के साथ-साथ शिबू सोरेन ने शिक्षा के महत्व को भी समझाया.

2007 में बची थी दिशोम गुरु शिबू सोरेन की जान, आज भी इस हादसे को याद करते हैं लोग

शुभम संदेश। रांची

झारखंड की राजनीति के सबसे प्रभावशाली और करिश्माई नेताओं में शुमार दिशोम गुरु शिबू सोरेन का 81 वर्ष की उम्र में लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया. राज्य भर में शोक की लहर है. उनके पुत्र और राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोशल मीडिया के माध्यम से इस दुखद समाचार की पुष्टि की. शिबू सोरेन सिर्फ एक राजनेता नहीं थे, बल्कि एक आंदोलनकारी नेता, एक विचारधारा, और आदिवासियों की बुलंद आवाज थे. शिबू सोरेन पर एक बार जानलेवा हमला भी हो चुका है. 25 जून 2007 को जब उन्हें झारखंड के दुमका जेल ले जाया जा रहा था, तब उनके काफिले पर बम से हमला किया गया था. यह हमला सुनियोजित था, लेकिन सौभाग्यवश इसमें कोई हताहत नहीं हुआ. उस समय वह बाल-बाल बचे, लेकिन यह घटना उनके जीवन की असाधारण संघर्षपूर्ण यात्रा का एक और उदाहरण बन गई.

शिबू सोरेन का राजनीतिक जीवन भी काफी उथल-पुथल भरा रहा. 2004 में जब वह केंद्र की मनमोहन सिंह सरकार में कोयला मंत्री बने थे, तभी उनके खिलाफ 30 साल पुराने एक मामले में गैर-जमानती वारंट जारी हुआ. मामला था 1975 के चिरूडीह नरसंहार का, जिसके बाद उन्हें अंडरग्राउंड होना पड़ा. उस वक्त पूरे देश में राजनीतिक भूचाल आ गया . बता दें कि 1975 में दुमका जिले के चिरूडीह गांव में एक भीषण हिंसा हुई थी, जिसे "चिरूडीह नरसंहार" कहा गया। शिबू सोरेन का दावा था कि वह आदिवासियों की जमीन को वापस दिलाने के लिए आंदोलन चला रहे थे. उसी दौरान एक दिन आदिवासी तीर-कमान लेकर और महाजन पक्ष बंदूकें लेकर आमने-सामने आ गए. नतीजा हिंसक झड़प हुई, जिसमें 9 मुस्लिम समेत 11 लोग मारे गए. इस घटना के बाद शिबू सोरेन के खिलाफ हत्या का मुकदमा चला. लेकिन आदिवासी समाज में वह नायक बनकर उभरे. उनके समर्थन में जनसैलाब उमड़ पड़ा. अंततः कोर्ट से उन्हें राहत मिली और मनमोहन सिंह ने दोबारा उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल किया.

शिबू सोरेन को देश भर में आदिवासियों की आवाज के तौर पर जाना जाता है. उन्होंने 1970 के दशक में 'धनकटनी आंदोलन' और अन्य कई सामाजिक आंदोलनों का नेतृत्व किया. वे बिहार से अलग झारखंड राज्य की मांग को लेकर चले लंबे संघर्ष के प्रमुख चेहरे रहे. शिबू सोरेन ने झारखंड राज्य बनने के बाद तीन बार मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया 2005, 2008 और 2009 में. हालांकि उनकी सरकारें अधिक समय तक नहीं चलीं, लेकिन उनके कार्यकाल ने झारखंड की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना को गहराई से प्रभावित किया. शिबू सोरेन ने पहली बार 1977 में लोकसभा का चुनाव लड़ा था, लेकिन हार का सामना करना पड़ा था. उसके बाद हुए 1980 के लोकसभा चुनाव में उन्हें सफलता मिली. इसके बाद 1986, 1989, 1991, 1996 में भी वो चुनाव जीते थे. 2004 में वे दुमका से लोकसभा के लिए चुने गए थे. शिबू सोरेन का निधन केवल एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं है, बल्कि यह झारखंड आंदोलन के एक युग का अंत है. उन्होंने जिस तरह से आदिवासियों के हक के लिए अपनी पूरी जिंदगी समर्पित की, वह हमेशा प्रेरणा देता रहेगा. उनका जाना, आदिवासी समाज, झारखंड और भारतीय राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति है.

गुरुजी के विरोध के कारण वनांचल से झारखंड हुआ था नाम

शुभम संदेश। रांची

दिशोम गुरु शिबू सोरेन उर्फ गुरुजी अब नहीं रहे. लेकिन अलग झारखंड राज्य के निर्माण ही नहीं इसके नाम परिवर्तन में भी गुरुजी की अहम भूमिका थी. दो अगस्त 2000 को लोकसभा से बिहार पुनर्गठन विधेयक पारित हुआ था. अविभाजित बिहार के 18 जिलों को मिला कर केंद्र की तत्कालीन अटल बिहारी वाजपेयी सरकार इस नये राज्य का नाम वनांचल रखना चाहती थी. प्रारंभिक दस्तावेजों में अलग राज्य का नाम भी वनांचल ही दिया गया. लेकिन गुरुजी वनांचल नाम के सख्त विरोधी थे. वे अलग राज्य का नाम झारखंड रखने की जिद पर अड़ गए. लोकसभा में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने गुरुजी को अपने कमरे में बुलाया. बातचीत की. गुरुजी के तर्क से वाजपेयी व उनके कैबिनेट के अन्य मंत्री सहमत हुए. फिर केंद्र सरकार अलग राज्य का नाम झारखंड रखने पर सहमत हो गया. उसके बाद केंद्र सरकार ने वनांचल की जगह झारखंड नाम से अलग राज्य का निर्माण किया गया. इसी तरह उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों को काट कर बनाये गए नये राज्य का नाम भी उतराखंड रखा गया. जबकि प्रारंभ में भाजपा वनांचल और उतरांचल नाम से अलग राज्य के निर्माण को लेकर आंदोलन कर रही थी. इसके लिए भाजपा ने झारखंड में अपनी प्रदेश कमेटी का नाम भी वनांचल प्रदेश कमेटी दिया था.

राज्य के तीन बार मुख्यमंत्री रहे गुरुजी गुरुजी का जन्म 11 जनवरी 1941 को हुआ था. चार अगस्त 2025 को वह हम सबको छोड़ कर चले गए. अलग झारखंड राज्य निर्माण को लेकर आंदोलन करने के अलावा गुरुजी ने अपना प्रारंभिक जीवन सूदखोरों और महाजनों के विरुद्ध संघर्ष से शुरू किया था. जब उनके पिता सोबरन सोरेन की 1957 में हत्या कर दी गयी थी. इसके बाद गुरुजी ने झारखंड, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ के आदिवासी इलाकों में अपने आंदोलन को फैलाया. बाद में जल, जंगल और जमीन की लड़ाई को भी आगे बढ़ाया. जब अलग राज्य का निर्माण हुआ तो गुरुजी को भी झारखंड का तीन बार मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला.

संघर्ष व बलिदान के एक युग का अंत : प्रतुल शाहदेव

भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के असामयिक निधन को संघर्ष और बलिदान के एक युग का अंत बताया. प्रतुल ने कहा कि पूरा झारखंड आज शोक में डूबा है. गुरुजी ने अपने सामाजिक जीवन की शुरुवात महाजनी प्रथा और शराब के खिलाफ आंदोलन से की थी. एक गरीब परिवार के बेटा ने अपने संघर्ष के बदौलत अलग राज्य के आंदोलन में महती भूमिका निभाई और मुख्यमंत्री भी बने. गुरुजी आदिवासी अस्मिता के प्रतीक थे. उनका सादगी भरा जीवन अंत तक एक मिसाल रहा.प्रतुल ने कहा कि आने वाली पीढ़ियां को गुरुजी के जीवन के संघर्ष से प्रेरित होकर अनुसरण करना चाहिए.प्रतुल ने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी ने पुत्रधर्म बहुत अच्छी तरह से निभाया. ईश्वर उनको और उनके परिजनों को इस बड़े दुख को सहने की शक्ति दें.

दिशोम गुरु हमारे पिता तुल्य पथप्रदर्शक थे : विनोद पांडेय

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक और झारखंड के प्रणेता दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर झामुमो के केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता विनोद कुमार पांडेय ने गहरी संवेदना प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की है. विनोद कुमार पांडेय ने कहा कि झारखंड की आत्मा आज शोकाकुल है. दिशोम गुरु, हमारे पिता तुल्य पथप्रदर्शक थे. आदिवासी चेतना के प्रतीक आदरणीय शिबू सोरेन का निधन एक युग के अंत जैसा है. उन्होंने न केवल झामुमो की नींव रखी, बल्कि एक समतामूलक और स्वाभिमानी झारखंड की कल्पना को साकार किया. उन्होंने कहा कि आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं, तो यह केवल एक नेता का जाना नहीं, बल्कि हमारे संघर्ष की जीवित आत्मा का पृथ्वी से विलीन हो जाना है. वे हमारे लिए संगठनकर्ता, विचार पुरुष, मार्गदर्शक और अपनेपन का दूसरा नाम थे. उन्होंने हमें सिखाया कि राजनीति लोगों की सेवा का माध्यम है और समाज के अंतिम व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा सबसे बड़ा धर्म है. उनकी सादगी, सिद्धांतवाद और संघर्ष की भावना आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है. विनोद पांडेय ने कहा कि झामुमो परिवार उन्हें कभी भुला नहीं सकता. उनके अधूरे सपनों को पूरा करना ही अब हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है. झारखंड मुक्ति मोर्चा की ओर से हम उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं.

भावुक हुईं सीता सोरेन, बोलीं- बाबा घर के मुखिया नहीं, जीवन के प्रकाश थे

रांची । झारखंड आंदोलन के प्रणेता और दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन के बाद पूरे राज्य में शोक की लहर है. वहीं, शोकाकुल परिवार से उनकी बहू और भाजपा नेत्री सीता सोरेन ने गहरा दुख प्रकट किया है. उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि शिबू सोरेन केवल एक राजनीतिक हस्ती नहीं, बल्कि परिवार के लिए जीवनदायी शक्ति थे. सीता सोरेन ने कहा, बाबा सिर्फ हमारे घर के मुखिया नहीं थे वे हमारे जीवन के प्रकाश थे. हमारे अपने, हमारे मार्गदर्शक, और हमारे सबसे बड़े सहारे. आज जब वो हमारे बीच नहीं हैं, तो ऐसा लग रहा है जैसे एक पूरा युग समाप्त हो गया हो. उनके बिना ये घर वैसा नहीं रहेगा उनकी हंसी, उनका स्नेह, उनकी डांट तक, सब कुछ अब यादों में रह गया है. उन्होंने कहा कि झारखंड ने जहां एक महान सपूत को खोया है, वहीं हमने अपना गुरू, पिता और जीवनदाता खो दिया है. बाबा ने हमें जो मूल्य सिखाए, जो परंपराएं स्थापित कीं और जो सम्मान कमाया, हम उसे संजोकर रखेंगे. उनकी विरासत को आगे ले जाना अब हमारा धर्म है. अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, आपकी बड़ी बहू होने के नाते मेरा सिर गर्व से ऊंचा है, लेकिन दिल आज टूट गया है. आप हमेशा हमारे दिलों में रहेंगे, बाबा. आपकी यादें, आपकी बातें, आपकी छाया कभी मिट नहीं सकती. अंत में उन्होंने कहा, आपका आशीर्वाद हमारे जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है.

सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा : यह हिमालय के स्खलन जैसा

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक संरक्षक और आदिवासी समाज के महानायक शिबू सोरेन उर्फ 'दिशोम गुरु' के निधन पर पार्टी में गहरा शोक है. झामुमो के महासचिव सह केंद्रीय प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने इसे "झारखंड, देश और आदिवासी-मूलवासी समाज के लिए हिमालय के स्खलन" जैसा बताया है. उन्होंने कहा कि "गुरुजी ने हमेशा धारा के विपरीत चलकर संघर्ष का रास्ता चुना, लेकिन कभी भी हार नहीं मानी. उनके जीवन संघर्ष ने दबे-कुचले, शोषित समाज को अपनी पहचान, सम्मान और अधिकार दिलाया." भट्टाचार्य ने भावुक होते हुए कहा कि दिशोम गुरु ने अज्ञानता के विरुद्ध शिक्षा, शोषण के विरुद्ध संग्राम और सम्मानजनक जीवन के लिए संघर्ष करने की राह दिखाई. उनका जीवन सिर्फ एक राजनेता का नहीं, बल्कि एक विचारधारा का था, जिसने लाखों लोगों को आवाज दी. उन्होंने कहा, "आज भले ही गुरुजी हमारे बीच शारीरिक रूप से नहीं हैं, लेकिन उनकी शिक्षा, उनके सिद्धांत और उनका संघर्ष हर झामुमो कार्यकर्ता के जीवन में एक मजबूत स्तंभ की तरह कायम रहेगा. उनकी सीख हमें जीवन की सबसे कठिन परिस्थितियों में भी हार न मानने की प्रेरणा देती रहेगी."बयान के अंत में सुप्रियो भट्टाचार्य ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा- "ॐ शांति!"

जेएससीए परिसर में गुरुजी को श्रद्धांजलि दी गई

रांची। जेएससीए अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम परिसर में राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई. इस अवसर पर जेएससीए के अध्यक्ष अजय नाथ शाहदेव ने कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी झारखंड आंदोलन के सूत्रधार और एक महान जननेता थे. झारखंड आंदोलन के साथ साथ गुरुजी ने आजीवन झारखंड के लोगों के लिए संघर्ष किया. इस अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम के निर्माण में भी उनकी प्रमुख भूमिका रही है. उन्होंने 24 अक्टूबर 2008 को इस स्टेडियम की आधारशिला रखी थी. गुरुजी हमारी स्मृतियों में सदैव विद्यमान रहेंगे.

स्मृति शेष — जंगलों में छिपा संघर्ष का इतिहास

गुरुजी का रहस्यमयी आंदोलन और गुप्त जीवन

संजीव झा। रांची

झारखंड के जननायक और झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक नेताओं में शुमार दिशोम गुरु शिबू सोरेन का जीवन केवल राजनीति तक सीमित नहीं रहा. उनका जीवन एक सतत संघर्ष और समाज परिवर्तन की गाथा है, जो गिरिडीह, पारसनाथ और धनबाद के घने जंगलों और पहाड़ियों में लिखा गया. 1970 के दशक में, जब शिबू सोरेन महाजनी शोषण, शराबबंदी और अलग राज्य की मांग को लेकर आंदोलन कर रहे थे, तब वे लंबे समय तक भूमिगत जीवन जीते रहे. इस दौरान वे ऐसे गुप्त स्थानों पर रहते थे, जहां पुलिस तक जाने से कतराती थी.

हर रात तीन बार बदलते थे ठिकाने

उन दिनों शिबू सोरेन पर दोहरी मार थी. एक ओर महाजनी शोषण और शराब कारोबारियों से सीधी टक्कर, तो दूसरी ओर पुलिस का शिकंजा जो उनके आंदोलनों से परेशान थी. ऐसे में शिबू सोरेन हर रात दो से तीन बार अपना ठिकाना बदलते थे. वे घने जंगलों, दुर्गम पहाड़ियों और सुनसान इलाकों में छिपकर रातें बिताते. वे इतनी सावधानी और गुप्तता से रहते थे कि कई बार पुलिस को भी अंदाजा नहीं होता कि वे कितनी नजदीक या कितनी दूर हैं. कुछ स्थान तो ऐसे थे जहां पुलिस जवानों को भी प्रवेश करने में डर लगता था.

आदिवासी उत्पीड़न से उपजा संघर्ष

शिबू सोरेन का यह भूमिगत आंदोलन अचानक नहीं शुरू हुआ था. इसके पीछे समाज में व्याप्त गंभीर अन्याय था. धनबाद जिले के बदरो पंचायत अंतर्गत बदरू गांव के निवासी शिवलाल मुर्मू बताते हैं कि वर्ष 1971-72 में एक आदिवासी लड़की के साथ एक बंगाली दुकानदार द्वारा दुष्कर्म किया गया था. उस घटना के विरोध में गांव वालों ने एक बड़ी बैठक बुलाई और उसमें शिबू सोरेन को आमंत्रित किया गया. उस बैठक ने गुरुजी को इतना झकझोर दिया कि उन्होंने महीनों तक उस इलाके में रहकर लोगों को अन्याय के खिलाफ खड़ा होने का साहस दिया.

विनोद बिहारी महतो से मुलाकात और साझा आंदोलन

उसी दौरान शिबू सोरेन की मुलाकात प्रसिद्ध समाजसेवी और शिक्षाविद् विनोद बिहारी महतो से हुई. महतो झारखंड के पिछड़े समाज को शिक्षा की रोशनी देने में जुटे थे. शिवलाल मुर्मू के पिता लक्ष्मी नारायण मुर्मू ने ही शिबू सोरेन को सलाह दी कि वे महतो के साथ मिलकर संयुक्त रूप से आंदोलन चलाएं. बाद में यही मुलाकात झारखंड मुक्ति मोर्चा के गठन की नींव बनी, जिसने आदिवासी अस्मिता, अधिकार और राज्य गठन की लड़ाई को संगठित दिशा दी.

भूमिगत जीवन में भी शिक्षा का अलख

भूमिगत आंदोलन के दौरान शिबू सोरेन का भोजन, पानी और सुरक्षा की जिम्मेदारी स्थानीय ग्रामीणों ने निभाई. विशेष रूप से शिवलाल मुर्मू के परिवार ने उनकी देखभाल की. शिबू सोरेन ने कई रातें उनके घर में गुजारीं. लेकिन यह संघर्ष केवल विरोध तक सीमित नहीं रहा, उन्होंने शिक्षा को भी आंदोलन का हिस्सा बनाया. बाद में टुंडी इलाके में उन्होंने एक आश्रम की स्थापना की, जहां गरीब और आदिवासी बच्चों को पढ़ाने का काम शुरू किया गया. शिबू सोरेन ने यह समझा कि अगर समाज को स्थायी रूप से बदलना है, तो शिक्षा ही एकमात्र रास्ता है. इसी वजह से वे न केवल आंदोलन के 'गुरु' बने, बल्कि सामाजिक चेतना के वाहक भी बन गए. आदिवासी समाज में उन्हें 'गुरुजी' का सम्मान इसलिए मिला क्योंकि उन्होंने जीवन के हर संघर्ष में समाज का साथ दिया, उनकी लड़ाई लड़ी और उन्हें आगे बढ़ने की राह दिखाई.

चैंबर भवन में शोक सभा का आयोजन

रांची । दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करते हुए सोमवार को फेडरेशन ऑफ झारखंड चैम्बर ऑफ कॉमर्स द्वारा चैम्बर भवन में श्रद्धांजलि सभा की गई. दो मिनट का मौन रखकर सदस्यों ने गुरुजी को श्रद्धांजलि दी. उनके योगदान को याद किया. मौके पर चैम्बर अध्यक्ष परेश गट्टानी एवं महासचिव आदित्य मल्होत्रा ने रूप से कहा कि दिशोम गुरु के निधन से संपूर्ण व्यापारी एवं उद्यमी समाज शोकाकुल है. परेश गट्टानी, राहुल साबू, ज्योति कुमारी, आदित्य मल्होत्रा, विकास विजयवर्गीय, नवजोत अलंग, रोहित अग्रवाल, रोहित पोद्दार, आस्था किरण, अमित शर्मा, शैलेश अग्रवाल,प्रमोद सारस्वत, मनोज मिश्रा, संतोष अग्रवाल, कमल सिंघानिया, राजीव सहाय, अल्तमस आलम, सुमित अग्रवाल, प्रवीण शर्मा, प्रवीण सिन्हा, संजय वाधवा, दीपक पटेल, कुणाल, विनय विभाकर, अनिल जैन, युकतेश मित्तल, रवि सामोता आदि मौके पर मौजूद थे.

भारतीय क्रिकेट के लिए ऐतिहासिक पल: ओवल में टीम इंडिया की रोमांचक जीत, टेस्ट सीरीज 2-2 से बराबर; ब्रुक और रूट के शतक बेकार, सिराज चमके

सिराज ने जबड़े से छीनी जीत, भारत 6 रन से जीता

एजेंसियां। लंदन

यही तो टेस्ट क्रिकेट की खूबसूरती है. चौथे दिन तक मैच में आगे दिख रही इंग्लैंड टीम 5वें दिन देखते ही देखते धराशायी हो गई. ओवल टेस्ट के आखिरी दिन टीम इंडिया ने इंग्लैंड टीम को 6 रन से हरा दिया. आखिरी विकेट के रूप में प्रसिद्ध कृष्णा ने जोश टंग को क्लीन बोल्ड किया तो भारतीय टीम का जश्न देखते बन रहा था. ड्रेसिंग रूम में हेड कोच गौतम गंभीर समेत खिलाड़ी खुशी से उछल रहे थे. टेस्ट मैच में यह सबसे कम रनों के अंतर से भारत की जीत है. इसके साथ ही 5 मैचों की सीरीज 2-2 से बराबरी पर खत्म हुई.
आखिरी दिन इंग्लैंड को 35 रनों की जरूरत थी, जबकि उसके पास 4 विकेट बचे थे. भारत के लिए मोहम्मद सिराज ने कमाल की गेंदबाजी की और टीम इंडिया को जीत दिलाने में सबसे बड़े हीरो रहे. भारत ने आखिरी पारी में इंग्लैंड को 374 रनों का लक्ष्य दिया था. बता दें इससे पहले भारतीय टीम ने युवा शुभमन गिल की कप्तानी में इंग्लैंड टीम को एजबेस्टन में हराया था, जबकि मैनचेस्टर टेस्ट ड्रॉ रहा था.

भारत को चाहिए थे 4 विकेट, इंग्लैंड को 35 रन, सिराज ने किया कमाल
इंग्लैंड ने चौथे दिन का खेल खत्म होने तक 76.2 ओवरों में 6 विकेट खोकर 339 रन बनाए थे. बारिश की वजह से खेल को जल्दी खत्म करना पड़ा था. आखिरी दिन भारतीय टीम को जीत के लिए 4 विकेट चाहिए थे, जबकि इंग्लैंड को 35 रन. मैच जब शुरू हुआ तो प्रसिद्ध कृष्णा की ओर से किए गए पहली और दूसरी गेंद पर जेमी ओवरटन ने लगातार दो बाउंड्री लगा दी, जिससे भारतीय खेमे में थोड़ी खामोशी फैल गई. हालांकि, 78वें ओवर की तीसरी गेंद पर मोहम्मद सिराज की एक कमाल की गेंद जेमी स्मिथ के बल्ले का किनारा लेकर विकेटकीपर ध्रुव जुरेल के पास पहुंची और उन्होंने लपकने में कोई गलती नहीं की. थर्ड अंपायर ने जेमी को आउट दिया तो टीम इंडिया का जश्न देखते बन रहा था. उसके चाहने वाले भी स्टेडियम में झूम रहे थे. मोहम्मद सिराज ने एक और कमाल किया. उन्होंने 80वें ओवर में उन्होंने जेमी ओवरटन का शिकार किया, जो एलबीडब्ल्यू आउट हुए. यहां भी फैसला थर्ड अंपायर ने दिया. इसके बाद प्रसिद्ध कृष्णा ने गजब कर करते हुए टंग के स्टंप उखाड़ दिए.
इसके बाद चोटिल क्रिस वोक्स एक हाथ से बैटिंग करने मैदान पर पहुंच गए. यहां दृश्य ऋषभ पंत की तरह ही था, जो पिछले मुकाबले में लंगड़ाते हुए मैदान पर आए थे और हाफ सेंचुरी ठोकी थी. इस बीच गस एटकिंसन ने एक शॉट खेला, जिसे बाउंड्री पर आकाश दीप कैच नहीं कर सके और गेंद सीमा रेखा के बाहर 6 रनों के लिए चली गई. यह वह मोमेंट था जब भारतीय फैंस अवाक हो गए थे. जब प्रसिद्ध कृष्णा ने टंग को आउट किया तो भारतीय टीम जीत के जश्न में डूब गई. मोहम्मद सिराज ने दूसरी पारी में 5 तो प्रसिद्ध कृष्णा ने 4 विकेट झटके, एक विकेट आकाश दीप के नाम रहा.

ओवल में भारत की तीसरी जीत: बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए इंग्लैंड ने 106 के स्कोर तक 3 विकेट गंवा दिए थे. यहां से हैरी ब्रूक और जो रूट ने 195 रनों की पार्टनरशिप कर टीम इंडिया की मुश्किलें बढ़ाईं, रूट और ब्रूक ने क्रमशः 105 रन और 111 रनों की पारी खेली. ओवल पर भारत ने सबसे पहली बार 1971 में जीत दर्ज की थी, उस समय अजीत वाडेकर भारत के कप्तान हुआ करते थे. उसके 50 साल बाद विराट कोहली की कप्तानी में भारत ने 2021 में इंग्लैंड को हराया था.

भारत बनाम इंग्लैंड टेस्ट सीरीज के किस मैच में क्या हुआ? पहला टेस्ट मैच 20 जून से 24 जून तक हेडिंग्ले, लीड्स में खेला गया था. इस मुकाबले में इंग्लैंड ने भारत को 5 विकेट से हरा दिया. जबकि, दूसरा टेस्ट 2 जुलाई से 6 जुलाई तक एजबेस्टन, बर्मिंघम में खेला गया. इस मैच में भारत ने शानदार वापसी करते हुए इंग्लैंड को 336 रनों के बड़े अंतर से हराया. इस तरह से सीरीज 1-1 से बराबर हो गया. इसके बाद तीसरा टेस्ट मैच 10 जुलाई से 14 जुलाई तक क्रिकेट का मक्का कहे जाने वाले लॉर्ड्स, लंदन में खेला गया. यह एक रोमांचक मुकाबला था, जिसमें इंग्लैंड ने भारत को मात्र 22 रनों से मात दी. चौथा टेस्ट मैच 23 जुलाई से 27 जुलाई तक एमिरेट्स ओल्ड ट्रैफर्ड, मैनचेस्टर में खेला गया. यह मुकाबला काफी संघर्षपूर्ण रहा और मैच ड्रॉ पर समाप्त हुआ.

क्या भारतीय टेस्ट टीम में होगी विराट की वापसी?

देश के बड़े नेता शशि थरूर ने की है अपील

एजेंसियां। नयी दिल्ली

भारत और इंग्लैंड के बीच टेस्ट सीरीज के दौरान जिन दो खिलाड़ियों की कमी क्रिकेट फैंस ने महसूस की, वे हैं रोहित शर्मा और विराट कोहली. इस सीरीज में कोहली की कमी महसूस करने वालों में कांग्रेस सांसद शशि थरूर भी शामिल हैं. शशि थरूर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'मुझे इस सीरीज के दौरान कई बार विराट कोहली की कमी महसूस हुई. लेकिन, इस टेस्ट मैच में जितनी कमी महसूस हुई, उतनी कभी नहीं हुई.'

उन्होंने लिखा, 'उनका धैर्य और जोश, मैदान पर उनकी प्रेरणादायक उपस्थिति, उनकी शानदार बल्लेबाजी, शायद कुछ और ही नतीजा देती. क्या अब उनके संन्यास की घोषणा करने में बहुत देर हो चुकी है? विराट, देश को आपकी जरूरत है.' शशि थरूर के सोशल मीडिया पोस्ट से स्पष्ट होता है कि करोड़ों आम क्रिकेट फैंस की तरह वह भी चाहते हैं कि विराट कोहली टेस्ट क्रिकेट में वापसी करें.

इंग्लैंड सीरीज से पहले विराट ने लिया था टेस्ट से संन्यास

विराट कोहली ने इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज शुरू होने से ठीक पहले ही इस फॉर्मेट को अलविदा कह दिया था. टेस्ट से संन्यास लेने का कोहली का फैसला चौंकाने वाला था. कोहली फिट हैं, फील्ड पर काफी सक्रिय रहते हैं. उनमें करीब दो साल क्रिकेट बाकी है. टी20 से वह पहले ही संन्यास ले चुके हैं. वनडे कम हो रहे हैं. ऐसे में माना जा रहा था कि वह 2027 तक वनडे और टेस्ट खेलेंगे. लेकिन, टेस्ट क्रिकेट से उनके अचानक संन्यास के फैसले ने फैंस और टीम के खिलाड़ियों को भी हैरान कर दिया. विराट कोहली पिछले एक दशक से भारतीय बल्लेबाजी की रीढ़ रहे हैं. अगर टेस्ट करियर पर नजर डालें तो उन्होंने 123 टेस्ट मैचों की 210 पारियों में 30 शतक, जिसमें 7 दोहरे शतक हैं, की मदद से 9,230 रन बनाए. कोहली टेस्ट क्रिकेट में भारत के सफलतम कप्तान भी हैं. उनकी कप्तानी में भारत ने 68 टेस्ट में 40 में जीत दर्ज की है, 17 टेस्ट में भारत को हार मिली है, जबकि 11 टेस्ट ड्रॉ रहे हैं.

डब्ल्यूटीटी स्टार कंटेंडर : मानुष -दीया की जोड़ी मिक्स्ड डबल्स में उपविजेता

मानुष शाह ने डबल्स में भी जीता रजत

एजेंसियां। फोज डो इगुआकू

भारत की शीर्ष वरीय जोड़ी मानुष शाह और दीया चितले को ब्राज़ील में आयोजित डब्ल्यूटीटी स्टार कंटेंडर फोज डो इगुआकू टूर्नामेंट के मिक्स्ड डबल्स फाइनल में हार का सामना करना पड़ा. भारतीय जोड़ी को जापान के क्वालिफायर खिलाड़ी सतोशी आइडा और होनोका हाशिमोतो के हाथों 2-3 (4-11, 11-8, 11-5, 5-11, 2-11) से शिकस्त मिली. यह इस सीज़न में मानुष शाह और दीया चितले की दूसरी फाइनल उपस्थिति थी. इससे पहले दोनों ने ट्यूनिस में हुए डब्ल्यूटीटी कंटेंडर टूर्नामेंट में खिताब अपने नाम किया था.

इस टूर्नामेंट में मानुष शाह ने पुरुष डबल्स में भी शानदार प्रदर्शन किया. वह अपने जोड़ीदार मानव ठक्कर के साथ फाइनल तक पहुंचे, लेकिन खिताबी मुकाबले में जर्मनी के बेनेडिक्ट डुडा और डैंग क्यू की दूसरी वरीय जोड़ी से 2-3 (3-11, 11-7, 7-11, 15-13, 5-11) से हार गए. यह मुकाबला 42 मिनट तक चला. वहीं महिला एकल वर्ग में भारत की मनिका बत्रा क्वार्टरफाइनल में जापान की हाशिमोतो से 0-3 (7-11, 6-11, 7-11) से हारकर टूर्नामेंट से बाहर हो गईं. इससे पहले मनिका ने दक्षिण कोरिया की किम नायॉन्ग को 3-2 से हराकर अंतिम आठ में जगह बनाई थी.

पाकिस्तान ने तीसरे टी20 में वेस्टइंडीज को 13 रन से धोया

एजेंसियां। लॉडरहिल

साहिबजादा फरहान और सैम अयूब के दमदार खेल से पाकिस्तान ने वेस्टइंडीज को तीसरे टी20 में 13 रन से हरा दिया.

मुकाबले में पाकिस्तान की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर के खेल में 4 विकेट के नुकसान पर 189 रन का स्कोर खड़ा किया था. इसके जवाब में वेस्टइंडीज की टीम 20 ओवर में 6 विकेट गंवाकर 176 रन ही बना सकी. इस तरह पाकिस्तान ने तीन मैचों की सीरीज को 2-1 से अपने नाम किया.

पाकिस्तान की जीत के हीरो रहे साहिबजादा फरहान को उनके दमदार प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच चुना गया. वहीं पूरे सीरीज में शानदार खेल दिखाने वाले मोहम्मद नवाज को प्लेयर ऑफ सीरीज चुना गया. पाकिस्तान के द्वारा दिए गए 190 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेस्टइंडीज ने सधी हुई शुरुआत की थी. एलिक अथानाजे और ज्वेल एंड्रयू के बीच पहले विकेट के लिए 44 रनों की साझेदारी हुई. ज्वेल इस बीच 15 गेंद में 24 रन बनाकर आउट हो गए. हालांकि अथानाजे एक छोर पर डटे रहे और उन्होंने 40 गेंद में 60 रनों की पारी खेली. अपनी इस पारी में उन्होंने 8 चौके और 1 छक्का भी लगाया.

शेफरन रदरफोर्ड ने लगाई फिफ्टी

अथानाजे के अलावा वेस्टइंडीज के लिए शेफरन रदरफोर्ड ने भी दमदार फिफ्टी लगाई. रदरफोर्ड जब बैटिंग कर रहे थे तो एक बार के लिए वेस्टइंडीज की उम्मीदें बढ़ गई, लेकिन अंतिम ओवरों में वेस्टइंडीज के बल्लेबाज दबाव बिखर गए, जिससे वह लक्ष्य तक नहीं पहुंच सके. रदरफोर्ड ने टीम के लिए 3 छक्के और 4 चौके की मदद से 35 गेंद में 51 रनों की पारी खेली. वहीं गेंदबाजी की बात की जाए तो पाकिस्तान की तरफ से फहीम अशरफ को छोड़कर हसन अली, मोहम्मद नवाज, हारिस रऊफ, सैम अयूब और सुफियान मुकीम ने एक-एक विकेट हासिल किए.

फहरान और सैम अयूब ने किया कमाल

वहीं पाकिस्तान की बात करें तो बल्लेबाजी में सैम अयूब और साहिबजादा फरहान ने कमाल किया. फरहान ने टीम के लिए 53 गेंद में 74 रनों की पारी खेली. अपनी इस पारी में उन्होंने 5 छक्के और 3 चौके भी लगाए. इसके अलावा सैम अयूब ने 49 गेंद में 66 रन बनाए. सैम ने 4 चौके और 2 छक्के भी लगाए. इन दोनों बल्लेबाजों के अलावा और भी कुछ खास नहीं कर सके.

बेन शेल्टन क्वार्टरफाइनल में पहुंचे, डी मिनौर से होगा सामना

टोरंटो मास्टर्स

एजेंसियां। टोरंटो

अमेरिका के चौथे वरीय खिलाड़ी बेन शेल्टन ने इटली के 13वें वरीय फ्लावियो कोबोली को हराकर नेशनल बैंक ओपन (टोरंटो मास्टर्स) के क्वार्टरफाइनल में जगह बना ली है. रविवार रात खेले गए इस मुकाबले में शेल्टन ने 6-4, 4-6, 7-6 (1) से रोमांचक जीत दर्ज की. 22 वर्षीय शेल्टन तीसरे सेट में 2-4 से पिछड़ रहे थे, लेकिन वहां से शानदार वापसी करते हुए उन्होंने मुकाबला टाईब्रेक तक ले जाकर जीत हासिल की. यह उनकी करियर की 100वीं जीत रही, जिसे उन्होंने 169 मुकाबलों में हासिल किया है. मैच के बाद शेल्टन ने कहा, बहुत मुश्किल मुकाबला था. मैं तीसरे सेट में एक ब्रेक से पीछे था और जिस तरह वह खेल रहा था, उससे मैं काफी दबाव में था. लेकिन मैंने खुद को एक और मौका दिया और उसका फायदा उठाया. अब क्वार्टरफाइनल में शेल्टन का सामना ऑस्ट्रेलिया के नौवें वरीय एलेक्स डी

मिनौर से होगा, जिन्होंने अमेरिका के सातवें वरीय फ्रांसेस टियाफो को 6-2, 4-6, 6-4 से हराया. शेल्टन के नाम दो एटीपी टूर खिताब हैं – एक 2023 में टोक्यो के हार्ड कोर्ट पर और एक 2022 में ह्यूस्टन के क्ले कोर्ट पर. उन्होंने कहा, मैं अपने दो सबसे बड़े हथियार सर्व और फोरहैंड से जूझ रहा था, लेकिन आखिरी में मानसिक मजबूती और फाइटिंग स्पिरिट ने काम किया. इस बीच, रूस के छठे वरीय आंद्रेई रूब्लेव को स्पेन के अलेजांद्रो डेविडोविच फोकीना के रिटायर होने से क्वार्टरफाइनल में प्रवेश मिला. रूब्लेव 6-7 (3), 7-6 (2), 3-0 की बढ़त पर थे जब फोकीना थकान के कारण मैच से हट गए.

डीपीएल 2025 : रन बरसात वाले मुकाबले में न्यू दिल्ली टाइगर्स ने आउटर दिल्ली वॉरियर्स को 40 रन से हराया

एजेंसियां। नयी दिल्ली

अरुण जेटली स्टेडियम में रविवार रात दिल्ली प्रीमियर 2025 लीग (डीपीएल) का एक और हाई-स्कोरिंग मुकाबला देखने को मिला, जिसमें न्यू दिल्ली टाइगर्स और आउटर दिल्ली वॉरियर्स के बीच रोमांचक टक्कर हुई. बल्लेबाज़ों की आतिशी पारी और मैच के उतार-चढ़ाव ने दर्शकों को पूरी तरह रोमांचित कर दिया. टॉस हारकर पहले बल्लेबाज़ी करते हुए न्यू दिल्ली टाइगर्स की शुरुआत अच्छी नहीं रही. ओपनर ध्रुव कौशिक केवल 5 रन बनाकर पवेलियन लौट गए. हालांकि इसके बाद शिवम गुप्ता और कप्तान हिम्मत सिंह ने मोर्चा संभाला और दूसरे विकेट के लिए 164 रनों की शानदार साझेदारी की. शिवम गुप्ता ने 53 गेंदों में 8 चौकों और 4 छक्कों की मदद से 89 रन बनाए, जबकि हिम्मत सिंह ने 39 गेंदों में 69 रनों की आक्रामक पारी खेली. बीच में कुछ जल्दी विकेट जरूर गिरे, लेकिन केशव डालाल ने 9 गेंदों में 19 रनों की तेजतर्रार पारी खेलकर स्कोर को मजबूत किया. टाइगर्स ने निर्धारित 20 ओवर में 222/7 का विशाल स्कोर खड़ा किया. गेंदबाज़ी में आउटर दिल्ली वॉरियर्स की ओर से अंशुमान हूडा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 51 रन देकर 5 विकेट चटकाए और सभी को प्रभावित किया. जवाब में आउटर दिल्ली वॉरियर्स की शुरुआत तेज़ रही. ओपनर प्रियांश आर्य (26 रन, 15 गेंद) और सनत सांगवान (48 रन, 42 गेंद) ने सिर्फ 5.4 ओवर में 69 रन जोड़कर मजबूत नींव रखी. लेकिन मध्य ओवरों में लगातार विकेट गिरने से टीम दबाव में आ गई. श्रेष्ठ यादव (37* रन, 33 गेंद) ने एक छोर संभाले रखा और ध्रुव सिंह (38* रन, 16 गेंद) ने अंतिम ओवरों में तेजी से रन बनाए, लेकिन लक्ष्य बहुत बड़ा साबित हुआ. आखिर में वॉरियर्स 40 रन से मुकाबला हार गए. इस जीत के साथ न्यू दिल्ली टाइगर्स ने डीपीएल 2025 के दूसरे संस्करण में एक और महत्वपूर्ण जीत दर्ज की.

संक्षिप्त स्कोरकार्ड

न्यू दिल्ली टाइगर्स – 222/7 (20 ओवर): शिवम गुप्ता 89 (53), हिम्मत सिंह 69 (39), अंशुमान हूडा 5/51
आउटर दिल्ली वॉरियर्स – 182/4 (20 ओवर): सनत सांगवान 48 (42), ध्रुव सिंह 38* (16), आत्रेय त्रिपाठी 2/15

मैनचेस्टर यूनाइटेड ने जीती प्रीमियर लीग समर सीरीज

एजेंसियां। वाशिंगटन

मैनचेस्टर यूनाइटेड ने रविवार रात एवर्टन के खिलाफ 2-2 से ड्रॉ खेला और प्रीमियर लीग समर सीरीज 2025 का खिताब अपने नाम किया. इस ड्रॉ के साथ यूनाइटेड ने अमेरिका में हुई राउंड-रॉबिन प्री-सीजन सीरीज में कुल सात अंक लेकर शीर्ष स्थान हासिल किया. इससे पहले टीम वेस्ट हैम को 2-1 और बॉर्नमाउथ को 4-1 से हरा चुकी थी. मैच में 19वें मिनट में अमद डायलो को बॉक्स में गिराए जाने पर यूनाइटेड को पेनल्टी मिली, जिसे ब्रूनो फर्नांडिस ने गोल में बदलकर टीम को बढ़त दिला दी. 40वें मिनट में एवर्टन के इलिमन नदियाए ने बराबरी का गोल किया. दूसरे हाफ में ब्रूनो ने एक और योगदान दिया, जब उन्होंने 69वें मिनट में मेसन माउंट को शानदार पास दिया और माउंट ने पिकफोर्ड को चकमा देकर गोल दागा. हालांकि, 75वें मिनट में अमद डायलो की बैक पास यूनाइटेड के ही आयडन हेवन से टकराकर गोल में चली गई और मैच 2-2 की बराबरी पर खत्म हुआ. मैच के बाद स्काई स्पोर्ट्स से बात करते हुए यूनाइटेड के खिलाड़ी ब्रूनो फर्नांडिस ने कहा, "स्थिति में सुधार हो रहा है. क्लब अपनी पूरी कोशिश कर रहा है.

हमें प्रतिस्पर्धा की जरूरत थी ताकि हर खिलाड़ी अपनी जगह के लिए संघर्ष करे." उन्होंने आगे कहा कि क्लब और मैनेजर लगातार सुधार की दिशा में काम कर रहे हैं और एक-दो नए खिलाड़ियों की उम्मीद अभी बाकी है. गौरतलब है कि मैनचेस्टर यूनाइटेड का पिछला सीजन बेहद खराब रहा था.

क्रिकेट आईपीएल के बाद राहुल ने हर मिनट इंग्लैंड सीरीज की तैयारी में बिताया

सहायक कोच अभिषेक नायर ने की ओपनर की तारीफ

एजेंसियां। नयी दिल्ली

भारत के पूर्व सहायक कोच अभिषेक नायर ने रविवार को कहा कि लोकेश राहुल ने अपने आखिरी आईपीएल मैच के बाद हर मिनट इंग्लैंड दौरे की तैयारी में बिताया है और टीम के लिए सभी क्रम पर खेलने से मिलने वाली प्रशंसा के वह हकदार हैं. राहुल पांच टेस्ट मैच की सीरीज में भारत के दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे. उन्होंने दो शतक और दो अर्धशतक की मदद से 53.20 की औसत से 532 रन बनाए और यशस्वी जायसवाल के साथ एक मजबूत सलामी जोड़ी बनाई. कुछ समय पहले तक भारत के सहायक कोच के रूप में काम करने वाले नायर ने कहा कि वह राहुल द्वारा किए गए बदलावों का खुलासा नहीं कर सकते, लेकिन वह वांछित परिणाम देखकर खुश हैं. महिला प्रीमियर लीग टीम यूपी वॉरियर्स के मुख्य कोच नायर ने कहा, 'मैं लोकेश राहुल में देखे गए बदलावों के बारे में बात नहीं कर सकता क्योंकि इससे उनका प्रभाव काफी कम हो जाएगा.'

उन्होंने कहा, 'मैं बस इतना कह सकता हूं कि जो भी बदलाव हुए हैं, वे वाकई कारगर रहे हैं.'

नायर ने कहा कि राहुल ने आईपीएल के बाद इंग्लैंड दौरे की तैयारी शुरू करने में कोई समय बर्बाद नहीं किया. उन्होंने कहा, 'उन्होंने बहुत, बहुत कड़ी मेहनत की है. बहुत कम लोग जानते हैं कि अपने बच्चे के जन्म के बाद वह आईपीएल में खेले. वह तुरंत टीम से जुड़ गए.' नायर ने कहा, 'राहुल ने (इंग्लैंड) टेस्ट सीरीज की तैयारी शुरू कर दी थी, जबकि बहुत से लोग ऐसा नहीं करते. वह इस सीरीज के महत्व को जानते थे, वह इसे समझते थे.'

उन्होंने आगे कहा, 'आईपीएल में खेले गए आखिरी मैच के बाद हर मिनट यही सोच रहे थे कि वह इस टेस्ट सीरीज में कैसे अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं. इसलिए उन्हें वहां अच्छा प्रदर्शन करते और वह मिलते देखना बहुत अच्छा है जिसके वह हकदार हैं. उन्होंने सभी मुश्किल काम किए हैं और फिर भी बल्लेबाजी क्रम में हर क्रम पर अच्छा प्रदर्शन करने में कामयाब रहे हैं.' नायर ने पांचवें टेस्ट के बारे में बात करते हुए कहा, 'कुल मिलाकर भारतीय क्रिकेट अच्छे हाथों में है.'

जो रूट ने संगकारा को पछाड़ा, टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा शतक लगाने वालों में चौथे स्थान पर पहुंचे

एजेंसियां। लंदन

लंदन के ओवल मैदान पर भारत और इंग्लैंड के बीच चल रहे पांचवें और अंतिम टेस्ट मैच के चौथे दिन इंग्लैंड के पूर्व कप्तान जो रूट ने अपने टेस्ट करियर का 39वां शतक जड़ा. उन्होंने यह शतक 137 गेंदों में पूरा किया और इसके साथ ही टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची में श्रीलंका के महान बल्लेबाज कुमार संगकारा (38 शतक) को पीछे छोड़ते हुए चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं. अब रूट से आगे सिर्फ तीन दिग्गज बल्लेबाज हैं — भारत के सचिन तेंदुलकर (51 शतक), दक्षिण अफ्रीका के जाक कैलिस (45 शतक) और ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग (41 शतक). रूट ने रविवार को अपनी पारी के दौरान एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की. वह वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (WTC) इतिहास में 6,000 रन पूरे करने वाले पहले बल्लेबाज बन गए हैं.जो रूट के नाम अब टेस्ट क्रिकेट में 13,500 से ज्यादा रन दर्ज हैं, और वह टेस्ट इतिहास में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाजों की सूची में दूसरे स्थान पर हैं. वह अब सचिन तेंदुलकर के 15,921 रनों के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ने की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं.

टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले बल्लेबाज (अब तक)

- 1. सचिन तेंदुलकर – 51 शतक (329 पारियां), 2. जाक कैलिस – 45 शतक (280 पारियां), 3. रिकी पोंटिंग – 41 शतक (287 पारियां) ,4. जो रूट – 39 शतक (288 पारियां), 5. कुमार संगकारा – 38 शतक

दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्ताओं ने नई दिल्ली में भाजपा नीत राज्य सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया.

न्यूज अपडेट

हॉलीवुड अभिनेत्री लोनी एंडरसन का 79 वर्ष की आयु में हुआ निधन

लॉस एंजिल्स । हॉलीवुड अभिनेत्री लोनी एंडरसन का लंबी बीमारी के बाद 79 वर्ष की आयु में निधन हो गया. उन्होंने लॉस एंजिल्स के एक अस्पताल में अंतिम सांस ली. उनकी सबसे यादगार फिल्म डब्ल्यूकेआरपी इन सिनसिनाटी है. उन्होंने इस हास्य फिल्म में रिसेप्शनिस्ट जेनिफर मार्लो का किरदार निभाकर प्रशंसकों और फिल्म विशेषज्ञों का ध्यान खींचा था. फॉक्स न्यूज चैनल की खबर के अनुसार, उनकी पूर्व प्रचारक चेरिल जे. कागन ने अभिनेत्री लोनी एंडरसन के निधन की पुष्टि करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी है. एंडरसन के परिवार ने बयान में कहा, ₹हमें अपनी प्यारी पत्नी, मां और दादी के निधन की घोषणा करते हुए दुख हो रहा है.

पाकिस्तान के सिंध में अपराधों में शामिल 10 थाना प्रभारी निलंबित

कराची। पाकिस्तान के सिंध प्रांत में 10 थानाध्यक्षों (एसएचओ) को अपराधों में संलिप्त होने के कारण निलंबित कर दिया गया. सिंध पुलिस के महानिरीक्षक (आईजी) के निर्देश पर निलंबन और पदावनत की गाज हैदराबाद, कराची, संघार, कंबर शाहदादकोट, सुक्कुर और शिकारपुर थाना समेत 10 एसएचओ पर गिरी है. इन सभी पर सामाजिक अपराधों में लिप्त होने के अलावा कदाचार जैसे गंभीर आरोप हैं. द एक्सप्रेस ट्रिब्यून की खबर के अनुसार निलंबित थानाध्यक्षों को कराची के गार्डन स्थित पुलिस मुख्यालय में ₹बी-कंपनी₹ में रिपोर्ट करने का आदेश दिया गया है. ₹बी-कंपनी₹ पुलिस की अनुशासनात्मक इकाई है. यहां काली सूची में डाले गए या निलंबित किए गए कर्मियों को प्रतिदिन आठ घंटे निष्क्रिय रहने के लिए नियुक्त किया जाता है.

छत्तीसगढ़ में सीएएफ जवान ने खुद को गोली मार की आत्महत्या

कोंडागांव/रायपुर । छत्तीसगढ़ के कोंडगांव जिले के नक्सल प्रभावित क्षेत्र बयानार में छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल (सीएएफ) कैंप में पदस्थ एक जवान ने देर रात अपनी सर्विस रायफल से खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली. हालांकि अभी तक जवान के आत्महत्या का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है. मृतक की पहचान प्लाटून कमांडर दिनेश सिंह चंदेल के रूप में हुए है. वह दुर्ग जिले के निवासी थे. घटना के तुरंत बाद पुलिस को सूचित किया गया, जिसके बाद मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में ले लिया और पोस्टमार्टम के लिए भेजा दिया गया है. घटना का एक वीडियो भी सामने आया है, जिसमें दावा किया जा रहा है कि जवान ने गोली चलाने से पहले पूरा घटनाक्रम खुद रिकॉर्ड किया.

नेतन्याहू दो बंधकों का वीडियो देख विचलित, रेडक्रॉस से की अपील

तेल अवीव। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू गाजा में हमास के चंगुल में फंसे दो बंधकों की हालत देखकर आहत हैं. हमास के जारी वीडियो में अमानवीय स्थितियों में रखे गए बंधकों को देखकर विचलित नेतन्याहू ने अंतरराष्ट्रीय रेडक्रॉस (आईसीआरसी) से तत्काल दखल देने का आग्रह किया है. सीएनएन चैनल की खबर के अनुसार प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने हमास पर युद्धविराम समझौता न करने का आरोप लगाया है. उन्होंने अंतरराष्ट्रीय रेडक्रॉस से अनुरोध किया है कि वह गाजा में बंधकों के लिए भोजन और चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराए. उन्होंने रेडक्रॉस यह आग्रह दो दुर्बल इजरायली बंधकों को दिखाने वाले वीडियो पर भड़के जनाक्रोश के बाद किया है.

पोलैंड एंबेसी के पास कांग्रेस की महिला सांसद की चेन झपट कर भागे

नई दिल्ली । नई दिल्ली जिले के चाणक्यपुरी स्थित पोलैंड एंबेसी के नजदीक स्कूटी सवार बदमाश कांग्रेस की महिला सांसद सुधा रामकृष्णन की सोने की चेन झपट कर फरार हो गया. घटना उस समय हुई जब वह तमिलनाडु की एक अन्य महिला सांसद के साथ सुबह की सैर पर निकली थीं. गवाहों के अनुसार, संदिग्ध स्कूटी चालक ने सांसद के निकट आकर धीमी गति कर वारदात को अंजाम दिया. चेन छीनने के बाद सांसद ने शोर मचाकर मदद की गुहार लगाई, लेकिन आसपास मौजूद लोग असहाय बने रहे. उसी समय इलाके में गश्त कर रही दिल्ली पुलिस की इमरजेंसी रिस्पॉन्स व्हीकल (ईआरवी) ने स्थिति को भांपा और घटनास्थल पर पहुंचकर जानकारी ली.

तेलंगाना कांग्रेस का तीन दिवसीय आंदोलन छह अगस्त से दिल्ली में

हैदराबाद । तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंथ रेड्डी के नेतृत्व में 6 अगस्त को दिल्ली में होने वाले प्रदर्शन में भाग लेने के लिए तमाम राज्य कांग्रेस के कार्यकर्ता सोमवार को यहां से एक विशेष ट्रेन से रवाना हुए हैं. तेलंगाना कांग्रेस का तीन दिन का विरोध प्रदर्शन राज्य विधानमंडल से पारित पिछड़ा वर्ग आरक्षण विधेयक को राष्ट्रपति की मंजूरी दिलाने की मांग को लेक करेगी. तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस समिति ने एक बयान जारी कर बताया कि राज्य कांग्रेस पार्टी ने प्रदेश की पिछड़ी जातियों के लिए 42 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित करने के लिए 'चलो दिल्ली' का ऐलान किया है. 6 अगस्त को दिल्ली में होने वाले प्रदर्शन में शामिल होने के लिए कांग्रेस नेता आज चेरलापल्ली से एक विशेष ट्रेन से दिल्ली के लिए रवाना हुए.

इजराइल-अमेरिका हमास को समझौते के लिए देंगे चेतावनीः स्टीव विटकॉफ

वाशिंगटन । अमेरिका और इजराइल ने संकेत दिया है कि वह युद्ध समाप्त करने के लिए हमास पर व्यापक समझौते के लिए कड़ी चेतावनी देंगे. अमेरिकी राष्ट्रपति डोलाल्ड जे. ट्रंप प्रशासन के मध्य पूर्व दूत स्टीव विटकॉफ ने सप्ताहांत बंधकों के परिवारों के साथ बैठक में यह जानकारी दी. उन्होंने कहा कि अगर आतंकी सूमह हमास इसके लिए तैयार नहीं होता तो इजराल उसके खिलाफ सैन्य अभियान को और तेज करेगा. द न्यूयॉर्क टाइम्स की खबर के अनुसार, ट्रंप प्रशासन के मध्य पूर्व दूत स्टीव विटकॉफ की बंधकों के परिवारों के साथ बैठक की ऑडियो रिकॉर्डिंग में साफ संकेत मिल रहे हैं कि इस बार अमेरिका और इजराइल आर या पार की दिशा में आगे बढ़ते दिख रहे हैं. गाजा में संघर्ष विराम और बंधकों की रिहाई के समझौते पर महीनों से चल रही बातचीत में आए गतिरोध के बीच अमेरिकी और इजराइली अधिकारियों ने संकेत दिया है कि वह युद्ध समाप्त करने के लिए व्यापक समझौते पर कठोर रुख अपनाएंगे. स्टीव विटकॉफ ने कहा,हमारा मानना है कि हर कोई (बंधक) घर लौटेगा. प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और राष्ट्रपति ट्रंप एक ऐसे समझौते पर काम कर रहे हैं जो हमास को चेतावनी देगा कि वह शेष बंधकों को रिहा करे और उन शर्तों पर सहमत हों जो समूह को निरस्त्र करेंगी, अन्यथा इजराइल का सैन्य अभियान और तेजी के साथ शुरू होगा. द न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार, हमास के अधिकारी महमूद मर्दवी ने कहा कि समूह को अभी तक किसी व्यापक समझौते का प्रस्ताव नहीं मिला है.

बीएचयू ट्रामा सेंटर के पास तक पहुंचा बाढ़ का पानी

वाराणसी के शहरी इलाकों के कई घरों में पहुंचा पानी

एजेंसी ।वाराणसी

पहाड़ों और मैदानी इलाकों में भारी बारिश से उत्तर प्रदेश के वाराणसी में गंगा नदी विकराल रूप धारण किये है. गंगा की रौद्र लहरें खतरे के निशान 71.26 मीटर को दो दिन पहले ही पार कर बाढ़ के उच्चतम बिंदु 73.901 मीटर तक पहुंच चुकी है. गंगा का पानी शहरी इलाकों तक पहुंच कर घरों में घुसने लगा है जिससे लोगों की परेशानियां बढ़ गई हैं. मणिकर्णिका घाट पर शवों को अंतिम संस्कार के लिए प्लेटफॉर्म तक नाव से ले जाना पड़ रहा है.

बाढ़ में किसी भी स्थिति से निपटने के लिए प्रशासन सतर्क है. प्रभावित इलाकों में राहत व बचाव कार्य चलाया जा रहा है. केन्द्रीय जल आयोग से मिली जानकारी के अनुसार सोमवार को वाराणसी में गंगा का जलस्तर 72 मीटर पार कर गया. सुबह आठ बजे गंगा का जलस्तर 72.03 मीटर दर्ज किया गया. जलस्तर में लगातार औसतन एक सेंटीमीटर प्रति घंटे की वृद्धि हो रही है. बीते 24 घंटों में गंगा 57 सेंटीमीटर चढ़ी है. गंगा का पानी घाटों को पार करने के बाद अब शहरी इलाकों में घुसने लगा है. दशाश्वमेध, शीतला घाट से होते हुए पानी चितरंजन पार्क, सामने घाट से बीएचयू ट्रॉमा सेंटर, गंगोत्री विहार, नगवा और सामनेघाट की कालोनियों तक पहुंच गया है. इन क्षेत्रों में घुटनों से ऊपर जलभराव हो चुका है. मणिकर्णिका घाट की गलियों में नावें चल रही हैं और शवों को अंतिम संस्कार के लिए प्लेटफॉर्म तक नाव से ले जाया जा रहा है. हरिश्चंद्र घाट पर भी अंतिम संस्कार गलियों में किया जा रहा है, जिससे धार्मिक कार्यों में भारी दिक्कतें पेश आ रही हैं. नगवा के संतोष पांडेय, राजकुमार व विनोद गुप्ता ने बताया कि वर्ष 2019 के बाद सामने घाट की सड़कों से लेकर ट्रॉमा सेंटर तक बाढ़ का पानी आया है. पूरी सड़क डूब गई है. इन इलाकों में बाढ़ का पानी घरों में घुसने लगा है. दुकान और कारोबार ठप हैं.

तहसील सदर के 32 गांव और 24 शहरी मोहल्ले बने 'टापू' : जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अनुसार, तहसील सदर के 32 गांव बाढ़ की चपेट में आकर टापू में तब्दील हो चुके हैं. इनमें रामपुर ढाब, रामचंदीपुर, मुस्तफाबाद, छितौना, जाल्हूपुर, लुठा, अम्बा, शिवदसा, गोबरहा, मोकलपुर, हरिहरपुर, राजापुर, तातेपुर, बभनपुरा, कुकुढ़ा, बर्थरा कला, धोबही, श्रीष्टि, रैमला, सेहवार, चांदपुर, पिपरी, डुडुवा, कैथी, टेकुरी, बर्थरा खुर्द, लक्ष्मीसेनपुर, धरहरा, रमना, टेकरी, नरोत्तमपुर और तारापुर है. इन गांवों में फसलें पूरी तरह से जलमग्न हो चुकी हैं और कृषि कार्य ठप हो गया है. इसी तरह, शहर के 24 मोहल्ले गंगा और वरूणा नदियों की बाढ़ से घिर गए हैं. इनमें सलारपुर, सरैया, नक्खी घाट, दानियालपुर, कोनिया, ढ़ेलवरिया, पुल कोहना, सारनाथ, रसूलगढ़, नगवां, हुकुलगंज, अस्सी, पुष्कर तालाब, सिकरौल, पैगम्बरपुर, तपोवन, रूप्पनपुर, सराय मोहना, कपिल धारा, बघवा नाला, मौजा हाल, डोमरी, सूजाबाद, दशाश्वमेध इलाके में बड़ी आबादी बाढ़ से प्रभावित हैं. कई स्थानों पर अब सड़कों पर नावें चलने की नौबत आ गई है.

प्रभावित इलाकों से पलायन शुरू, प्रशासन अलर्ट : हालात बिगड़ते देख लोग सुरक्षित स्थानों की ओर पलायन करने लगे हैं. शहर का जनजीवन थम सा गया है. वहीं, बाढ़ से निपटने के लिए प्रशासन सतर्क है. मुख्यमंत्री के निर्देश पर जिला प्रशासन, एनडीआरएफ, जल पुलिस और राहत एजेंसियां सक्रिय हैं. प्रभावित इलाकों में राहत व बचाव कार्य तेजी से चल रहा है. गंगा में बढ़ते जलस्तर के कारण सहायक नदी वरूणा भी उफान पर है, जिससे तटवर्ती इलाकों की स्थिति और खराब हो गई है.

यमन में 157 लोगों को लेकर जा रही नाव डूबी, 75 की मौत

एजेंसी ।सना

यमन के दक्षिणी प्रांत अबयान के तट पर रविवार को खराब मौसम के दौरान लगभग 157 लोगों को ले जा रही एक नाव डूब गई. खोज एवं बचाव दल में शामिल गोताखोरों ने अब तक 75 शव निकाले हैं. बाकी लोगों की तलाश की जा रही है. अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन (आईओएम) के यमन प्रमुख ने पहले इस दुर्घटना में कम से कम 68 प्रवासियों की मौत की सूचना दी थी. वैश्विक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक आईओएम के यमन प्रमुख ने कहा था कि 68 लोगों की मौत हो गई है और 12 लोगों को बचा लिया गया है, लेकिन दर्जनों लोग लापता हैं. अधिकतर पीड़ित इथियोपियाई नागरिक बताए जा रहे हैं.

सनद रहे अफ्रीकी खाड़ी देशों में काम की तलाश में आने वाले प्रवासियों के लिए यमन प्रमुख मार्ग है. आईओएम का अनुमान है कि हाल के महीनों में जहाज और नावों के डूबने से सैकड़ों लोग मारे गए या लापता हो गए. इस बीच, यमन के सुरक्षा अधिकारियों ने सोमवार को कुछ वैश्विक संचार माध्यमों को बताया कि इस नौका दुर्घटना में कम से कम 76 लोगों की मौत हो गई है और दर्जनों लोग लापता हैं. अदन की खाड़ी में जहाज के मलबे से 76 शव बरामद किए गए हैं और 32 लोगों को बचा लिया गया हैं. संयुक्त राष्ट्र की प्रवासन एजेंसी ने बताया कि नाव पर 157 लोग सवार थे. इस बीच अमन के सुरक्षा अधिकारियों ने कहा कि बड़ा खोज और बचाव अभियान शुरू किया गया है. तट के एक बड़े हिस्से से कई शव मिले हैं.

आईओएम यमन प्रमुख अब्दुसत्तोर एसोव ने कहा कि नाव विशाल तटीय क्षेत्र में एक खतरनाक रास्ते पर थी. इस रास्ते का इस्तेमाल अकसर मानव तस्कर करते हैं. एसोव ने तस्करों के शोषण से बचने के लिए प्रवासियों के लिए कानूनी सुरक्षा उपायों को मजबूत करने के महत्व पर भी जोर दिया है. आईओएम का कहना है कि मार्च में 180 से ज्यादा प्रवासियों को ले जा रही दो नावें यमन के धुबाब जिले के तट पर डूब गई थीं. इन लोगों में से केवल चालक दल के दो सदस्यों को ही बचाया जा सका था.

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने कहा

राहुल गांधी भारतीय नहीं, पाकिस्तान और बांग्लादेशी सोच के हो गए हैं

एजेंसी ।तामुलपुर (असम)

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर करारा हमला करते हुए उन्हें भारत विरोधी बताया और आरोप लगाया कि उनकी सोच भारतीय मूल्यों की बजाय पाकिस्तान और बांग्लादेश की मानसिकता से मेल खाती है. मुख्यमंत्री ने सोमवार को बोडोलैंड टेरिटोरियल रीजन (बीटीआर) के तामुलपुर में भाजपा की एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा, ₹राहुल गांधी भारत के हिंदुओं और मुसलमानों के साथ नहीं हैं. वह भारत के साथ नहीं हैं. यह बयान उस वक्त आया जब भाजपा 'बीजेपी फार प्रोग्रेसिव बीटीआर' नामक अभियान के तहत बीटीआर क्षेत्र के चारों जिलों - कोकराझाड़, बाक्सा, चिरांग और उदालगुड़ी में सघन जनसंपर्क कर रही है. इस चुनावी अभियान की अगुवाई स्वयं मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष दिलीप सैकिया कर रहे हैं. मुख्यमंत्री के बयान का समर्थन करते हुए अन्य भाजपा नेताओं ने कांग्रेस पर सीएए और बेदखली अभियान का विरोध कर अतिक्रमणकारियों को प्रोत्साहित करने और क्षेत्र में अस्थिरता फैलाने का आरोप लगाया. पार्टी की सख्त बेदखली नीति को विशेष रूप से अतिक्रमण प्रभावित क्षेत्रों में व्यापक जनसमर्थन मिल रहा है.

फिलीपींस के राष्ट्रपति आर मार्कोस भारत आये

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निमंत्रण पर फिलीपींस के राष्ट्रपति फर्डिनेंड आर. मार्कोस सोमवार को भारत की राजकीय यात्रा पर पहुंचे. विदेश राज्यमंत्री पबित्रा मार्गेरिटा ने उनका एयरपोर्ट पर स्वागत किया. विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने एक्स पर बताया कि भारत और फिलीपींस अपने राजनयिक संबंधों की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं. इस यात्रा से दोनों देशों के संबंधों को और मजबूती मिलेगी. राष्ट्रपति मार्कोस 4 से 8 अगस्त तक भारत में रहेंगे. इस दौरान राष्ट्रपति मार्कोस के साथ उनकी पत्नी लुइस अरानेटा मार्कोस और उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल भी आया है. राष्ट्रपति मार्कोस बेंगलुरु का भी दौरा करेंगे.

कोलकाता में हिंदू युवती से लगवाए अल्लाह-हू-अकबर के नारे, वीडियो हुआ वायरल

मारपीट का वीडियो वायरल होने के बाद भाजपा हुई हमलावर

एजेंसी ।कोलकाता

दक्षिण कोलकाता स्थित प्रसिद्ध रवींद्र सरोवर के पास रविवार शाम कुछ मुस्लिम युवतियों ने 'अल्लाह हू अकबर' का नारा लगाते हुए एक हिंदू युवती से भी यह नारा लगवाने के लिए बाध्य करने की कोशिश की. वहीं इसका विरोध करने पर उसके साथ मारपीट की गई. इस घटना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद बंगाल की राजनीति में हलचल मच गई है. हालांकि, इस वीडियो की आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है और हिन्दुस्थान समाचार भी इसकी पुष्टी नहीं करता है. इस दो मिनट नौ सेकंड के वायरल वीडियो में एक युवती ने दावा किया कि रविवार की शाम वह अपने कुछ दोस्तों के साथ रवींद्र सरोवर घूमने गई थीं. वहां मुस्लिम समुदाय के एक समूह ने धार्मिक नारे लगाने शुरू किए और उन्हें भी ऐसा करने को कहा. युवती के मना करने पर उसे कथित रूप से पीटा गया, जिसके बाद दोनों पक्षों में बहस और कहासुनी हुई. वीडियो में युवती पूछती है, हम कहां रह रहे हैं? क्या यह बांग्लादेश है? क्या हम ढाकुरिया लेक भी नहीं जा सकते? वहीं, इस वीडियो पर प्रतिक्रिया देते हुए मेघालय के पूर्व राज्यपाल तथागत रॉय ने सोशल मीडिया पर लिखा, गंभीरता से पूरा वीडियो देखें. अपनी जान, सम्मान और सबसे बढ़कर हिंदू अस्मिता की रक्षा के लिए घृणा करना सीखना होगा. कम्युनिस्ट वर्ग संघर्ष की घृणा सिखाते हैं, मुसलमान गैर-मुस्लिमों और मूर्ति-पूजकों के प्रति घृणा सिखाते हैं. इसका प्रतिकार भी प्रतिघृणा से ही हो सकता है, गांधीवादी नपुंसक अहिंसा से नहीं.

मणिपुर : पुलिस ने एक 9 मिमी पिस्तौल, एक मैगजीन और एक कारतूस भी बरामद किया

प्रतिबंधित संगठनों के 8 उग्रवादी गिरफ्तार, हथियार बरामद

एजेंसी । इंफाल

मणिपुर में उग्रवादी संगठनों के खिलाफ चलाए जा रहे समन्वित अभियान के तहत सुरक्षा बलों ने चार प्रतिबंधित संगठनों से जुड़े 8 उग्रवादियों को विभिन्न स्थानों से गिरफ्तार किया है. पुलिस ने सोमवार को इसकी जानकारी दी. अधिकारियों के अनुसार, केसीपी (पीडब्ल्यूजी) संगठन के 5 उग्रवादियों को इम्फाल पश्चिम, इम्फाल पूर्व और बिष्णुपुर जिलों के अलग-अलग स्थानों से गिरफ्तार किया गया.

गिरफ्तार किए गए आरोपितों में एम प्रेमकुमार सिंह (28), यामबेम शीतल सिंह (39), सोरोखैबम इनाओटन सिंह (38), खोन्गबंताबम इनाओचा देवी (52) और ओइनम नौबा सिंह (18) शामिल हैं. इन पर फिरौती वसूली, फायरिंग, अपहरण और अवैध हथियार रखने जैसे आपराधिक गतिविधियों में शामिल होने का संदेह है. पुलिस ने इनके पास से एक 9 मिमी पिस्तौल, एक मैगजीन और एक कारतूस भी बरामद किया. एक अन्य छापेमारी में, केसीपी (तैबंगनबा) के कैडर हेसनाम बोबो सिंह (37) को इम्फाल पश्चिम के हाओबम मरक इलाके स्थित उसके घर से पकड़ा गया. वह शैक्षणिक संस्थानों को धमकाने और धन उगाही करने में शामिल था. इसके अलावा, इम्फाल पूर्व के इत्थम थोंगखोंग से प्रीपैक (प्रीपाक) संगठन से जुड़े सोरोखैबम रोहित मैतेई (24) को गिरफ्तार किया गया. वहीं लामलाई छिंगखू इलाके में घर के पास खेत से केसीपी (नॉयोन) के संदिग्ध उग्रवादी नेप्रम हरि मैतेई (19) को भी पुलिस ने हिरासत में लिया. पुलिस ने बताया कि सभी गिरफ्तार उग्रवादी गैरकानूनी गतिविधियों में संलिप्त थे और उनके नेटवर्क तथा संचालकों का पता लगाने के लिए जांच जारी है.

गड़बेता में रेल पटरी पर धमाका, नई दिल्ली-हावड़ा राज. एक्स बची

कोलकाता । पश्चिम बंगाल के जंगलगमहल क्षेत्र स्थित गड़बेता रेलवे स्टेशन के पास रेल पटरी पर हुए विस्फोट से हड़कंप मच गया. घटना रविवार देर शाम की है लेकिन रेलवे प्रशासन ने सोमवार को इस घटना की पुष्टि की है. जबकि विस्फोट से कुछ मिनट पहले ही नई दिल्ली-हावड़ा राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन यहां से गुजरी थी. घटना की जानकारी के बाद रेलवे अधिकारियों के साथ फॉरेंसिक टीम भी मौके पर पहुंच गई थी. फिलहाल, इस घटना में किसी के भी घायल होने की खबर नहीं है. रेलवे अधिकारियों ने बताया कि रविवार शाम 4:12 बजे नई दिल्ली-हावड़ा राजधानी एक्सप्रेस गड़बेता रेलवे स्टेशन से गुजरने के कुछ देर बाद ही धमाका हुआ.

लोस की कार्यवाही व्यवधान के चलते दिनभर स्थगित रही

एजेंसी ।नयी दिल्ली

संसद के मानसून सत्र के 11वें दिन सोमवार को लोकसभा की कार्यवाही विपक्ष के व्यवधान के चलते पहले दो बजे और बाद में दिनभर के लिए स्थगित कर दी गयी. सरकार आज सदन में खेलों से संबंधित विधेयक लाई थी. लोकसभा में दोपहर को कार्यवाही शुरु होने पर पीठासीन अधिकारी जगदंबिका पाल की ओर से खेल से जुड़े विधेयक का पारित करने में सहयोग की अपील की गई. संसदीय कार्यमंत्री किरण रिजिजू ने भी यही आग्रह किया. उन्होंने कहा कि विपक्ष ने कार्य मंत्रणा समिति की बैठक में दो दिन खेलों से जुड़े विधेयक पर चर्चा कराए जाने पर सहमति दी थी, लेकिन आज सदन में आने पर हंगामा कर रहे हैं. खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने भी विधेयकों के महत्व को रेखांकित करते हुए इन्हें पारित कराए जाने की अपील की. हालांकि हंगामा जारी रहा और कार्यवाही दिनभर के लिए स्थगित कर दी गई. इसी बीच पीठासीन अधिकारी ने सदन को सूचित किया कि अध्यक्ष ओम बिरला से सदस्य आर सुधा मिली थीं. उन्होंने दिल्ली पुलिस से उनके मामले में कार्रवाई करने को कहा है. सदन की सदस्य आर सुधा के सुबह की सैर के दौरान दो स्कूटी सवार बदमाशों ने उनकी सोने की चेन छीन ली और फरार हो गए. उल्लेखनीय है कि आज मानसून सत्र के तीसरे की शुरुआत में अबतक केवल ऑपरेशन सिंदूर और मणिपुर में राष्ट्रपति शासन बढ़ाये जाने से जुड़े प्रस्तावों पर ही चर्चा हुई है.

स्वत्वाधिकारी लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड की ओर से मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप कुमार सिंह, क्वार्टर नंबर सी-90, पोस्ट-नावागढ़, थाना-बरोरा, हरिणा कॉलोनी, धनबाद-828306, झारखंड द्वारा फ्लैट नंबर 2ए, सेकेंड फ्लोर, सिंगारो मेनन अपार्टमेंट,चूना भट्ठा, एचबी रोड कोकर, नियर डिस्टिलरी पुल, बिरसा समाधि स्थल) रांची-834001, झारखंड से प्रकाशित और शिवसाईं पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, रातू, काठीटांड़, टेंडर बगीचा रातू, रांची - 835222 झारखंड द्वारा मुद्रित. **संपादक : संजय कुमार सिंह.*** फोन नंबर 0651-2913385, 9142897989 (***पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार**).
आरएनआई नं : JHAHIN/2023/84487, ई-मेलः shubhamsandeshnews@gmail.com धनबाद ब्यूरो : ओजोन सेंटर,थर्ड फ्लोर, कमरा नं-306 अशोकनगर, बैंक मोड़, धनबाद-828106. फोन नं – 9431145133.ई मेल-sandeshsubham23@gmail.com.

जननायक का अवसान

गंगा राम अस्पताल पहुंचे राहुल गांधी व खरगे

दिशोम गुरु को दी श्रद्धांजलि

नयी दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे गुरुजी के अंतिम दर्शन करने गंगा राम अस्पताल पहुंचे. दोनों ने अस्पताल पहुंच कर दिशोम गुरु को श्रद्धांजलि अर्पित की. निधन की खबर सामने आने के बाद राहुल गांधी ने सुबह सोशल मीडिया पोस्ट पर भी किया था. उन्होंने लिखा था कि झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झामुमो के वरिष्ठ नेता शिबू सोरेन जी के निधन का समाचार सुनकर गहरा दुख हुआ. आदिवासी समाज की मज़बूत आवाज़, सोरेन जी ने उनके हक़ और अधिकारों के लिए आजीवन संघर्ष किया. सोरेन जी और पूरे सोरेन परिवार के साथ-साथ गुरुजी के सभी समर्थकों को गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं. इधर मल्लिकार्जुन खरगे ने भी एक पोस्ट कर कहा था कि

- लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन आज गुरुजी के अंतिम संस्कार में होंगे शामिल
- गुरुजी का अंतिम संस्कार आज नेमरा में, सभी तैयारियां पूरी
- झारखंड के सभी स्कूल-कॉलेज आज रहेंगे बंद, प्रशासन ने जारी किया आदेश

झामुमो के संस्थापक, शिबू सोरेन जी के निधन से मैं दुःखी हूं. उन्होंने अलग झारखंड प्रदेश और वहां के लोगों के जल, जंगल, जमीन के अधिकार और आदिवासी संस्कृति के संरक्षण के लिए आजीवन संघर्ष किया. मैंने उनके सुपुत्र और सीएम हेमंत सोरेन जी से बात कर उनके परिवार और समर्थकों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त की.

दिशोम गुरु आखिरी जोहार... अंतिम दर्शन को उमड़ा जनसैलाब

संवाददाता ।रांची

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के अंतिम दर्शन के लिए सड़कों पर जनसैलाब उमड़ पड़ा. एयरपोर्ट से लेकर मोरहाबादी स्थित शिबू सोरेन के आवास तक सड़क के दोनों ओर उनके अंतिम दीदार के लिए मौजूद रहे. सभी की आंखे नम थीं. वहीं रांची एयरपोर्ट पर राज्य के कोने-कोने से गुरुजी के चाहने वाले भी पहुंचे. गुरुजी के अंतिम दर्शन कर सभी भावुक हो गए. आम से लेकर खास तक सभी ने नम आंखों से गुरुजी को श्रद्धांजलि दी. उनके चाहने वाले के हाथों में तख्तियां थीं, जिस पर लिखा हुआ था कि जब तक सूरज चांद रहेगा, गुरुजी शिबू सोरेन का नाम रहेगा. वहीं पूरा रास्ता वीर शिबू सोरेन अमर रहे का नारों से गूंजता रहा. वहीं दिशोम गुरु शिबू सोरेन के आवास के पास काफी संख्या में उनके चाहने वाले अंतिम दर्शन के लिए मौजूद रहे. आदिवासी छात्रावास की छात्राएं सड़क के दोनों ओर गुरुजी के अंतिम दर्शन के लिए कतार बद्ध खड़ी रहीं. यहां भी उनके चाहने वाले उनके दीदार को बेताब रहे. सभी ने नम आंखों से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की. शिबू सोरेन के आवास पर पहले से मंत्री योगेंद्र प्रसाद और सुदिव्य कुमार सोनू मौजूद थे. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन भी इस दौरान उनके साथ मौजूद थे. एयरपोर्ट से शिबू सोरेन का पार्थिव शरीर उनके मोरहाबादी स्थित आवास ले जाया गया है, जहां उनका पार्थिव शरीर अंतिम दर्शन के लिए रखा गया है. आधिकारिक जानकारी के अनुसार, उन्हें मंगलवार को पार्टी कार्यालय ले जाया जाएगा, जहां झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ता और नेता श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे. इसके बाद उनका पार्थिव शरीर झारखंड विधानसभा ले जाया जाएगा, जहां सत्तापक्ष और विपक्ष के सभी नेता उन्हें अंतिम विदाई देंगे. अंततः सड़क मार्ग से उनका पार्थिव शरीर उनके पैतृक गांव नेमरा ले जाया जाएगा, जहां पूरे राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा. शिबू सोरेन के निधन से पूरे झारखंड में शोक की लहर है. वे लंबे समय तक आदिवासी अधिकारों की आवाज बने रहे और राज्य के गठन में उनकी भूमिका को कभी भुलाया नहीं जा सकता.

- आज 10 बजे अंतिम दर्शन के लिए विधानसभा में रखा जाएगा गुरुजी का पार्थिव शरीर, 3 बजे नेमरा में होगा अंतिम संस्कार.

शिबू सोरेन के निधन पर झामुमो का भावुक संदेश

आज झारखंड की हवा शांत है

रांची । दिशोम गुरु के निधन पर झामुमो के सोशल मीडिया पेज से भावुक पोस्ट की गई है. कहा, आज झारखंड की हवा शांत है, जंगल सिसक रहा, नदियां-पहाड़ मौन व हमारी आत्मा रो रही है, झारखंड निर्माता दिशोम गुरु हमारे बीच नहीं रहे! झारखंड की आत्मा शिबू सोरेन हम सभी को छोड़कर प्रकृति की गोद में समा गए हैं. ये सिर्फ शोक नहीं, एक युग का अंत है. दिशोम गुरु कोई नाम नहीं था, वो हमारे आंदोलन की रगों में बहता हुआ एक विश्वास था. वो हमारे लिए पहाड़ की तरह अडिग और नदी की तरह सहज थे. ऐसा नेतृत्व, जो न कभी झुका, न कभी थका. हमें सिर्फ राजनीति करना नहीं सिखाया. हमें अपने लोगों से प्यार करना, उनकी तकलीफ़ को महसूसना और उनके हक के लिए पूरे हौसले से लड़ना सिखाया.

हममें से कई लोगों के लिए वे पिता स्वरूप थे. हमारे सपनों में उनका खून-पसीना लगा था. उन्होंने हमें चलना सिखाया. जब हम गांव-गांव में संगठन बनाने निकले थे. जब डर था, संसाधन नहीं थे, तब उनका विश्वास हमारे साथ था. उनका जीवन एक संघर्ष था - पहले जमींदारों से, फिर व्यवस्था से, फिर इस देश की राजनीतिक सोच से - जो आदिवासियों, शोषितों और वंचितों को हाशिये पर रखती थी. उन्होंने हर मोर्चे पर लड़ाई लड़ी. संघर्ष करते हुए जेल गए, जान को खतरा हुआ, लेकिन डिगे नहीं. और झारखंड का सपना साकार किया. पीढ़ियां उनके संघर्षों की गाथाएं सुन कर बड़ी हुई हैं. और अब, जब वे हमारे बीच नहीं हैं, हमें उनके अधूरे सपनों को पूरा करना है - एक उन्नत झारखंड का.

दिशोम गुरु जी ने झारखंड को दिशा दी, नाम दिया, पहचान दी. हम सबको परिवार की तरह पाला. आपके जाने से हमारा हृदय निर्जीव हो गया है, लेकिन आपकी प्रेरणा में ही हमारा संकल्प है. आपका जीवन दीपक जैसा था,खुद जलते रहे, रोशनी देते रहे. आपकी कमी कोई नहीं भर सकता,लेकिन आपके मार्ग पर चलना ही अब हमारा कर्तव्य है.**अंतिम जोहार दिशोम गुरुजी!**

वोट देगा बिहारी, तो नौकरी भी लेगा बिहारी

क्या है डोमिसाइल नीति, जो नीतीश कुमार ने की लागू

शुभम संदेश।पटना

बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने टीचर भर्ती में डोमिसाइल नीति लागू करने का फैसला किया है. इससे भर्ती में बिहारियों को ही प्राथमिकता मिलेगी.

ये बदलाव टीआरई-4,टीआर ई-5 से लागू किया जाएगा. ऐसे में सवाल है कि डोमिसाइल नीति होती क्या है और बिहार में डोमिसाइल को लेकर क्या कहानी रही है. डोमिसाइल का मुद्दा नीतीश कुमार के लिए नया नहीं है. साल 2020 के विधानसभा चुनाव में भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने डोमिसाइल नीति लागू करने का वादा किया था. इतना ही नहीं, जब सरकार बनी तो नीतीश कुमार ने इसे लागू भी कर दिया था. मगर ये लंबे समय तक नहीं रह पाया और ढाई साल बाद जुलाई 2023 में इसे खत्म भी कर दिया गया. चुनाव के नजदीक होने के साथ ही दूसरी पार्टियों ने इस मुद्दे को उठाया और इसे लागू करने की मांग की गई.

प्रशांत किशोर से लेकर आरजेडी भी इसे लागू करने की मांग कर रही थी. कहा जा रहा था कि पलायन रोकने और बेरोजगारी के संकट को दूर करने के लिए डोमिसाइल नीति जरूरी है. वहीं, आरजेडी का कहना था कि अगर राज्य में उनकी सरकार बनती है तो डोमिसाइल नीति लागू की जाएगी. वैसे आरजेडी उस वक्त सरकार में थी, जब डोमिसाइल नीति को हटाया गया था. उस वक्त सरकार ने तर्क दिया था कि इस नीति को खत्म करने की वजह ये है कि स्कूलों में मैथ्स और साइंस पढ़ाने के लिए अच्छे टीचर्स नहीं मिल रहे थे. इसे लेकर ही प्रदेश में लंबे समय तक छात्रों ने आंदोलन भी किया था. इसमें इस बात पर जोर दिया गया था- वोट दे बिहारी और नौकरी ले बाहरी, अब ये नहीं चलेगा.

रामदास सोरेन की स्थिति बेहद चिंताजनक बनी हुई

रांची। झारखंड के स्कूली शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन की स्थिति चिंताजनक है. दिल्ली के अपोलो अस्पताल में इलाजरत सोरेन के ब्रेन का सोमवार को ऑपरेशन नहीं हो सका. सोमवार को चिकित्सकों द्वारा उनके ब्रेन का ऑपरेशन करने के बारे में फैसला लिया जाना था. लेकिन सोरेन की चिंताजनक स्थिति को देखते हुए संभव नहीं हो पाया. बाथरुम में ब्रेन स्ट्रोक होने के बाद स्कूली शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन के शनिवार को एयर लिफ्ट कर जमशेदपुर से दिल्ली ले जाया गया. वहां इंद्रप्रस्थ अस्पताल में विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम उन पर नजर रखे हुए हैं. उनके स्वास्थ्य में सुधार होने के बाद ही चिकित्सक ऑपरेशन का रिस्क लेना चाहते हैं.

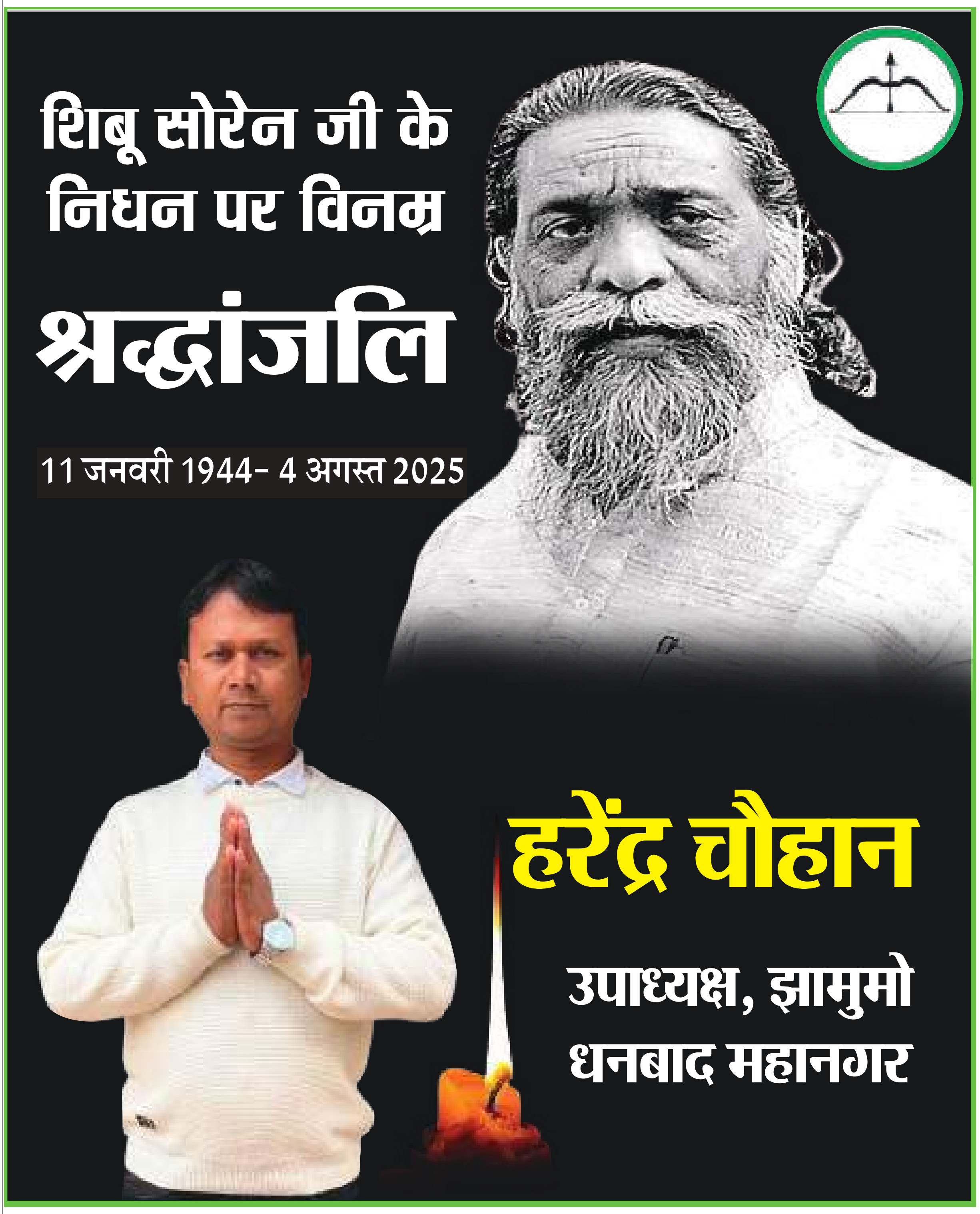

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी पर सुप्रीम कोर्ट की तल्ख टिप्पणी

आपको कैसे पता चीन ने जमीन हड़प ली आप सच्चे भारतीय होते तो ऐसा नहीं कहते

एजेंसियां।नयी दिल्ली

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा के दौरान सेना के खिलाफ कथित टिप्पणी के मामले में अपने खिलाफ मानहानि को चुनौती देने के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है.

कोर्ट ने सुनवाई के दौरान सोमवार को राहुल गांधी को फटकार लगाते हुए कहा कि आपको कैसे पता चला कि चीन ने 2000 किमी तक भारत की जमीन हड़प ली है? अगर आप सच्चे भारतीय होते तो ऐसा नहीं कहते. कोर्ट ने पूछा, क्या आपके पास विश्वसनीय जानकारी है? आप विपक्ष के नेता हैं तो आप ये बातें क्यों कहेंगे? आप ये सवाल संसद में क्यों नहीं पूछते? इसके जवाब में राहुल की तरफ से पेश हुए अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि उन्होंने संसद में बोलने की छूट पाने के लिए चुनाव नहीं लड़ा. अनुच्छेद 19(1)(ए) राहुल गांधी को सवाल पूछने की इजाजत देता है.

सुप्रीम कोर्ट ने कार्यवाही पर लगाई रोक: सिंघवी ने हाईकोर्ट के तर्क पर कहा कि शिकायतकर्ता, अगर पीड़ित व्यक्ति नहीं है, फिर भी अपमानित व्यक्ति है. बेंच इस पॉइंट पर विचार करने के लिए सहमत हो गई और इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस फैसले को चुनौती देने वाली राहुल गांधी की याचिका पर नोटिस जारी किया, जिसमें कार्यवाही रद्द करने से इनकार कर दिया गया था. राहुल गांधी की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार और शिकायतकर्ता को नोटिस जारी किया है. सुप्रीम कोर्ट ने फिलहाल राहुल गांधी को बड़ी राहत देते हुए निचली अदालत में मानहानि मामले की कार्यवाही पर रोक लगा दी और सुनवाई के लिए 3 हफ्ते के बाद का वक्त तय किया है.

राहुल गांधी से कोर्ट के तीखे सवाल

सुनवाई के दौरान जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस एजी मसीह की बेंच ने राहुल गांधी की तरफ से दिए गए बयानों पर असहमति जताई. राहुल गांधी की ओर से पेश हुए वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने शुरुआत में दलील दी कि अगर कोई विपक्षी नेता मुद्दे नहीं उठा सकता, तो यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होगी. अदालत में सिंघवी ने कहा कि अगर वह प्रेस में छपी ये बातें नहीं कह सकते, तो वह विपक्ष के नेता नहीं हो सकते. इस पर जस्टिस दत्ता ने पूछा, आपको जो कुछ भी कहना है, संसद में क्यों नहीं कहते? आपको सोशल मीडिया पोस्ट में यह क्यों कहना है? राहुल गांधी के बयान पर असहमति जताते हुए जस्टिस दत्ता ने पूछा, आप बिना किसी सबूत के ये बयान क्यों दे रहे हैं. अगर आप एक सच्चे भारतीय होते, तो आप यह सब नहीं कहते.